# आदिवासी एक्सप्रेस

आमजन का एक मात्र हिंदी दैनिक अखबार

रांची, मंगलवार
17 जून 2025
वर्ष: 38, अंक: 190
पृष्ठ: 12, मूल्य: 3रु
RNI NO.: 49065/1989
DAVP CODE: 130961

संथाल

केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी का देवघर एयरपोर्ट पर किया स्वागत

झारखंड

एनटीपीसी नॉर्थ करणपुरा की यूनिट 3 का वाणिज्यिक संचालन प्रारंभ, देश की विद्युत संरचना को मिला नया आयाम

हज़ारीबाग

बिजली संकट पर फूटा हजारीबाग और रामगढ़ की जनता का गुस्सा

# इसराइल ने ईरानी सरकारी टीवी मुख्यालय पर लाइव बुलेटिन के दौरान की बमबारी

**ब्यूरो**

इसराइल ईरान युद्ध में दोनों तरफ से हमले जारी हैं और दावे भी खूब किए जा रहे हैं। लेकिन सोशल मीडिया पर जो फोटो और वीडियो सामने आ रही हैं, उससे लगता है कि तेलअवीव और तेहरान में काफी तबाही हुई है। इसराइल और ईरान के बीच बढ़ते तनाव के बीच एक सनसनीखेज घटना में इसराइली सेना ने सोमवार को तेहरान में ईरान सरकार के टेलीविजन IRIB के मुख्यालय पर हवाई हमला किया। इसके कारण लाइव प्रसारण अचानक बंद हो गया। इस हमले के दौरान एक समाचार एंकर को स्टूडियो में धूल और धुएं के बीच भागकर सुरक्षित स्थान की तलाश करनी पड़ी। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से वायरल हो रहा है।

ख़बरों के अनुसार, इसराइली वायु सेना ने सोमवार को इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान न्यूज नेटवर्क यानी IRINN के मुख्यालय को निशाना बनाया। यह हमला उस समय हुआ जब एक समाचार एंकर लाइव प्रसारण के दौरान इसराइल की आलोचना कर रहा था। अचानक हुए विस्फोट के बाद स्टूडियो में धूल का गुबार छा गया और एंकर को प्रसारण छोड़कर सुरक्षित स्थान की ओर भागना पड़ा। ईरानी मीडिया ने बताया कि हमले के बाद प्रसारण तुरंत बंद हो गया।

इसराइल ने इस हमले को ईरानी प्रोपेगेंड और उकसावे के मुखपत्र को समाप्त करने की दिशा में एक कदम बताया। उन्होंने दावा किया कि यह हमला तेहरान के जिला 3 में सैन्य ठिकानों को निशाना बनाने के लिए किया गया, जहां IRIB का मुख्यालय भी स्थित है। इसराइली सेना ने क्षेत्र के निवासियों को पहले ही निकासी के लिए चेतावनी जारी की थी।

ईरानी अधिकारियों ने इस हमले की कड़ी निंदा की है और इसे अभूतपूर्व आक्रामकता करार दिया है। ईरान की सेना ने जवाबी कार्रवाई की चेतावनी दी है और तेहरान में हवाई रक्षा प्रणाली को सक्रिय कर दिया गया है। ईरानी समाचार एजेंसी तस्नीम ने बताया कि इस हमले में मुख्यालय की इमारत को मामूली नुकसान हुआ, लेकिन प्रसारण सेवाएं कुछ समय के लिए बाधित रहीं।

ईरान ने सोमवार सुबह-सुबह इसराइल पर मिसाइलों की झड़ी लगा दी। इससे पूरे देश में रॉकेट सायरन बजने लगे। इसराइली

अखबार यरुशलम पोस्ट के मुताबिक ताजा हमलों में सोमवार को पांच लोग मारे गए और कम से कम 87 घायलों का इलाज यूनाइटेड हत्ज़ाला एनजीओ द्वारा मध्य इसराइल के तीन अलग-अलग इलाकों में किया जा रहा है। इसराइल की इमरजेंसी मेडिकल सर्विसेज मैगन डेविड एडोम (एमडीए) ने कहा कि पीड़ितों में से चार में दो महिलाएं और दो पुरुष थे, जिनकी उम्र लगभग 70 वर्ष थी। बाद में रविवार की सुबह एक और व्यक्ति के मारे जाने की सूचना मिली। एक व्यक्ति की हालत गंभीर है, पांच अन्य की हालत मध्यम है और अन्य 68 की हालत हल्की है। एमडीए ने बताया कि किसी भी अतिरिक्त हताहत का पता लगाने के लिए 4 में से 2 जगहों पर बचाव और तलाशी अभियान अभी भी जारी है।

इसराइल के पूरे केंद्र में विस्फोटों की आवाजें सुनी गईं, साथ ही कुछ मिसाइलों के टकराने की भी खबरें आईं। पेटा टिकवा नगरपालिका ने घोषणा की कि शहर की एक इमारत पर मिसाइल से हमला किया गया। पुलिस ने कहा है कि तेल अवीव में दो जगह सबसे ज्यादा प्रभावित हुई हैं। आईडीएफ के होम फ्रंट कमांड ने रविवार रात और सोमवार सुबह के बीच इसराइल में नागरिकों को बंकरों या सुरक्षित स्थानों पर रहने के लिए कुछ मिनट पहले दूसरी चेतावनी जारी की।

यमन के हूथियों ने भी सोमवार को मिसाइल दागी। केएएन ने कहा कि यमन में हूथियों द्वारा दागी गई मिसाइल के कारण सायरन भी लगभग उसी समय बजे। आईडीएफ ने लोगों से हमलों के स्थानों और रिकॉर्ड को प्रकाशित या साझा न करने के लिए भी कहा, क्योंकि दुश्मन अपनी हमला करने की क्षमताओं को बेहतर बनाने के लिए इन रिकॉर्ड पर नज़र रखता है। ईरान द्वारा मिसाइलों के नवीनतम हमले के तुरंत बाद, इसराइल के उत्तर में ड्रोन घुसपैठ के सायरन बजने लगे, जिसमें रोश इलाका भी शामिल था।

इसराइली रक्षा मंत्री कैट्ज़ ने सोमवार को ईरान द्वारा बैलिस्टिक मिसाइल हमलों की निंदा करते हुए ङ्ग पर एक पोस्ट में कहा कि तेहरान के निवासियों को इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। तेहरान का अहंकारी तानाशाह एक कायर हत्यारा बन गया है, जो आईडीएफ को अपने हमले जारी रखने से रोकने के लिए इसराइल में नागरिक क्षेत्रों को निशाना बना रहा है, जिससे उसकी क्षमताएँ कमज़ोर हो रही हैं।

इसराइल के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार तजाची हनेग्बी ने आर्मी रेडियो को बताया कि ईरान के पास अभी भी हजारों बैलिस्टिक मिसाइलें हैं, जो पहले के अनुमान से कहीं ज़्यादा है। हनेग्बी ने कहा, यह ऐसी लड़ाई नहीं है जो लंबे समय में ईरानी ख़तरे को खत्म कर पाएगी। सैन्य विश्लेषकों ने अब तक रिपोर्ट दी है कि ईरान के पास लगभग 1,500 से 2,000 मिसाइलें हैं, हालाँकि उसने पहले ही सैकड़ों मिसाइलें दाग दी हैं।

इसराइल ने ईरान में दर्जनों जगहों पर हमला किया- जिसमें ऊर्जा स्थल, रडार सिस्टम और बैलिस्टिक मिसाइल और उनके लांचर शामिल हैं। इसराइल ने ईरान के कई शीर्ष खुफिया अधिकारियों को मार डालने का दावा किया है। इसराइल रक्षा बलों ने भी पूर्वोत्तर ईरान के मशहद हवाई अड्डे पर एक ईरानी ईंधन भरने वाले विमान पर बमबारी की, जो इसराइल से लगभग 2,300 किलोमीटर (1,430 मील) दूर है। सेना ने सोमवार सुबह कहा कि उसने मध्य ईरान में सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल प्रक्षेपण स्थलों पर हमला किया।

रविवार रात को इसराइली डिफेंस फोर्स (IDF) ने घोषणा की कि IDF ने तेहरान में IRGC के कुद्स बल और उनकी सेना से संबंधित बुनियादी ढांचे पर हमलों करके ईरान की हथियार उत्पादन क्षमताओं को कमजोर कर दिया है। देश भर में कई अन्य हथियार उत्पादन स्थलों को भी निशाना बनाया गया। इसके तुरंत बाद, सेना ने यह भी कहा कि इसराइल वायु सेना और इसराइल नौसेना ने ऑपरेशन राइजिंग लॉयन की शुरुआत के बाद से ईरान द्वारा दागे गए 100 से अधिक ड्रोन को रोक दिया है।

**यरुशलम में यूएस दूतावास बंद :** ईरान के हमले से मामूली क्षति के बाद यरुशलम में अमेरिकी दूतावास बंद हो गया। तेल अवीव में अमेरिकी दूतावास शाखा के पास ईरानी मिसाइल हमलों के कारण हुए झटकों से कुछ मामूली क्षति की सूचना मिली है। हालांकि अमेरिकी कर्मियों को कोई चोट नहीं आई है। इसराइल में अमेरिकी राजदूत ने कहा कि दूतावास और वाणिज्य दूतावास सोमवार को आधिकारिक रूप से बंद रहेंगे, क्योंकि लोगों को शेल्टर में रहने का आदेश अभी भी प्रभावी है।

## कुख्यात अपराधी बने सफेदपोश! जमीन कब्जा करने और अवैध संपत्ति बनाने वालों के खिलाफ अब पैनी नजर

**क्राइम संवाददाता द्वारा**

**रांची:** राजधानी रांची को क्राइम फ्री डिस्ट्रिक्ट बनाने की दिशा में पुलिस ने ठोस कार्रवाई शुरू कर दी है। वारंटी और वांटेड अपराधियों को तो सलाखों के पीछे भेजा ही जा रहा है। साथ ही वैसे पुराने कुख्यात क्रिमिनल्स जो जेल से निकलने के बाद सफेदपोश तो बन गए है, लेकिन अपराधिक प्रवृत्ति का ही काम कर रहे हैं। उनको इकोनॉमिकली डैमेज करने की रणनीति पर पुलिस काम कर रही है।

**इनकम टैक्स फाइल को भी खंगाला जा रहा:** राजधानी को अपराध मुक्त बनाने के लिए जिले के डीआईजी सह एसएसपी चन्दन कुमार सिन्हा ने अलग रणनीति के तहत अभियान शुरू किया है। अब वैसे क्रिमिनल्स की खैर नहीं जो पुराने कुख्यात क्रिमिनल्स है और अब सफेदपोश बन कर जमीन कब्जा में लग गए है। उनके इनकम के स्रोत को जानने के लिए इनकम टैक्स फाइल को भी खंगाला जा रहा है।

**अवैध कार्रवाई करने वालों के खिलाफ कार्रवाई:** वैसे कुख्यात अपराधी जो सफेदपोश बन कर दूसरों के माध्यम से आपराधिक वारदात को अंजाम दे रहे हैं या जमीन का अवैध कारोबार कर रहे हैं। उनके खिलाफ कार्रवाई के लिए कानूनी प्रावधान का सहारा लिया जा रहा है। ताकि कानूनी प्रावधान के तहत अपराधियों की संपत्ति को जब्त किया जा सके और उनकी आर्थिक कमर तोड़ी जा सके। अपराध की दुनिया से कमाए हुए काले धन का इस्तेमाल कर लग्जरी लाइफ गुजर रहे क्रिमिनल्स की अब खैर नहीं है। कुख्यात अपराधी संदीप थापा और बिट्टू मिश्रा की गिरफ्तारी और संपत्ति को जब्त करने की प्रक्रिया के साथ ही क्रिमिनल्स को इकोनॉमिकली डैमेज करने की पुलिस की रणनीति कारगर साबित भी होती दिख रही है।

**पूर्व के कई कुख्यात अपराधियों पर भी पुलिस की नजर:** इसके साथ-साथ रांची पुलिस पूर्व के कुख्यात अपराधियों पर भी नजर बनाए हुए हैं। परमानेंट वारंटी, वांटेड और फरार अपराधियों के खिलाफ भी अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत पिछले दिनों 100 से ज्यादा आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। जिसमें तीन नक्सली भी शामिल है। रांची पुलिस के इस मुहिम से शहर को क्राइम फ्री करने में सहायता भी मिलने की उम्मीद है। साथ ही अपराधियों और असामाजिक तत्वों के बीच पुलिसिया कार्रवाई का मैसेज जा रहा है। जिससे किसी भी वारदात को अंजाम देने से पहले अपराधी सोचेंगे।

## शैडो डीजीपी से स्पष्टीकरण मांग रहा झारखंड का गृह विभाग: बाबूलाल मरांडी

**संवाददाता द्वारा**

**रांची:** एक बार फिर नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने डीजीपी अनुराग गुप्ता पर निशाना साधा है. सोशल मीडिया के जरिए बाबूलाल मरांडी ने कहा कि डीजीपी अनुराग गुप्ता अब ना अखिल भारतीय सेवा में हैं, ना सस्पेंड हो सकते हैं, ना उन पर कोई विभागीय कार्रवाई लागू होती है और ना ही उन्हें वेतन मिल रहा है कि मुख्यमंत्री उनका वेतन रोक सकते हैं. ऐसे में आज झारखंड की पुलिस व्यवस्था शैडो डीजीपी के हाथों में है. जाहिर तौर पर झारखंड इतिहास रच रहा है. उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि पुलिस विभाग के सारे तुगलकी आदेश वो ही दे रहे हैं. यहां तक कि सिपाहियों के ट्रांसफर-पोस्टिंग भी वे अनाधिकृत रूप से कर रहे हैं.

बाबूलाल मरांडी ने कहा कि पिछले दिनों 8 आईपीएस अधिकारी को अतिरिक्त प्रभार सौंपे जाने के मामले में सुनने में आया है कि अब गृह विभाग ने उसे रद्द कर स्पष्टीकरण मांगा है, लेकिन यह बड़ा सवाल है कि आप स्पष्टीकरण किससे मांग रहे हैं. उस व्यक्ति से जिसे आप नियमों के दायरे में ला ही नहीं सकते. जब वे अखिल भारतीय सेवा के अधिकारी रहे ही नहीं तो जाहिर है वो अखिल भारतीय सेवा के नियम को क्यों मानेंगे. उन्होंने कहा कि ये बात कैसे समझ में नहीं आ रही मुख्यमंत्री जी को. उनकी चुप्पी और बेबसी क्या दर्शाती है. या तो मुख्यमंत्री को पता नहीं या वे पूरी तरह अयोग्य हैं या फिर उनको सब पता है कि इस हालात के लिये वे स्वयं दोषी हैं.

**क्या है पूरा मामला:** नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि यह कौन नहीं जानता है कि झारखंड के कुछ बेलगाम अफसर अब संविधान से नहीं, सत्ता के साथ नेटवर्क से चलते हैं. गौरतलब है कि डीजीपी अनुराग गुप्ता का कार्यकाल 30 अप्रैल को समाप्त होने के बावजूद पद पर उनके बने रहने के कारण वे विवादों में है.

## टाटा स्टील प्लांट में मालगाड़ी की चपेट में आकर ठेका मजदूर की मौत

**क्राइम संवाददाता द्वारा**

**जमशेदपुर।** जमशेदपुर स्थित टाटा स्टील प्लांट के मार्शलिंग यार्ड में बीते रविवार की रात को भीषण हादसा हो गया है। टाटा स्टील प्लांट के मार्शलिंग यार्ड के लॉजिस्टिक्स ऑपरेशंस के दौरान हादसे में ठेका कर्मचारी 34 वर्षीय सुनील कुमार सिंह की मौत हो गई। हादसे के बाद सुनील को तत्काल उन्हें टाटा मेन अस्पताल (TMH) ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने जांच के उपरांत उन्हें मृत घोषित कर दिया। जानकारी के मुताबिक, सुनील सिंह मेसर्स राइट्स के ठेका कर्मचारी के रूप में प्लांट में कार्यरत था। मृतक की पहचान 34 वर्षीय सुनील कुमार सिंह के रूप में हुई है, जो M/s Rites Ltd. के अंतर्गत कार्यरत थे, घटना बीते रविवार रात्रि लगभग 1:35 बजे की है। टाटा समूह के एक प्रवक्ता ने बताया कि अन्य विवरणों की प्रतीक्षा की जा रही है। कंपनी निराधार समाचारों को प्रसारित होने से रोकने के लिए मीडिया को पूरी जानकारी देना चाहती है।

लोकोमोटिव संख्या 145 द्वारा ट्रैक संख्या-5 पर 11 कैप्टिव ङ्गत्नस् वैगनों को धकेलते हुए पहले से खड़े 4 खाली विशेष बॉक्स वैगनों से जोड़ा जा रहा था। तभी ग्राउंड क्रू के डिज़िग्नेटेड पर्सन (DP) ने लोको ऑपरेटर से अचानक संपर्क करना बंद कर दिया। संदेह होने पर जब खोजबीन शुरू की गई तो कर्मचारी को वैगन के पहियों के नीचे दबा हुआ पाया गया। घायल कर्मचारी को बाहर निकालकर कर तुरंत फर्स्ट एड मेडिकल टीम की सहायता से टाटा मेन हॉस्पिटल भेजा गया। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। मृतक के परिजनों को सूचना दे दी गई है, साथ ही संबंधित विभागों और एजेंसियों को भी औपचारिक जानकारी प्रदान की जा चुकी है। यह हादसा एक बार फिर औद्योगिक सुरक्षा मानकों की समीक्षा की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

## सेना की फर्जी मुहर बनाने वाले गिरोह का भंडाफोड़, 2 गिरफ्तार

**क्राइम संवाददाता द्वारा**

**रांची:** पुलिस ने भारतीय सेना के नाम पर फर्जी मुहर बनाने वाले गिरोह का पर्दाफाश किया है. इस मामले में दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया है. उनके पास से भारी मात्रा में फर्जी रबर स्टांप, मोबाइल, कम्प्यूटर उपकरण समेत अन्य आपत्तिजनक सामग्री बरामद की गई है.

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रांची को गुप्त सूचना मिली थी कि नामकुम स्थित मिलिट्री हॉस्पिटल परिसर के पास संचालित राठौर जनरल स्टोर के माध्यम से सेना के वरिष्ठ अधिकारियों के नाम पर फर्जी मुहरें बनाई जा रही हैं. सूचना की गंभीरता को देखते हुए एसएसपी ने नामकुम थाना से एक विशेष टीम गठित कर कार्रवाई का निर्देश दिया.

पुलिस टीम द्वारा की गई छापेमारी में राठौर जेनरल स्टोर से सेना के अधिकारियों के नाम पर बने कई रबर स्टांप, प्री-इंक्ड फ्लैश स्टांप, एक मोबाइल फोन, मुहर बनाने का नमूना और वॉट्सएप स्क्रीनशॉट बरामद किए गए. दुकान के संचालक सर्वेश कुमार सिंह (उम्र 43 वर्ष), निवासी कैमूर, बिहार को गिरफ्तार किया गया. जब उससे भारतीय सेना की मुहर बनाने संबंधी वैध दस्तावेज मांगे गए तो वह कोई कागजात प्रस्तुत नहीं कर सका.

पूछताछ में उसने स्वीकार किया कि वह विगत चार वर्षों से इस कार्य को अंजाम दे रहा है. उसकी निशानदेही पर पुलिस ने फर्जी मुहरें तैयार करने वाले दास साउंड नामक दुकान के संचालक आशीष दास (उम्र 47 वर्ष) को भी गिरफ्तार किया. उसकी दुकान से एक कंप्यूटर का ष्ठक्कभी बरामद किया गया है. गिरफ्तार अभियुक्तों में सर्वेश कुमार सिंह, निवासी - चाय बगान, इंटर कार्उंसिल, नामकुम, जिला रांची (मूल निवासी-कैमूर, बिहार), रांची के हिंदपीढ़ी थाना के लोअर पीपी कंपाउंड निवासी आशीष दास शामिल है.

रांची एसएसपी चंदन सिन्हा ने बताया कि पुलिस इस मामले में और भी लोगों की संलिप्तता की जांच कर रही है. उनका कहना है कि फर्जीवाड़े की यह श्रृंखला सुरक्षा के लिहाज से बेहद गंभीर है, जिस पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी.

## रांची पुलिस ने हापुड़ में की छापामारी, साइबर ठगी में शामिल दवा कारोबारी को दबोचा

**क्राइम संवाददाता द्वारा**

**रांची/हापुड़।** रांची की साइबर थाना की पुलिस ने हापुड़ में छापेमारी कर साइबर ठगी में शामिल दवा कारोबारी आसिफ को गिरफ्तार किया है। आरोपित कई राज्यों के साइबर गैंग से जुड़ा हुआ है। उसके खाते में पिछले महीने साइबर ठगी के 1.14 करोड़ रुपये आए थे। रांची पुलिस ने आरोपित को रिमांड मजिस्ट्रेट के न्यायालय में पेश किया। जहां से रिमांड मिलने के बाद पुलिस आरोपित को लेकर रांची के लिए निकल गई।

रांची पुलिस का कहना है कि जमशेदपुर के मानगो में रहने वाले प्रोफेसर प्रभात कुमार से बीस लाख रुपये की ठगी हुई थी। प्रभात कुमार को इंवेस्टमेंट कराने के नाम पर पैसा

लिया गया था। प्रभात कुमार एनआईटी जमशेदपुर में केमेस्ट्री के प्रोफेसर हैं। झारखंड के रांची जिले की साइबर थाना पुलिस शनिवार दोपहर हापुड़ पहुंची। रांची साइबर थाना के इंस्पेक्टर फागुनी पासवान ने कोतवाली में आमद कराई।उसके बाद हापुड़ कोतवाली पुलिस के साथ मोती कॉलोनी में एक मेडिकल स्टोर पर छापामारी की। यह मेडिकल स्टोर भंडा पट्टी के रहने वाले आसिफ का है। सादे कपड़ों में पहुंची पुलिस ने आसिफ को गिरफ्तार किया।

## जहर खाने वाले पंचायत सेवक सुखलाल महतो की मौत के बाद बवाल

**क्राइम संवाददाता द्वारा**

**गिरिडीह:** गिरिडीह जिला अंतर्गत डुमरी प्रखंड के पंचायत सेवक सुखलाल महतो की मौत पर बवाल मच गया है। सुखलाल महतो ने डुमरी की बीडीओ और मुखिया (ग्राम प्रधान) के पति सहित चार लोगों पर भ्रष्टाचार और प्रताड़ना का आरोप लगाते हुए कार्यालय परिसर में जहर खा ली थी। जिसके बाद इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

मृतक के शव के साथ रविवार रात से लेकर सोमवार दोपहर 12.30 बजे तक सैकड़ों लोग प्रखंड कार्यालय के समक्ष धरना देते रहे। माहौल तब और गर्म हो उठा, जब डुमरी के विधायक जयराम कुमार महतो भी मृतक सुखलाल महतो के परिजनों के लिए न्याय की मांग करते हुए सोमवार सुबह धरने पर बैठ गए। बाद में उपायुक्त के प्रतिनिधि के तौर पर एसडीएम संतोष गुप्ता ने विधायक और मृतक सुखलाल महतो के परिजनों के साथ वार्ता की।

आंदोलन कर रहे लोगों की मांगों पर प्रशासन की ओर से सहमति जताए जाने के बाद परिजन शव उठाने और धरना समाप्त करने पर राजी हुए। प्रशासन ने आश्वस्त किया है कि सुखलाल महतो ने बीडीओ अन्वेषा ओना सहित जिन चार लोगों के खिलाफ लिखित तौर पर प्रताड़ना का आरोप लगाया था, उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की जाएगी। मृतक सुखलाल महतो के एक आश्रित को सरकारी नौकरी देने पर भी वार्ता में सहमति बनी है। सुखलाल महतो डुमरी प्रखंड के बलथरिया ग्राम के पंचायत सेवक के रूप में कार्यरत थे। वह इसी प्रखंड के कुलगो गांव के रहने वाले थे। उन्होंने डुमरी की बीडीओ अन्वेषा ओना, बलथरिया पंचायत की मुखिया के पति परमेश्वर नायक और रोजगार सेवक अनिल कुमार पर मानसिक रूप से प्रताड़ित करने का आरोप लगाते हुए क्षेत्र के विधायक के नाम एक पत्र लिखा था। इसके बाद उन्होंने 13 जून को कार्यालय परिसर में ही कीटनाशक खा लिया था। रांची स्थित रिम्स में इलाज के दौरान 15 जून को उनकी मौत के बाद लोग उनका शव लेकर सीधे प्रखंड कार्यालय पहुंचे और देर रात से धरने पर बैठ गए।

घटना की जानकारी मिलने के बाद राज्य सरकार के निर्देश पर गिरिडीह के उपायुक्त रामनिवास यादव ने 14 जून को ही इस मामले की जांच के लिए कमेटी गठित की थी, जिसमें अपर समाहर्ता विजय सिंह बिरुआ, सरिया बगोदर के एसडीएम संतोष कुमार गुप्ता, मुख्यालय डीएसपी नीरज कुमार सिंह एवं डॉ. रवि महर्षि शामिल हैं।

# क्या ईरान के साथ हुआ है धोखा? कौन रुकवा सकता है इजरायल के साथ जारी भीषण जंग

चंद्रभूषण

इस्राइल और ईरान की लड़ाई शुरू हुए अभी हफ्ता भी नहीं गुजरा है, लेकिन युद्धों के इतिहास में इसका मुकाम कुछ अलग ढंग का ही लगने लगा है। आबादी और क्षेत्रफल में ईरान से बहुत छोटा होने के बावजूद इस्राइल का पलड़ा तकनीक, युद्ध कौशल, पूंजी और बाहरी समर्थन की दृष्टि से बहुत भारी है, लेकिन अचानक हमले के सारे फायदे लेकर भी नुकसान उसको इस लड़ाई में बराबर का हो रहा है।

**ईरान से धोखा :** अभी तक के घटनाक्रम को देखते हुए ईरान बासबूत यह दावा कर सकता है कि उसके साथ धोखा हुआ है। यूरेनियम एनरिचमेंट को लेकर अमेरिका के साथ उसकी बातचीत अभी चल ही रही थी। उसने परमाणु बम बना लिया है या इसके बहुत करीब है, ऐसा कोई सुराग लगातार उसके एटमी ढांचे पर नजर रखने वाली अंतरराष्ट्रीय संस्था IAEA को भी नहीं मिला था।

**हमला क्यों :** इससे बड़ी बात यह कि इस्राइल खुद न जाने कब से एटम बमों का जखीरा दबाए बैठा है, जिसके बारे में पूछने पर उसके अधिकारी न कभी हां कहते हैं न ना बोलते हैं। ऐसे में आखिर किस दलील से इस्राइल ने अचानक दो सौ युद्धक विमान लेकर उस पर हमला बोल दिया और उसके कुछ शीर्ष सैन्य अधिकारियों और परमाणु वैज्ञानिकों को उनके परिवार और पड़ोसियों सहित सोते में ही मौत के घाट उतार दिया?

**अमेरिका से मदद :** यह हमला इस्राइल ने निश्चित रूप से काफी सोच-समझ कर किया है और अमेरिका की ओर से उसको इसमें भरपूर मदद हासिल हुई है। हमले से ठीक पहले अमेरिका ने इस्राइल के त्रि-स्तरीय सुरक्षा ढांचे के लिए मिसाइलों की आपूर्ति की और अपनी ओर से हमले का यह परोक्ष तर्क भी गढ़ा कि ईरान को 60 दिन में अपना एटमी ढांचा बंद करने पर राजी हो जाने का जो अल्टीमेटम उसने दे रखा था, वह अवधि पूरी हो चुकी है।

**ईरान इधर कमजोर हुआ :** इस्राइली समझदारी की बुनियाद यह है कि ईरान ने लंबे समय से उसके खिलाफ जिन ताकतों के जरिये प्रॉक्सी-वॉर छेड़ रखा था, पिछले एक साल के अंदर वे सब की सब तबाह हो चुकी हैं। उत्तर में लेबनान पर हमला करके उसने हिज्बुल्ला की कमर तोड़ दी, जिसके चलते ईरान और रूस के लिए सीरिया में अपनी समर्थक बशर अल असद सरकार को बचाना संभव नहीं हुआ। वहां नई-नई आई सुन्नी कट्टरपंथियों की हुकूमत और चाहे जो करे, ऐसा तो कुछ भी नहीं करेगी, जिससे ईरान के हाथ मजबूत होते हों। दक्षिण में इस्राइल का कष्ट गाजापट्टी के फलस्तीनियों का प्रतिनिधित्व कर रहे हमास और यमन के एक हिस्से पर काबिज हूती बागियों से रहा है। इनमें पहला खत्म है और दूसरा कमजोर हो गया है। ऐसे में जमीन पर इस्राइल को उलझाए रखने के लिए ईरान कुछ भी नहीं कर सकता।

> “ हमले से ठीक पहले अमेरिका ने इस्राइल के त्रि-स्तरीय सुरक्षा ढांचे के लिए मिसाइलों की आपूर्ति की और अपनी ओर से हमले का यह परोक्ष तर्क भी गढ़ा कि ईरान को 60 दिन में अपना एटमी ढांचा बंद करने पर राजी हो जाने का जो अल्टीमेटम उसने दे रखा था, वह अवधि पूरी हो चुकी है। इस्राइली समझदारी की बुनियाद यह है कि ईरान ने लंबे समय से उसके खिलाफ जिन ताकतों के जरिये प्रॉक्सी-वॉर छेड़ रखा था, पिछले एक साल के अंदर वे सब की सब तबाह हो चुकी हैं। उत्तर में लेबनान पर हमला करके उसने हिज्बुल्ला की कमर तोड़ दी, जिसके चलते ईरान और रूस के लिए सीरिया में अपनी समर्थक बशर अल असद सरकार को बचाना संभव नहीं हुआ। वहां नई-नई आई सुन्नी कट्टरपंथियों की हुकूमत और चाहे जो करे, ऐसा तो कुछ भी नहीं करेगी, जिससे ईरान के हाथ मजबूत होते हों। दक्षिण में इस्राइल का कष्ट गाजापट्टी के फलस्तीनियों का प्रतिनिधित्व कर रहे हमास और यमन के एक हिस्से पर काबिज हूती बागियों से रहा है। इनमें पहला खत्म है और दूसरा कमजोर हो गया है।

**हवाई युद्ध का स्वरूप :** जाहिर है, लड़ाई का अकेला स्वरूप हवाई युद्ध का ही बचा है, जिसमें ईरान की वायुसेना हमले और बचाव, दोनों दृष्टियों से कुछ खास काम की नहीं है। दोनों देशों की जमीनी दूरी इतनी ज्यादा है कि युद्धक विमान बीच में ही दोबारा तेल भरे बिना दूसरे देश पर बमबारी करके घर वापसी नहीं कर सकते। ईरानी जहाज यह काम न तो कहीं रुककर कर सकते हैं, न ही उनके पास एयर टैंकरों का इंतजाम है जबकि इस्राइल के पास दोनों सुविधाएं मौजूद हैं।

**क्या था मकसद :** रही बात हवाई हमलों से बचाव की, तो ईरानी लड़ाकू विमान डॉगफाइट के लिहाज से बहुत पुराने हैं और एंटी-एयरक्राफ्ट बैटरीज का जमीनी ढांचा इस्राइल ने बीते एक साल में अपने दो ऑपरेशनों के जरिये काफी कुछ तबाह कर डाला है। ऐसे में अचानक हमले से तीन मकसद उसे साधने थे - सेना और एटॉमिक रिसर्च के शीर्ष ढांचे को खत्म करना, बची-खुची एंटी-एयरक्राफ्ट बैटरीज को नष्ट करना और परमाणु बम बनाने की संभावना वाली सभी जगहों को बम मारकर कुछ साल पीछे धकेल देना।

**परमाणु ठिकाने सुरक्षित :** लेकिन ईरान के सभी परमाणु ठिकाने सुरक्षित हैं। दरअसल, इनकी बनावट इतनी मजबूत रखी गई है कि अमेरिका के बी-2 बमवर्षकों से गिराए गए आठ टन वजनी बम ही इनका कुछ बिगाड़ सकते हैं। इस्राइल के दो टन से भी कम वजन वाले कन्वेंशनल वॉरहेड इनके दफ्तरों की टाइलें और शीशे ही झाड़ पाते हैं। रही बात लड़ाई के भविष्य की, तो ईरान ने जवाबी तौर पर इस्राइल के फौजी और रिहाइशी ठिकानों पर घातक मिसाइलें दागकर और इस्राइल ने ईरान के तेल-गैस ठिकानों पर बम मारकर इसके लंबी खिंचने का इंतजाम कर दिया है।

**पुतिन-ट्रंप पहल करें :** ईरान की ओर से इसका दायरा और बढ़ाने वाला अगला कदम होरमुज जलडमरूमध्य पर कब्जे का हो सकता है, जिससे होकर दुनिया का 20% फ्यूल गुजरता है। तेल की कीमतें अभी ही उछाल मार चुकी हैं तो खाड़ी की नाकेबंदी से अमेरिका को विश्वरक्षक सुपरमैन की तरह लड़ाई में कूदने का तर्क मिल जाएगा। इससे लड़ाई पूरी तरह एकतरफा हो जाएगी, लेकिन थमने तक दुनिया का काफी नुकसान हो चुका होगा। बेहतर होगा, पुतिन और ट्रंप इसके पहले ही आग बुझाने की कोशिश करें। उनका आपस का दोस्ताना संवाद फिलहाल दुनिया के लिए अकेली उम्मीद है, हालांकि यूरोपीय संघ को और कुछ हद तक चीन को भी यह बहुत अच्छा नहीं लगेगा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

# पसमांदा मुसलमानों के सहारे सियासी जमीन तलाशती बीजेपी, क्या टूटेगा लालू यादव का मुस्लिम किला?

राजनीतिक संवाददाता द्वारा

**पटना :** भाजपा अब पसमांदा मुसलमानों को लेकर अपनी रणनीति में बड़ा बदलाव करती नजर आ रही है। पहली बार पार्टी ने इस समुदाय को केंद्र में रखकर पसमांदा सम्मेलन आयोजित कर रही है। बीजेपी नेता अब खुलकर मंचों से यह कह रहे हैं कि पसमांदा समाज उनकी प्राथमिकता में है। एनडीए परंपरागत वोट बैंक से इतर पार्टी अब अल्पसंख्यक समुदाय, विशेष रूप से पसमांदा मुसलमानों को साधने की रणनीति पर काम कर रही है।

**बिहार की सियासत में पसमांदा:** बीजेपी परंपरागत रूप से हिंदू वोट बैंक पर केंद्रित भाजपा अब बिहार विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए मुस्लिम समाज के पसमांदा तबके की ओर भी हाथ बढ़ा रही है। पार्टी की रणनीति साफ है। राजनीतिक दायरे को बढ़ाना और सामाजिक समीकरणों को फिर से गढ़ना। पसमांदा सम्मेलन इस बात के संकेत हैं कि भाजपा अब सामाजिक समरसता के जरिए बिहार की राजनीति में नई लकीर खींचना चाहती है।

**पसमांदा समाज से कोई बैर नहीं:** भाजपा पहली बार खुलकर पसमांदा मुसलमानों को साधने के लिए सम्मेलन आयोजित कर रही है। पार्टी नेता भी अब सार्वजनिक मंचों से यह स्वीकार कर रहे हैं कि पसमांदा समाज से उनका कोई बैर नहीं है, बल्कि वे उनकी चिंता और भागीदारी को महत्व देते हैं।

**27 जातियां अति पिछड़ा संवर्ग में:** बिहार में 17.70% आबादी मुसलमानों की है और मुसलमानों की आबादी में 75 से 80% आबादी पसमांदा मुसलमानों की है। अति पिछड़ा वोट बैंक की अगर बात कर ले तो बिहार में कुल मिलाकर 112 जातियां अति पिछड़ा समुदाय में है 112 में 27 जातियां अल्पसंख्यक समुदाय से है। भाजपा की नजर 27 जातियों पर है जो राजनीति और विकास के दौड़ में पीछे रह गए हैं।

**आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर :** बिहार में जातिगत जनगणना 2022-23 के आंकड़ों ने राज्य के सामाजिक ढांचे की गहराई से पड़ताल की है। इस जनगणना से स्पष्ट हुआ है कि मुसलमानों की आबादी न केवल धार्मिक दृष्टि से विविध है, बल्कि जातीय स्तर पर भी अनेक वर्गों में विभाजित है। विशेष रूप से पसमांदा मुसलमान जो पिछड़े, अति पिछड़े और दलित वर्गों से आते हैं। उसकी सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर है। 'हमारी पार्टी सबकी चिंता करती है। हम जमीनी स्तर पर मुसलमानों के बीच जा रहे हैं और केंद्र सरकार की योजनाओं का लाभ पसमांदा समाज को मिल रहा है। हमारे नेता लगातार इस समुदाय से संवाद कर रहे हैं।

**बीजेपी कार्यालय में पसमांदा सम्मेलन:** भाजपा के मीडिया सह प्रभारी दानिश इकबाल ने कहा कि बीजेपी के नेता सीधे समुदाय के बीच जाकर यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि नरेंद्र मोदी सरकार की योजनाओं का लाभ उन्हें कैसे मिल रहा है और सरकार उनकी बेहतरी के लिए किन स्तरों पर काम कर रही है। इसी दिशा में भाजपा बिहार प्रदेश कार्यालय में एक विशेष सम्मेलन आयोजित करने जा रही है जिसमें प्रदेश के कई बड़े नेता शामिल होंगे। 'पसमांदा मुसलमान राजनीति और विकास की दौड़ में अब तक पीछे रह गए हैं। भाजपा इस वर्ग को जोड़ने की कोशिश में है, जैसा प्रयोग उसने उत्तर प्रदेश में किया था।

**एनडीए के लिए चमत्कार से कम नहीं:** बिहार की राजनीति में पसमांदा मुसलमानों को लेकर हलचल तेज हो गई है। वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक कौशलेंद्र प्रियदर्शी का मानना है कि अगर भाजपा बिहार में भी कुछ प्रतिशत पसमांदा मुसलमानों के वोटबैंक में सेंध लगाने में कामयाब हो जाती है, तो यह एनडीए के लिए किसी चमत्कार से कम नहीं होगा।

**मुस्लिम-यादव समीकरण बड़ी ताकत :** उन्होंने यह भी कहा कि यह स्थिति लालू प्रसाद यादव और उनके गठबंधन के लिए खतरे की घंटी साबित हो सकती है। क्योंकि अब तक मुस्लिम-यादव समीकरण महागठबंधन की सबसे बड़ी ताकत माने जाते रहे हैं।

**बिहार में चुनाव कब होंगे ?:** बिहार की वर्तमान यानी नीतीश सरकार का कार्यकाल 23 नवंबर 2020 से शुरू हुआ था. नीतीश सरकार का कार्यकाल इस साल यानी 2025 में 22 नवंबर तक है. जाहिर है कि इससे पहले चुनाव होंगे. माना जा रहा है कि सितंबर से अक्टूबर के बीच आचार संहिता लग जाएगी. माना ये भी जा रहा है कि अक्टूबर से नवंबर के शुरुआती हफ्ते के बीच वोटिंग और मतों की गिनती संपन्न कराई जा सकती है.

# लॉरेंस बिश्नोई और गोल्डी बराड़ हुए अलग? जानिए किस वजह से हुआ दोनों गैंगस्टर्स का ब्रेकअप

ब्यूरो

साबरमती जेल में बंद हाई-प्रोफाइल गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई और गोल्डी बराड़ के बीच बड़ी दरार उभरकर सामने आई है। इससे सेंट्रल इंटेलिजेंस एजेंसियों और राज्य पुलिस फोर्स के लिए उनके सिंडिकेट पर नजर रखना बड़ी चुनौती बन गया है। बिश्नोई और बराड़ अलग हो गए हैं। इंडियन एक्सप्रेस को सूत्रों ने बताया कि सेंट्रल एजेंसियों ने उनके कई सहयोगियों से पूछताछ की थी। एक अधिकारी ने बताया, 'दोनों गैंगस्टरों ने साथ काम करना बंद करने का फैसला किया है। गोल्डी ने अजरबैजान के रोहित गोदारा के साथ काम करना शुरू कर दिया है, जबकि बिश्नोई अब कनाडा के नोनी राणा के साथ जुड़ गया है।' इस घटनाक्रम पर हाल ही में पंजाब, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली के पुलिस अधिकारियों ने एनआईए के साथ चर्चा की थी। अब दोनों के बीच विवाद की बात करें तो गोल्डी बराड़ और सचिन गोदारा ने लॉरेंस के भाई के मामले को अमेरिका में सही से नहीं संभाला था। सूत्रों ने बताया, 'सेंट्रल इंटेलिजेंस एजेंसियों को सूचना मिली थी कि बराड़ और गोदारा ने अनमोल को जरूरी जमानत बांड दाखिल करने में मदद नहीं की। अनमोल को बाद में रिहा कर दिया गया। अनमोल को नवंबर 2024 में अमेरिकी इमिग्रेशन अधिकारियों ने

फर्जी डॉक्यूमेंट्स के साथ यात्रा करने के आरोप में गिरफ्तार किया था। वह कथित तौर पर मई 2022 में पंजाबी सिंगर सिद्धू मूसेवाला की हत्या में शामिल था और पिछले साल एनसीपी नेता और महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री बाबा सिद्दीकी की हत्या का मास्टरमाइंड था। राज्य पुलिस अधिकारियों को पता चला कि पिछले कुछ महीनों से हरियाणा के यमुनानगर के कुख्यात गैंगस्टर काला राणा का छोटा भाई नोनी राणा अमेरिका से फोन कर बिश्नोई की ओर से पैसे इकट्ठा कर रहा है। सूत्र ने कहा, 'आजकल, गैंगस्टर सीधे अमेरिका से जबरन वसूली के लिए कॉल नहीं करते हैं, बल्कि अन्य देशों से जुड़ी वीपीएन सेवाओं का इस्तेमाल करते हैं।' बराड़ और गोदारा का जिक्र करते हुए सूत्रों ने कहा, 'पिछले महीने, उन्होंने कनाडा के मिसिसॉगा में अपने ऑफिस के बाहर ट्रकिंग सिक्योरिटी और बीमा कंसल्टेंसी चलाने वाले कारोबारी हरजीत सिंह की हत्या के लिए सोशल मीडिया पोस्ट में जिम्मेदारी ली थी। उन्होंने लॉरेंस और गिरोह के अन्य सदस्यों का नाम नहीं लिया, जो वे आमतौर पर ऐसे पोस्ट में करते हैं। मूसेवाला और सिद्दीकी की हत्याओं के अलावा बिश्नोई का नाम पिछले तीन सालों में सलमान खान को दी गई कई धमकियों के संबंध में सामने आया है। इसमें एक्टर के घर के बाहर गोली चलाना भी शामिल है। इस बीच, कनाडा ने आरोप लगाया है कि भारत सरकार के एजेंट कनाडा की धरती पर आतंक फैलाने के लिए बिश्नोई गिरोह के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। हालांकि, भारत ने इस आरोप को सिरे से खारिज कर दिया है। क्राइम की दुनिया में अपने शुरुआती दिनों में लॉरेंस ने बराड़, काला राणा और अन्य के साथ मिलकर एक टीम बनाई थी। सूत्रों ने बताया कि बाद में बिश्नोई ने धनंजय सिंह, जग्गू भगवानपुरिया, काला जठेड़ी, रोहित गोदारा और रोहित मोई और हाशिम बाबा के गैंगस्टरों के साथ गठजोड़ करके एक बिजनेस मॉडल बनाया। सूत्रों ने एक्सप्रेस को बताया, 'उनके बीच सबकुछ ठीक चल रहा था, लेकिन फिर सब कुछ बदलने लगा। सबसे पहले भगवानपुरिया के साथ उनके अहम का टकराव हुआ, जो उन्हें हथियार मुहैया करा रहा था और उनसे और पैसे मांग रहा था। कुछ समय बाद काला जठेड़ी भी अलग हो गया, जब उसे पता चला कि गोदारा और बराड़ उसके गढ़ हरियाणा में कई लोगों को जबरन वसूली के लिए कॉल कर रहे थे।

# सचिन तेंदुलकर फाउंडेशन नक्सल प्रभावित दंतेवाड़ा में 50 खेल के मैदान डेवलप करेगा

विशेष प्रतिनिधि द्वारा

**दंतेवाड़ा :** मास्टर ब्लास्टर के नाम से मशहूर सचिन तेंदुलकर ने बस्तर के बच्चों और खिलाड़ियों के लिए एक बड़ा फैसला किया है. सचिन तेंदुलकर फाउंडेशन नक्सल प्रभावित दंतेवाड़ा में 50 खेल के मैदान विकसित करेगा. नक्सलवाद का दशकों से दंश झेल रहा दंतेवाड़ा तेजी से अपनी सुंदरता और प्रतिभा के लिए जाना जाने लगा है. दिग्गज क्रिकेटर रहे सचिन तेंदुलकर फाउंडेशन की ओर से स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर एक अनूठी पहल पर काम कर रहा है. योजना के तहत अबतक 20 से ज्यादा खेल के मैदानों को विकसित किया जा चुका है. कुल 50 खेल के मैदान सचिन तेंदुलकर फाउंडेशन की मदद से विकसित किए जाने हैं।

**सचिन तेंदुलकर फाउंडेशन :** दंतेवाड़ा कलेक्टर कुणाल दुदावत ने बताया कि "इस परियोजना के तहत सामुदायिक भागीदारी से अब तक जिले में कम से कम 20 खेल के मैदान विकसित किए गए हैं और अक्टूबर तक बाकि का लक्ष्य हासिल कर लिया जाएगा।

**मानदेशी फाउंडेशन :** बस्तर के मानदेशी फाउंडेशन के सहयोग से सचिन तेंदुलकर दंतेवाड़ा के 50 खेल मैदानों का कायाकल्प करा रहे हैं. सचिन तेंदुलकर की इस पहल से इलाके के युवाओं की न सिर्फ खेल में रुचि बढ़ेगी बल्कि उनका मानसिक और शारीरिक विकास भी होगा. समाज की मुख्यधारा से भटके युवाओं को खेल से जोड़ा जाएगा और इससे नक्सलवाद के खात्मे में मदद मिलेगी. खेल न सिर्फ जीवन को अनुशासित बनाता बल्कि प्रतिस्पर्धा के जरिए हमें बहेतर लक्ष्य की ओर भी ले जाता है. नए खेल मैदानों के बनने से वहां के युवाओं की खेल में रुचि बढ़ेगी और वो राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का भी लोहा मनवाएंगे। दंतेवाड़ा जिले के छिंदनार में खेल का आयोजन किया जा रहा है. इस आयोजन में फुटबॉल, खो खो, कबड्डी के साथ साथ जंगल जिम (जिसे क्लाइम्बिंग फ्रेम भी कहा जाता)जैसे स्पोर्ट्स भी होंगे. खेल मैदानों का निर्माण फाउंडेशन स्थानीय लोगों के साथ मिलकर कर रही है. कोई बाहरी ठेकेदार इसका निर्माण नहीं कर रहे हैं. छिंदनार में बना यह मैदान सैम्पल मैदान है. जिसमें 50 गांवों के 100 युवाओं को ट्रेनिंग दी गई है. जिसके बाद दूसरे भाग में 50 गांवों के लोग अपने क्षेत्र में जाकर अपने लिए मैदान बनाएंगे. निर्माण कार्य के लिए फाउंडेशन और जिला प्रशासन पूरी निर्माण सामग्री और काम के लिए लोगों की व्यवस्था करेगी में बड़े गुडेर पोटाकेबिन से

ट्रेनिंग लेने के लिए छिंदनार पहुंचा था. सबसे पहले मैदान का मेजरमेंट लिया गया. फिर खेल के अनुसार उसमें जगहों का चयन किया गया. उसमें निर्माण कार्य किया गया. प्रशिक्षण को लेकर बहुत अच्छा लगा. सभी स्कूलों के मैदान में खेल की सुविधा होनी चाहिए,बच्चे खेल मैदान का भरपूर इस्तेमाल करें. अपनी प्रतिभा को आगे बढ़ाएं. अपने स्कूल में इस तरह का मैदान बनाने के लिए प्रशिक्षण लेने से हमें बड़ा फायदा हुआ है. वापस जाकर जल्द ही इसका निर्माण कराया जाएगा.खिलाड़ी मन से खेलेगा तो निश्चित ही आगे बढ़ेगा तेंदुलकर फाउंडेशन जिले में मैदान बना रहा है. जिसमें प्राइमरी और मिडिल स्कूलों का चयन किया गया है. जिले में कई खेल मैदान हैं लेकिन तकनीकी रूप से इसका निर्माण नहीं कराया गया था. मैदान की कमेटी प्रशिक्षित भी नहीं होती थी. छिंदनार गांव में एक साथ 10 से 12 खेलों के मैदान तैयार किया गया है. जिसमें खोखो, कबड्डी, वॉलीबॉल, गोला फेंक, तवा फेंक, रनिंग ट्रैक, लांग जम्प, हाई जम्प और योगा ट्रैक भी बनाया गया है. इस तरह जिले में 50 मैदान बनाया जा रहा है. निश्चित तौर पर प्राथमिक स्तर से बच्चों की प्रतिभा निखरकर सामने आएगी।

**नक्सलगढ़ के युवाओं को मिलेगी सपनों की उड़ान :** इस योजना से विशेष रूप से आदिवासी समुदाय के बच्चों को लाभ होगा. यहां के बच्चे जो अब तक संसाधनों की कमी के कारण अपनी प्रतिभा को सही दिशा नहीं दे पा रहे थे. यह खेल मैदान उन्हें न केवल अपने सपनों को उड़ान देने का मौका देंगे, बल्कि समाज में एक नई पहचान भी दिलाएंगे. दंतेवाड़ा में बन रहे ये 50 खेल मैदान महज़ ज़मीन के टुकड़े नहीं, बल्कि सपनों की पगडंडी हैं. यूं तो बस्तर में प्रतिभाओं की कमी नहीं है. अब उम्मीद जताई जा रही है कि बस्तर से भी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी निकलेंगे. दंतेवाड़ा का नाम सुनते ही ज़हन में एक तस्वीर उभरती है. घने जंगल, आदिवासी जीवन और नक्सली गतिविधियों की छाया. लेकिन अब इस तस्वीर में बदलाव लाने जा रही है. क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर की प्रेरणा और मानदेशी फाउंडेशन की साझेदारी से बस्तर के गांवों में 50 खेल मैदानों का निर्माण हो रहा है. जो बच्चों और युवाओं के लिए एक नई दिशा तय करेंगी।

**बस्तर ओलंपिक 2024 :** पिछले साल राज्य सरकार ने दंतेवाड़ा और छह अन्य जिलों वाले बस्तर क्षेत्र की खेल प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के लिए बस्तर ओलंपिक 2024 का आयोजन किया था. बस्तर ओलंपिक 2024 में 10 हजार से ज्यादा खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया था. अलग अलग खेलों में बड़ी संख्या में युवाओं ने भाग लिया. बस्तर ओलंपिक में सरेंडर नक्सलियों ने भी हिस्सा लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया. बस्तर ओलंपिक के समापन समारोह में खुद केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह शामिल होने पहुंचे थे. बस्तर ओलंपिक के मंच से ही केंद्रीय गृहमंत्री ने कहा था कि अगली बार जब में बस्तर ओलंपिक के आयोजन में आऊंगा आऊंगा तो यहां नक्सलवाद का खात्मा हो चुका होगा।

**दंतेवाड़ा विधायक चैतराम अटामी ने दिया धन्यवाद :** विधायक चैतराम अटामी ने कहा कि बड़ी खुशी की बात है कि सचिन तेंदुलकर फाउंडेशन नक्सल प्रभावित इलाके दंतेवाड़ा में खेल के मैदानों को निखारने का काम कर रहा है. विधायक ने कहा कि हमें खुशी होगी कि सचिन तेंदुलकर मां दंतेश्वरी के दर्शन के लिए भी दंतेवाड़ा आएं. विधायक ने कहा कि खेल के मैदान होने से नक्सलवाद पर भी लगाम लगेगी और प्रतिभावान बच्चों को नया मुकाम और पहचान भी मिल पाएगा।

## संक्षिप्त समाचार

### नशा मुक्त भारत अभियान के तहत उपायुक्त ने 14 नुक्कड़ नाट्य दल को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया

**आदिवासी एक्सप्रेस**

**हजारीबाग।** नशा मुक्त भारत अभियान के तहत उपायुक्त श्री शशि प्रकाश सिंह ने सोमवार को समाहरणालय परिसर से 14 नुक्कड़ नाट्य दलों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। नाट्य दल जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के 218 चिन्हित स्थलों पर नशा मुक्ति अभियान के संबंध में लोगों को जागरूक करेंगे। नशा मुक्त भारत अभियान के तहत पूरे जिले में वृहत स्तर पर नशा मुक्ति को लेकर जागरूकता अभियान चलाई जा रही है। इसी कड़ी में आज सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, हजारीबाग के द्वारा 14 नुक्कड़ नाट्य दल को रवाना किया गया है। ये नाट्य दल शहरी क्षेत्रों के चिन्हित स्थानों यथा प्रमुख कॉलेजों, स्कूल, मार्केट व ग्रामीण क्षेत्रों के प्रमुख हाट, बाजारों, स्कूलों, चौक चौराहा, पंचायत क्षेत्रों सहित अन्य प्रभावित स्थानों में जाकर नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का काम करेगी। नशा मुक्ति अभियान के तहत नुक्कड़ नाटक की टीम 16 से 26 जून 2025 तक नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों को जागरूक करेगी। इस अवसर पर उपायुक्त श्री शशि प्रकाश सिंह के अलावे डीपीआरओ श्री रोहित कुमार सहित सभी जनसंपर्क के पदाधिकारी व कर्मी उपस्थित रहे।

### अहमदाबाद प्लेन हादसा में अनमोल जीवन गंवाये लोगों को दी गई श्रद्धांजली

- **सेवानिवृत्त पुलिस पदाधिकारी एसोसीएशन ने प्लेन हादसा के मृतकों को दी श्रद्धांजलि**

**आदिवासी एक्सप्रेस**

**हजारीबाग।** स्टेशन क्लब में सोमवार को सेवानिवृत्त पुलिस पदाधिकारी एसोसियेशन ने अहमदाबाद प्लेन हादसा में असमय अपने अनमोल जीवन गंवा बैठे लोगों की आत्मा की शांति के लिए श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर दो मिनट का मौन रख कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया।एसोसियेशन के अध्यक्ष शिव प्रकाश सिंह ने विमान हादसा में असमय मृतक के परिजन को हिम्मत मिले जिन्होने किसी का पति,किसी का भाई,सगे,संम्बधि और रिस्तेदार को गंवाया उनके परिजन को हिम्मत मिले। पुरा देश इस आसमयिक हादसा से हतप्रभ है।सभी मृतक आत्मा की शांति के लिए आज हम सभी स्टेशन क्लब में उपस्थित हुए और उन्हें श्रद्धांजलि दी।

### विभावि के नशा मुक्ति दल द्वारा कोचिंग संस्थानों में नशा विरोधी जागरूकता अभियान आयोजित

**आदिवासी एक्सप्रेस**

**हज़ारीबाग।** विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हज़ारीबाग द्वारा उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग, झारखण्ड सरकार के निर्देशानुसार जिले के प्रमुख कोचिंग संस्थानों एचीवर्स क्लासेज एवं विज्ञान अकादमी में नशा विरोधी जागरूकता अभियान चलाया गया। इस अभियान का उद्देश्य युवाओं को मादक पदार्थों के दुष्प्रभावों से अवगत कराना और उन्हें नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करना है। कार्यक्रम में अर्थशास्त्र विभाग, वि. भा. वि. के शोध छात्र संतोष पंडित, पुष्कर कुमार पुष्प, आरती मेहता सहित अन्य शोधार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों को नशे से होने वाले शारीरिक, मानसिक और सामाजिक नुकसान के बारे में बताया गया तथा उन्हें ÷नशा मुक्त भारत÷ का संदेश दिया गया। एचीवर्स क्लासेज के निदेशक अजय ठाकुर और अरविंद ठाकुर ने इस अभियान की सराहना करते हुए कहा कि युवाओं को नशे जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर रखना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि शैक्षणिक संस्थानों को इस दिशा में विश्वविद्यालयों के प्रयासों में सहयोग करना चाहिए, क्योंकि युवा ही देश का भविष्य हैं। विज्ञान अकादमी के निदेशक श्री आदर्श आनंद ने भी इस पहल में सक्रिय सहभागिता निभाई। उन्होंने कहा कि नशे से दूरी केवल व्यक्ति की भलाई नहीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज की सुरक्षा है।

# बिजली संकट पर फूटा हजारीबाग और रामगढ़ की जनता का गुस्सा

## सांसद मनीष जायसवाल के नेतृत्व में जीएम कार्यालय के बाहर हुआ महाधरना

**आदिवासी एक्सप्रेस**

**हजारीबाग।** हजारीबाग और रामगढ़ जिले में पिछले एक पखवाड़े से जारी भीषण गर्मी के बीच बिजली की आंख-मिचौली से त्रस्त जनता का धैर्य टूट गया। सोमवार को हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल के आह्वान पर झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड के महाप्रबंधक (तकनीकी) कार्यालय के बाहर भाजपा के जनप्रतिनिधियों, संगठन से जुड़े लोगों और हजारों आम लोगों ने महाधरना दिया। सुबह 11 बजे से शुरू हुए इस प्रदर्शन में विद्युत आपूर्ति की लगातार बदहाल स्थिति, विभागीय अधिकारियों की लापरवाही और झारखंड की गठबंधन सरकार के कुशासन के खिलाफ प्रचंड विरोध प्रदर्शन किया गया। धरने में सांसद मनीष जायसवाल के साथ बरही विधायक मनोज कुमार यादव, बड़कागांव विधायक रोशन लाल चौधरी, सदर विधायक प्रदीप प्रसाद, भाजपा ओबीसी मोर्चा के झारखंड प्रदेश अध्यक्ष अमरदीप यादव, हजारीबाग भाजपा जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह और रामगढ़ भाजपा जिला अध्यक्ष प्रवीण मेहता सहित सैकड़ों भाजपा नेता, कार्यकर्ता और सांसद समर्थक शामिल हुए। हजारीबाग के जुलू पार्क परिसर में आयोजित इस महाधरना की अध्यक्षता हजारीबाग भाजपा जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह ने की, मंच संचालन भाजयुमो जिला अध्यक्ष राजकरण पाण्डेय ने और धन्यवाद ज्ञापन कटकमसांडी के पूर्व भाजपा मंडल अध्यक्ष जीवन मेहता ने किया। धरने के दौरान हजारीबाग और रामगढ़ जिले के कई भाजपा नेताओं ने लोगों को संबोधित किया और बिजली कटौती की व्याप्त गंभीर समस्या को लेकर राज्य सरकार और बिजली विभाग के अधिकारियों पर जमकर अपनी भड़ास निकाली ।

### हेमंत सरकार ने ढिबरी युग में ला खड़ा किया है, लिखित आश्वासन पर नहीं हुआ अमल तो विभाग के अधिकारी मंत्री तक का काटेंगे बिजली, होगा व्यापक जन- आंदोलन- मनीष जायसवाल

इस अवसर पर हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल ने उपस्थित हजारों लोगों और बिजली विभाग के अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि बीते एक माह से बड़कागांव, केरेडारी प्रखंड समेत पूरा हजारीबाग व रामगढ़ जिला बिजली की समस्या को लेकर त्राहिमाम कर रहा है। किसानों की खेतों में सिंचाई बंद है, फसलें मर गई हैं। विद्यार्थियों की पढ़ाई बाधित है और तो और घरों के नलों में पानी आना भी बंद हो गया है। उन्होंने कहा, आज लगता है कि हेमंत सरकार ने हम लोगों को ढिबरी युग में लाकर खड़ा कर दिया है। जिसको कभी भी यहां के ग्रामीण व भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता बर्दाश्त नहीं करेंगे। सांसद जायसवाल ने धरना स्थल से बिजली विभाग को चेताते हुए कहा कि अगर उक्त लिखित आश्वासन का पालन नहीं किया जाता तो उसके बाद हजारीबाग समेत पूरे राज्य के बिजली विभाग के पदाधिकारी एवं संबंधित मंत्री के बिजली कनेक्शन काटकर पूरे प्रदेश में उग्र जन-आंदोलन किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि बिजली विभाग द्वारा रोया जा रहा रोना सरासर गलत है क्योंकि पूरे देश में बिजली का उत्पादन उपभोग से अधिक है और झारखंड सबसे कम उपभोग कर रहा है, लेकिन राज्य सरकार की गलत नीतियों के कारण नियमित बिजली की आपूर्ति नहीं हो पा रही है ।

### विधायकों ने भी कहा अगर नहीं सुधरी स्थिति तो आंदोलन होगा ओर तेज

बरही विधायक मनोज कुमार यादव ने कहा कि जब-जब बिजली समस्याओं को लेकर विभाग का कार्यालय खटखटाया गया, तब-तब आश्वासन के सिवा कुछ भी नहीं मिला, लेकिन अब जनता जाग चुकी है और इसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। बड़कागांव विधायक रोशन लाल चौधरी ने कहा कि अगर बड़कागांव, केरेडारी समेत पूरे जिले में बिजली की स्थिति में सुधार नहीं की गई तो बड़कागांव से एक भी कोयले का ठेला बाहर नहीं जाने देंगे और बड़कागांव केरेडारी समेत पूरे जिले में चक्का जाम कर दिया जाएगा। सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने कहा कि अगर नियमित बिजली की आपूर्ति नहीं की गई तो बड़कागांव, केरेडारी के साथ-साथ पूरे जिले में कोयले की ढुलाई पर रोक लगाने के साथ अनिश्चितकालीन आंदोलन किया जाएगा और हजारीबाग के तमाम बिजली विभाग के पदाधिकारी का हुक्का चिलम बंद कर दिया जाएगा।

### साढ़े पांच घंटे चला धरना, हरकत में आया बिजली विभाग, दिया लिखित आश्वासन

बिजली की चौपट व्यवस्था के खिलाफ सांसद मनीष जायसवाल के आह्वान पर आयोजित यह धरना करीब साढ़े पांच घंटे चला। धरने में लगातार बढ़ती लोगों की संख्या और उनके रोष को देखते हुए झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड के अधिकारी हरकत में आए। धरने के करीब चार घंटे बाद बिजली विभाग के अधिकारी धरना स्थल पर पहुंचे और सांसद मनीष जायसवाल व विधायकों से विशेष वार्ता की। वार्ता के दौरान बिजली विभाग के हजारीबाग और रामगढ़ जिले के महाप्रबंधक दिनेश कुमार सिंह उर्फ डी. के. सिंह, हजारीबाग के कार्यपालक अभियंता सुब्रत बनर्जी, चतरा के कार्यपालक अभियंता अंगेश कुमार, सीडीओ हजारीबाग शहरी क्षेत्र आर. पी. सिंह, सीडीओ ग्रामीण क्षेत्र अमित कुमार, जूनियर इंजीनियर अवतेश कुमार मौजूद रहे।

लंबी वार्ता के बाद सांसद मनीष जायसवाल ने बिजली अधिकारियों से कहा कि वे लिखित रूप से नियमित बिजली आपूर्ति का आश्वासन दें, तभी धरना समाप्त किया जाएगा। इसके बाद आनन-फानन में बिजली विभाग के महाप्रबंधक-सह-मुख्य अभियंता दिनेश कुमार सिंह ने अपने लेटर हेड पर लिखित आश्वासन दिया कि विद्युत आपूर्ति में आई कमी को दूर करते हुए हजारीबाग एवं रामगढ़ जिले में पूर्व की भांति तत्काल विद्युत आपूर्ति व्यवस्था की जाएगी। जिसके बाद धरना समाप्त हुआ।

### मौके पर ये गणमान्य लोग रहे मौजूद

बरही विधायक मनोज कुमार यादव, बड़कागांव विधायक रोशन लाल चौधरी, सदर विधायक प्रदीप प्रसाद, हजारीबाग के जिला परिषद के अध्यक्ष उमेश प्रसाद मेहता, ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष अमरदीप यादव, हजारीबाग भाजपा जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह, रामगढ़ भाजपा जिला अध्यक्ष प्रवीण मेहता, वरिष्ठ भाजपा नेता एवं पूर्व जिला अध्यक्ष प्रो.के.पी. शर्मा, प्रदेश कार्य समिति सदस्य सुदेश चंद्रवंशी, के.पी. ओझा, अनिल मिश्रा, हरीश श्रीवास्तव, पूर्व जिला अध्यक्ष अशोक यादव, टुन्नू गोप, चंद्रशेखर चौधरी, जिला पदाधिकारी रेणुका साहू, आनंद देव, रमेश ठाकुर, सुमन कुमार, जय नारायण प्रसाद, कुणाल किशोर दुबे, कुंवर मनोज सिंह, मनोज गिरी, राजीव चतुर्वेदी, राजेंद्र कुशवाहा, अविनाश कुमार, लोकसभा सांसद प्रतिनिधि सत्येंद्र नारायण सिंह, रामगढ़ जिला सांसद प्रतिनिधि राजीव जायसवाल, हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मीडिया सांसद प्रतिनिधि रंजन चौधरी, बड़कागांव विधानसभा मीडिया सांसद प्रतिनिधि उमेश दांगी, रामगढ़ विधानसभा के सांसद मीडिया प्रतिनिधि धनंजय कुमार पुटूस, मांडू विधानसभा के सांसद मीडिया प्रतिनिधि रीमा कुमारी, भाजपा नेता महेंद्र बिहारी, राजकरण पाण्डेय, मुकुटधारी महतो, जीतन राम, मनींद्र शर्मा, मंडल अध्यक्ष कैलाश यादव, द्वारिका सिंह उर्फ खोखा सिंह, शेफाली गुप्ता, राजेंद्र चंद्रवंशी, खेमलाल महतो, कैलाशपति सिंह, विवेक बरियार, रणधीर पांडेय, प्रकाश कुशवाहा, अरुण राणा, कर्मचारी साव, अजय साहू, किशोरी राणा, पुरुषोत्तम पांडेय, दामोदर साव, अशोक कुमार यादव, विजय वर्मा, उपेंद्र सिंह, शिवपाल यादव, टुकेश्वर प्रसाद, प्रीतम साव, अमित गुप्ता, उपेंद्र प्रसाद, बाल गोविंद सोनी, अनमोल सिंह, महेंद्र प्रजापति, धनंजय पुटूस, रंजीत पांडे, विवेक कुमार, विनोद कुमार, प्रीतम झा, मंशू बेदिया, तोकेस सिंह, रतन प्रसाद साहू, सुनील प्रसाद, अशोक राणा, जीवन मेहता, शशि मेहता, भीखन महतो, रंजीत मेहता, स्वरूप नारायण, पारसनाथ महतो, महेंद्र महतो, शिबू मेहता, मनोरमा राणा, सत्यभामा, ज्योत्सना देवी, गुड़िया देवी, रानी कच्छप, पूनम साहू, ज्योत्सना, पूनम मिश्रा, उमा पाठक, श्वेता सिंहा, कंचन शर्मा, नेहा आलम, मीरा मेहता, विनोद कुमार राम, सरदार अनमोल सिंह, विक्की कुमार महतो, बंटी मोदी, प्रीतम झा, कृष्णा राम, लक्ष्मण मंडल, महेंद्र महतो, राकेश सिन्हा, शंकर करमाली, विवेक कुमार गुप्ता, गुंजन साव, संतोष मंडल, अरविंद कुमार प्रसाद, रवींद्र वर्णवाल उर्फ़ दीपू, राजू सिंह, रिंकू वर्मा, इंद्र कुमार पंडित, राजेश यादव, चंदन सिंह, राहुल मंडल, अनिल मिश्रा, मनोज गिरी, दीपक मेहता, अ सिन्हा, विशेषांक वर्मा सहित अन्य हजारों गणमान्य लोग मौजूद रहें।

## महिला शिल्पकला केंद्र, महिला समिति हजारीबाग ने चित्रगुप्त मंदिर छठ तालाब निर्माण के लिए दिए 21,000 रुपये

**आदिवासी एक्सप्रेस**

**हजारीबाग।** सामाजिक सेवा और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की दिशा में एक सराहनीय पहल करते हुए, महिला शिल्पकला केंद्र, रुक्मणि भवन में संचालित महिला समिति हजारीबाग के द्वारा चित्रगुप्त मंदिर छठ तालाब निर्माण समिति को 21,000 रुपये की नगद राशि मंदिर निर्माण कार्य में सहयोग के रूप में प्रदान की गई। यह सहयोग समिति द्वारा मंदिर निर्माण में जनभागीदारी को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किया गया, ताकि स्थानीय समाज को एक सुंदर, धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र प्राप्त हो सके।

इस अवसर पर महिला समिति की अध्यक्ष श्रीमती मीना अंबष्ट ने कहा कि मंदिर केवल पूजा-पाठ का स्थल नहीं होता, बल्कि यह हमारी संस्कृति, आस्था और परंपराओं का प्रतीक होता है। उन्होंने कहा कि समिति की यह पहल समाज को जोड़ने और भविष्य की पीढ़ियों को अपने मूल से जोड़ने का माध्यम बनेगी।

समिति की सचिव अखौरी वीणा प्रसाद ने कहा कि छठ तालाब और चित्रगुप्त मंदिर का निर्माण न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह हजारीबाग में एक पर्यटक स्थल के रूप में भी उभर सकता है। इससे स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर भी मिलेंगे और सांस्कृतिक गतिविधियों को भी नया मंच मिलेगा।

इस मौके पर समिति की सक्रिय सदस्य अलका सिन्हा, लता खतरी और गीता चौरसिया भी उपस्थित रहीं। सभी ने मिलकर यह संकल्प लिया कि भविष्य में भी समाज के कल्याण के लिए ऐसे प्रयास निरंतर जारी रखे जाएंगे। उन्होंने अन्य संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं से भी अपील की कि वे इस नेक कार्य में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

चित्रगुप्त मंदिर निर्माण समिति के सदस्यों ने महिला समिति की इस मदद के लिए आभार जताया और कहा कि यह सहयोग उनके लिए प्रेरणा स्वरूप है। मंदिर निर्माण कार्य में यह सहयोग मील का पत्थर साबित होगा।

उल्लेखनीय है कि छठ तालाब और चित्रगुप्त मंदिर का निर्माण कार्य स्थानीय दानदाताओं और समाजसेवियों के सहयोग से चल रहा है। यह स्थान आने वाले समय में छठ पर्व जैसे प्रमुख त्योहारों के लिए केंद्र बिंदु बनेगा।

इस प्रकार महिला शिल्पकला केंद्र, महिला समिति हजारीबाग की यह पहल समाज में नारी शक्ति की भूमिका और सामाजिक योगदान का एक सशक्त उदाहरण बनकर उभरी है। मौके पर मंदिर समित के अनुपम सिन्हा, राज प्रकाश एडवोकेट, संजीव कुमार बॉबी, शुभम प्रकाश, दीप नारायण, अनुज सिन्हा उपस्थित रहें।

## जरबा उत्क्रमित उच्च विद्यालय में सम्मान समारोह का आयोजन

- **जरबा उत्क्रमित उच्च विद्यालय की प्राची कुमारी बनी प्रखंड टॉपर**

**संवादाता चरही**

**चरही।** चुरचू प्रखंड के उत्क्रमित उच्च विद्यालय जरबा, चुरचू के सभागार में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसमें जैक द्वारा आयोजित वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2025 में विद्यालय स्तर पर टॉप करने वाले छात्र/छात्राओं को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में चुरचू प्रखंड प्रमुख निरंजन प्रसाद नायक उपस्थित रहे। विदित हो कि उत्क्रमित उच्च विद्यालय जरबा की छात्रा प्राची कुमारी दसवीं की परीक्षा में अपने विद्यालय के साथ साथ प्रखंड टॉपर भी है। उन्हें प्रखंड प्रमुख निरंजन प्रसाद नायक के द्वारा मोमेंटो व उपहार दे कर सम्मानित किया गया। विद्यालय के द्वितीय टॉपर सह प्रखंड के तृतीय टॉपर समीर कुमार को इंद्रा पंचायत के पूर्व मुखिया दशरथ महतो द्वारा मेडल व उपहार देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय की तृतीय टॉपर स्वाति शर्मा को जरबा पंचायत के मुखिया श्रीमती सुनीता देवी के द्वारा मेडल व उपहार देकर सम्मानित किया गया। प्रखंड प्रमुख इस अवसर पर बच्चों को संबोधित करते हुए बच्चों का उत्साह वर्धन किया। उन्होंने सभी शिक्षकों को धन्यवाद देते हुए बताया कि उत्क्रमित उच्च विद्यालय जरबा हमेशा से शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी रहा है और विद्यालय की छात्रा का ब्लॉक टॉप करना विद्यालय और गांव के लिए गर्व का विषय है। जरबा पंचायत की मुखिया सुनीता देवी ने बच्चों को धन्यवाद देते हुए आगे भी ऐसा ही प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किए साथ ही वर्तमान में वर्ग दशम में अध्ययनरत बच्चों को भी और बेहतर प्रदर्शन करने का संकल्प कराया। इंद्रा पंचायत के दशरथ महतो और जरबा पंचायत के पूर्व मुखिया रामदुलार साव ने अपने व्यक्तव्य में बच्चों का काफी उत्साह वर्धन किया तथा भविष्य में और बेहतर प्रदर्शन की कामना किए। इस अवसर पर जरबा पंचायत के पूर्व मुखिया रामदुलार साव, उत्क्रमित उच्च विद्यालय जरबा के प्रधानाध्यापक मुकेश कुमार, एस एम सी के अध्यक्ष अनिल राम, उपाध्यक्ष सुनीता देवी, विद्यालय के शिक्षक राजेंद्र प्रजापति, बिपिन कुमार राय, रामदुलार राम, विनय कुमार साव, सीमा रानी, जोहरा फातमा, संगीता कुमारी, रेखा कुमारी, गीता कुमारी 1, गीता कुमारी 2, रोशन कुमार, सौरव कुमार के साथ साथ एस एम सी के सदस्य, अभिभावक, एवं कई ग्रामीण लोग उपस्थित हुए।

# हजारीबाग कलाकार महोत्सव 2025 का हुए भव्य आयोजन शामिल हुए कला संस्कृति मंत्री सुदिव्य कुमार एवं सदर विधायक प्रदीप प्रसाद

## हजारीबाग के कलाकारों ने मचाया धमाल एक से बढ़कर एक प्रस्तुति देखने को मिली

**आदिवासी एक्सप्रेस**

**हजारीबाग।** हजारीबाग में कलाकार महोत्सव 2025 का भव्य आयोजन नगर भवन में कला, संस्कृति और युवाओं की प्रतिभा का अद्भुत संगम देखने को मिला। हजारीबाग आर्ट एंड कल्चरल ट्रस्ट के द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम कला, संस्कृति और युवा प्रतिभाओं के उत्थान को समर्पित रहा, जिसमें जिले भर के कलाकारों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

कार्यक्रम के बतौर मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड सरकार के खेलकूद, कला, संस्कृति एवं युवा कार्य विभाग मंत्री सुदिव्य कुमार, बतौर विशिष्ट अतिथि सदर विधायक प्रदीप प्रसाद के साथ सम्मानित अतिथि के रूप में जेएमएम के केंद्रीय समिति सदस्य विकास राणा शामिल। सभी अतिथियों ने मंच से कहा, हजारीबाग की सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने के लिए इस तरह के आयोजनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। सरकार युवाओं को प्रोत्साहित करने हेतु हरसंभव सहयोग प्रदान करेगी।

महोत्सव में नृत्य, संगीत, नाट्य, फैशन शो एवं पेंटिंग जैसी रंगारंग प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। जिले के उभरते कलाकारों ने मंच से अपनी प्रतिभा का बेहतरीन प्रदर्शन किया, जिसे दर्शकों की तालियों ने खूब सराहा। कार्यक्रम के आयोजक हजारीबाग आर्ट एंड कल्चरल ट्रस्ट अध्यक्ष रामकिशोर सावंत ने बताया कि महोत्सव का उद्देश्य युवाओं को नशा और नकारात्मक गतिविधियों से दूर रखते हुए उन्हें कला और रचनात्मकता की ओर प्रेरित करना है। साथ ही, स्थानीय सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित एवं बढ़ावा देना भी इसका प्रमुख उद्देश्य है। इस बड़े महोत्सव में हजारीबाग के लगभग पच्चास से ऊपर संस्थाओं में भाग लेकर संयुक्त रूप से एक बैनर तले इस कार्यक्रम का आयोजन किया। समूह नृत्य में जहां किंगडम ऑफ डांस, कलांगना नृत्य विद्यालय, समिष्ठा डांस एवं आर्ट एकेडमी, सांस्कृतिक विकास केंद्र, पुष्पदीप संगीत एवं नृत्य संस्था, नृत्य वाटिका डांस एकेडमी, कथक डांस एकेडमी,चंदन डांस ग्रुप, स्वर भारती म्यूजिकल एकेडमी के बच्चों ने अपने अपने नृत्य से लोगों को मोहा वही समूह गान में श्री मां संगीतयन, मां शारदे संगीत संस्थान, रागेश्री म्यूजिक एकेडमी, आदिशक्ति एकेडमी के प्रस्तुति ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में तरंग ग्रुप द्वारा आयोजित सोहराय आर्ट पर आधारित फैशन शो, कला किरण द्वारा आयोजित कला प्रदर्शनी ,हो एंटरटेनमेंट का नाटक एवं मिस ग्लोबल ट्राइबल क्वीन की उपस्थिति विशेष आकर्षण का केंद्र रही। अदिति शुक्ला, शैली राणा, हर्षिका साक्षी गुप्ता, सीमा गुप्ता, प्रिंस कुमार, सूरज दयाल, संजय कुमार, सुभाष सेन, सुबोध आकाश, राजीव रंजन मिश्रा, शान सैयद, करण पांडे, कुमारी दित्या, शशिकांत सिन्हा उर्फ चुन्नू, प्रतिज्ञा, डॉ रंजन, एकता, सुरेंद्र सुदेश, वसीम अकरम, अरमान अलाम ,मनोज पांडे ,आदि कलाकरों की एकल प्रस्तुति ने कार्यक्रम के जान डालने का काम किया। इस दौरान प्रसिद्ध रंगकर्मी तापस चक्रवर्ती, राकेश सिन्हा एवं प्रदीप सेन गुप्ता को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। मंच संचालन संयुक्त रूप से ट्रस्ट के सचिव प्रदीप पाठक एवं मनोज सिन्हा ने किया। इस कार्यक्रम में विजयश्री सपना कंस्ट्रक्शन, ओम आरोहण के संस्थापक एवं भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता, एम डी एम सैलून, थरुनिका बुटीक, आश्रय फाउंडेशन, सावंत इंटर कालेज, कलकत्ता हेचरी, जानू राज फिल्म एंड टेलीविजन का बतौर प्रायोजक विशेष सहयोग रहा। इस मौके पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के पूर्व विधायक जानकी यादव, कमल नयन सिंह, भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह हरि श्रीवास्तव सुदेश चंद्रवंशी मनोज गिरी एवं बटेश्वर मेहत कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह, जिला अध्यक्ष शैलेंद्र यादव, मनोज नारायण भगत के साथ-साथ जिले के कई गणमान्य नागरिक, सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षकगण व पत्रकार उपस्थित थे। कार्यक्रम का समापन सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र और स्मृति-चिह्न प्रदान कर किया गया।

**पूर्व मध्य रेल**

**खुली निविदा सूचना**

**संख्या: RP/ECR/DNR/TRL/RJB**

**दिनांक– 12.06.2025**

**1. कार्य का नाम एवं स्थान :** Design, Supply, erection, testing & commissioning and modification of 132 KV D/C 3-phase transmission line from CTPS/GSS to RAJABERA/TSS under CEE/Project office of East Central Railway, **2. कार्य का अनुमानित लागत :** रूपये 41445640.79/–, **3. निविदा फार्म की किमत:** रूपये 0.00, **4. आवश्यक बयाना राशि :** रूपये 357200.00/–, **5. निविदा प्रस्ताव जमा करने एवं निविदा खुलने की तारीख एवं समय :** निविदा प्रस्ताव जमा करने की प्रारंभिक तारीख दिनांक–23.06.2025 निविदा खुलने की तारीख एवं समय–दिनांक 07.07.2025 को 15:00 बजे ।, **6. वेबसाइट विवरण, नोटिस बोर्ड का स्थान जहाँ पात्रता मानदंड एवं अन्य शर्ते व विवरण की जानकारी प्राप्त की जा सकती है :** पात्रता मानदंड एवं अन्य शर्ते व विवरण निविदा प्रपत्र में है जिसे **www.ireps.gov.in,** वेवसाइट पर देखा जा सकता है ।, **7. पता एवं अन्य जानकारी :** मुख्य विद्युत अभियंता / रेल परियोजना/ दानापुर कार्यालय जगजीवन स्टेडियम के निकट, खगौल पोस्ट–खगौल जिला–पटना, पिन–801105

**उप मुख्य विद्युत अभियंता**
**रेल परियोजना, दानापुर**

पीआर/0407/प्रोजेक्ट/डीएनआर/ईएलईसीटी/टी/25–26/36

## संक्षिप्त समाचार

### सलगी में हांथी ने मचाया उत्पात

- गिराया चारदीवारी, घर का दरवाजा भी तोड़ा
- पूरे गांव में भय का माहौल, फिर ना आ जाए हांथी

**आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास**

**सिमरिया (चतरा)।** प्रखंड के सलगी टुंडाग गांव में बीते शनिवार की रात एक हांथी गांव में काफी उत्पात मचाया। सुभाष कुमार सिंह एवं सुनील कुमार के घर का चार दिवारी पूरी तरह क्षतिग्रस्त कर दिया एवं घर का दरवाजा तोड़ दिया। घर के परिजन घर के अंदर दुबक कर किसी तरह जान बचाई। भुक्तभोगीयों ने बताया कि फोन से गांव वालों को घर में हांथी घुसने का सूचना दिया तो गांव वालों ने हल्ला कर के और लुकवारी जला कर भगाया। पूरे गांव में भय का माहौल है कि फिर दुबारा वापस ना आ जाए। गांव वालों ने वन विभाग से हांथी से गांव की रक्षा करने एवं नुकसान की भरपाई करने की मांग की है।

### वज्रपात गिरने से सात बकरियों की मौत परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल

**बालूमाथ।** बालूमाथ थाना क्षेत्र के पिंडारकोम गांव में रविवार की शाम अचानक हुई बारिश के दौरान हुई बज्रपात की चपेट में आने से एक चारवाहक समेत सात बकरियों की मौत हो गई। मृतक पशुपालक की पहचान बसिया पंचायत क्षेत्र के पिडारकोम ग्राम निवासी जगदीश यादव उम्र 65 वर्ष के रूप में हुई है। जबकि इसी दौरान जगदीश यादव के साथ उनके सात बकरियों की भी मौत हो गई। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार रविवार कि शाम तेज आंधी तूफान के साथ जोरदार बारिश होने लगी और पशु पालक ने बारिश से बचने को लेकर अपने बकरीयो के साथ एक पेड़ के नीचे रुक गया। इसी बीच जोरदार वज्रपात हुई और उसकी चपेट में वह आ गए जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। उधर इस घटना के बाद से मृतक के परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। ग्रामीणों ने प्रशासनिक पदाधिकारी से मृतक के परिजन के मुझे आर्थिक नुकसान का भरपाई करने को लेकर मुआवजा देने की मांग की है।

### बालूमाथ पंचायत भवन में ग्राम सभा का हुआ आयोजन

**संवाददाता राम कुमार**

**बालूमाथ।** बालूमाथ दिन सोमवार को बालूमाथ पंचायत भवन में एक महत्वपूर्ण ग्राम सभा का आयोजन किया गया। इस सभा की अध्यक्षता पंचायत मुखिया नरेश लोहरा ने की। ग्राम सभा का मुख्य उद्देश्य प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY) के तहत योग्य लाभुकों का सर्वेक्षण कर उनका चयन करना था, ताकि उन्हें सरकारी आवास योजना का लाभ दिलाया जा सके। ग्राम सभा में पंचायत समिति सदस्य, उपमुखिया, सभी वार्ड सदस्य, ग्राम सेवक, राजस्व कर्मचारी,सामाजिक कार्यकर्ता, एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण जनता ने हिस्सा लिया। ग्रामीणों की भागीदारी और उत्साह यह दर्शाता है कि प्रधानमंत्री आवास योजना को लेकर लोगों में व्यापक जागरूकता और अपेक्षा है। मुखिया नरेश लोहरा ने कहा, हमारा प्रयास है कि पंचायत क्षेत्र के हर जरूरतमंद परिवार को प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ मिले। हम पूरी पारदर्शिता और ईमानदारी के साथ सर्वे कर वास्तविक लाभुकों का चयन करेंगे।उन्होंने ग्रामीणों से आग्रह किया कि वे अपनी पात्रता संबंधित सभी आवश्यक दस्तावेज ग्राम सेवक के समक्ष प्रस्तुत करें ताकि कोई भी वंचित न रह जाए। ग्राम सभा में योजना के क्रियान्वयन की प्रक्रिया, पात्रता मानदंड, आवश्यक दस्तावेज,और अपात्र लाभुकों की पहचान जैसे मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही यह निर्णय लिया गया कि जल्द ही पंचायत क्षेत्र के सभी टोले-गांवों में सर्वे कार्य शुरू किया जाएगा और लाभुकों की सूची को पंचायत भवन में सार्वजनिक रूप से चस्पा किया जाएगा। वार्ड सदस्यों ने भी अपने-अपने क्षेत्रों की समस्याएं और जरूरतें सभा में रखीं। कई ग्रामीणों ने भी अपनी बात मुखिया और पदाधिकारियों के समक्ष रखी, जिस पर मौके पर ही समाधान का आश्वासन दिया गया। इस अवसर पर पंचायत सचिव, पंचायत रोजगार सेवक, स्थानीय शिक्षक गण, आंगनबाड़ी सेविका-सहायिका,और कई सामाजिक कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। सभा के समापन पर मुखिया ने पुनः सभी ग्रामीणों से अपील की कि वे योजना का लाभ उठाने हेतु समय पर जानकारी और दस्तावेज उपलब्ध कराएं तथा सर्वे टीम को सहयोग दें। उन्होंने यह भी कहा कि अगर किसी भी तरह की गड़बड़ी की सूचना मिलती है तो उस पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

# एनटीपीसी नॉर्थ करणपुरा की यूनिट 3 का वाणिज्यिक संचालन प्रारंभ, देश की विद्युत संरचना को मिला नया आयाम

**आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता- अबुल कलाम**

**टंडवा- (चतरा)** एनटीपीसी नॉर्थ कर्णपुरा ने रविवार 15 जून, 2025 की रात्रि को अपनी तीसरी इकाई (660 मेगावाट) के वाणिज्यिक संचालन (सीओडी) की औपचारिक घोषणा की है। इस उपलब्धि के साथ ही परियोजना की सभी तीनों इकाइयाँ अब पूर्ण रूप से चालू हो चुकी हैं, जिससे संयंत्र की कुल स्थापित क्षमता 1,980 मेगावाट हो गई है। यूनिट- 3 के चालू होने के साथ ही एनटीपीसी समूह की कुल स्थापित क्षमता 81,368 मेगावाट तक पहुँच गई है, जिससे एनटीपीसी भारत के अग्रणी विद्युत उत्पादक के रूप में अपनी स्थिति को और भी सशक्त करता है। यह उपलब्धि न केवल क्षेत्रीय विद्युत आपूर्ति को मजबूती प्रदान करती है, बल्कि देश की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं को भी सार्थक रूप से पूरा करती है। एनटीपीसी नॉर्थ कर्णपुरा सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट (एनकेएसटीपीपी) की कुल नियोजित क्षमता 1,980 मेगावाट है, जिसमें 660 मेगावाट की तीन इकाइयों शामिल हैं। झारखंड के चतरा जिले में स्थित यह पिट-हेड परियोजना झारखंड, बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और सिक्किम राज्यों को 24×7 विश्वसनीय और किफायती बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि एनटीपीसी नॉर्थ कर्णपुरा भारत की पहली सुपरक्रिटिकल थर्मल पावर परियोजना है, जिसमें इतने बड़े पैमाने पर एयर-कल्ड कंडेंसर (ACC) का उपयोग किया गया है। यह तकनीकी नवाचार पारंपरिक वॉटर-कूल्ड कंडेंसर की तुलना में जल की खपत को एक-तिहाई तक कम करता है, जो सतत एवं दक्ष ऊर्जा उत्पादन के प्रति एनटीपीसी की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस महत्वपूर्ण अवसर पर एनटीपीसी नॉर्थ कर्णपुरा के कार्यपालक निदेशक (हेड ऑफ प्रोजेक्ट) एस. के. सार ने कहा, यूनिट- 3 का वाणिज्यिक संचालन हम सभी के लिए अत्यंत गर्व का क्षण है। यह हमारे संपूर्ण परियोजना दल के समर्पित प्रयासों, तकनीकी श्रेष्ठता और उत्कृष्ट टीमवर्क का प्रतिफल है। एनटीपीसी अपने मिशन विश्वसनीय, किफायती एवं सतत ऊर्जा की आपूर्ति को साकार करने की दिशा में निरंतर अग्रसर है, साथ ही संचालन उत्कृष्टता, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व एवं सामुदायिक विकास को प्राथमिकता देती रही है।

# चतरा पुलिस ने शराब तस्करों के विरुद्ध की बड़ी कार्रवाई, एक तस्कर को किया गिरफ्तार

**आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास**

**चतरा।** पुलिस ने शराब तस्करों पर एक बार फिर बड़ी कार्रवाई की है। पुलिस ने एक अवैध अंग्रेजी शराब भट्ठी का भंडाफोड़ करते हुए भारी मात्रा में नकली विदेशी शराब बरामद की है। इस दौरान पुलिस ने एक तस्कर को भी गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार तस्कर की पहचान गिधौर थाना क्षेत्र के मारंगी गांव निवासी सोमा मुंडा के पुत्र दयाल मुंडा के रूप में हुई है। आईपीएस सिमरिया डीएसपी शुभम खंडेलवाल ने गिधौर थाना में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर जानकारी दी है। श्री खंडेलवाल ने बताया कि उन्हें गुप्त सूचना मिल रही थी कि गिधौर थाना क्षेत्र के मारंगी गांव में दयाल मुंडा के मकान में अवैध रूप से नकली अंग्रेजी शराब का निर्माण और व्यापार किया जा रहा है। इस सूचना पर त्वरित कार्रवाई करते हुए एक छापेमारी दल का गठन किया गया। छापेमारी के दौरान, पुलिस ने मौके से भारी मात्रा में अवैध शराब बरामद की। पुलिस ने एक मोटरसाइकिल और एक मोबाइल फोन भी जब्त किया गया। अभियान में गिधौर थाना प्रभारी कुमार गौतम के अलावा पुलिस अवर निरीक्षक सोनी खलखो, सुनील कुमार सिंह, सहायक अवर निरीक्षक विद्यानंद शर्मा, रंजय कुमार सिंह और गिधौर थाना के जवान शामिल थे। एसडीपीओ ने बताया कि बरामद सामानों में 95 कार्टूनों में 2280 बोतलें नकली शराब और 22 पीस जार शामिल हैं। जिनमें 35 लीटर स्प्रिट भरा हुआ था। उन्होंने यह भी बताया कि अभियान के दौरान अंग्रेजी शराब बनाने वाले अन्य उपकरण और सामग्री भी बरामद की गई है।

# बालूमाथ में झामुमो की प्रखंड स्तरीय बैठक सम्पन्न, 51 सदस्यीय कमिटी का हुआ गठन

**संवाददाता राम कुमार**

**बालूमाथ।** झारखंड मुक्ति मोर्चा के द्वारा बालूमाथ प्रखंड मुख्यालय स्थित होटल कजरिया में एक महत्वपूर्ण संगठनात्मक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक की अध्यक्षता प्रखंड अध्यक्ष प्रदीप गंझू ने की,जबकि कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि झामुमो जिला उपाध्यक्ष कामेश्वर भोक्ता एवं जिला कोषाध्यक्ष मनोज यादव उपस्थित रहे। बैठक का मुख्य उद्देश्य संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करना,कार्यकर्ताओं में समन्वय स्थापित करना और आगामी चुनावों की तैयारियों को धार देना था। इसी क्रम में 51 सदस्यीय प्रखंड स्तरीय कमेटी का गठन किया गया,जिसमें सभी वर्गों और क्षेत्रों के सक्रिय कार्यकर्ताओं को प्रतिनिधित्व दिया गया। बैठक को संबोधित करते हुए जिला उपाध्यक्ष कामेश्वर भोक्ता ने कहा कि,झामुमो हमेशा गरीब, किसान,मजदूर और आदिवासी समाज की आवाज रहा है। संगठन को और मजबूत करने के लिए हर कार्यकर्ता को जिम्मेदारी से कार्य करना होगा। जिला कोषाध्यक्ष मनोज यादव ने अपने संबोधन में कार्यकर्ताओं को प्रेरित करते हुए कहा कि, झामुमो की सरकार ने जो विकास कार्य किए हैं, उसे जन-जन तक पहुंचाने की जिम्मेदारी हमारी है। हम सभी को एकजुट होकर आने वाले समय की चुनौती को अवसर में बदलना है। बैठक में झामुमो नेता एवं प्रखंड बीस सूत्री अध्यक्ष नागदेव उरांव, परमेश्वर गंझू, राजेश यादव, रीना उरांव, मुकेश उरांव सहित बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता और समर्थक उपस्थित थे। कार्यक्रम में संगठन विस्तार, बूथ स्तर पर सशक्त टीम तैयार करना,पंचायत स्तर तक पहुंच बनाना और युवाओं एवं महिलाओं को पार्टी से जोड़ने जैसे अहम बिंदुओं पर चर्चा की गई। अंत में प्रखंड अध्यक्ष प्रदीप गंझू ने सभी कार्यकर्ताओं का आभार प्रकट किया और कहा कि नई कमेटी को पूरी सक्रियता के साथ क्षेत्र में कार्य करना होगा ताकि पार्टी की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाया जा सके। बैठक के सफल आयोजन से कार्यकर्ताओं में नया उत्साह देखने को मिला और संगठनात्मक मजबूती की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

# एनटीपीसी नॉर्थ करणपुरा की यूनिट थ्री का वाणिज्यिक संचालन सफल पूर्वक प्रारंभ

- **देश की विद्युत संरचना को मिला नया आयाम**
- **1,980 मेगावाट से अब 81,368 मेगावाट तक पहुंचा बिजली सप्लाई**

**टंडवा/चतरा।** एनटीपीसी नॉर्थ करणपुरा ने 15 जून 2025 की रात्रि को अपनी तीसरी इकाई (660 मेगावाट) के वाणिज्यिक संचालन (सीओडी) की औपचारिक घोषणा की है। इस उपलब्धि के साथ ही परियोजना की सभी तीनों इकाइयाँ अब पूर्ण रूप से चालू हो चुकी है। जिससे संयंत्र की कुल स्थापित क्षमता 1,980 मेगावाट हो गई है।

यूनिट थ्री के चालू होने के साथ ही एनटीपीसी समूह की कुल स्थापित क्षमता 81,368 मेगावाट तक पहुँच गई है, जिससे एनटीपीसी भारत के अग्रणी विद्युत उत्पादक के रूप में अपनी स्थिति को और भी सशक्त बनाया। यह उपलब्धि न केवल क्षेत्रीय विद्युत आपूर्ति को मजबूती प्रदान की जा रही है। बल्कि देश की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं को भी सार्थक रूप से पूरा किया जा रहा है। एनटीपीसी नॉर्थ करणपुरा सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट (एनकेएसटीपीपी) की कुल नियोजित क्षमता 1,980 मेगावाट है, जिसमें 660 मेगावाट की तीन इकाइयों शामिल है। झारखंड के चतरा जिले में स्थित यह पिट-हेड परियोजना झारखंड, बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और सिक्किम राज्यों को 24×7 विश्वसनीय और किफायती बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि एनटीपीसी नॉर्थ करणपुरा भारत की पहली सुपरक्रिटिकल थर्मल पावर परियोजना है, जिसमें इतने बड़े पैमाने पर एयर-कूल्ड कंडेंसर (ACC) का उपयोग किया गया है। यह तकनीकी नवाचार पारंपरिक वॉटर-कूल्ड कंडेंसर की तुलना में जल की खपत को एक-तिहाई तक कम करता है, जो सतत एवं दक्ष ऊर्जा उत्पादन के प्रति एनटीपीसी की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर एनटीपीसी नॉर्थ करणपुरा के कार्यपालक निदेशक (हेड ऑफ प्रोजेक्ट) संजीव कुमार सुआर ने कहा की यूनिट थ्री का वाणिज्यिक संचालन हम सभी के लिए अत्यंत गर्व का क्षण है। यह हमारे संपूर्ण परियोजना दल के समर्पित प्रयासों, तकनीकी श्रेष्ठता और उत्कृष्ट टीमवर्क का प्रतिफल है।

एनटीपीसी अपने मिशन विश्वसनीय, किफायती एवं सतत ऊर्जा की आपूर्ति को साकार करने की दिशा में निरंतर अग्रसर है, साथ ही संचालन उत्कृष्टता, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व एवं सामुदायिक विकास को प्राथमिकता देती रही है।

### नहीं रहे युवराज स्टूडियो के संचालक रुपेश रजक, हुआ असामयिक निधन

**आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास**

**इटखोरी (चतरा)।** भद्रकाली मंदिर परिसर में संचालित युवराज स्टुडियो के संचालक रूपेश रजक का आकस्मिक निधन हो गया।वे 38 वर्ष के थे। जानकारी के अनुसार बीते शनिवार रात अचानक उन्हें सांस लेने में परेशानी होने लगी। आनन फानन में उन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ईटखोरी में भर्ती करवाया गया, जहां चिकित्सकों ने मरीज की नाजुक स्थिति को देखते हुए तुरंत हजारीबाग रेफर किया। पर सदर अस्पताल में चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित किया। मृतक अपने पीछे पत्नी व एक पुत्र छोड़ गए हैं।अग्नि संस्कार 9:30बजे मुहाने शमशान घाट पर की जाएगी। मौत की सूचना के बाद भद्रकाली मंदिर में संचालित सभी फोटोग्राफी दुकानें शोक में दिन भर के लिए बन्द कर दी गई। वहीं इनके मौत पर चतरा जिला अध्यक्ष मुकेश कुमार ,पूर्व जिला अध्यक्ष अनुज कुमार पांडेय ,ईटखोरी प्रखण्ड अध्यक्ष गौतम सिंह समेत जिले भर के तमाम फोटोग्राफर ,मंदिर प्रबंधन समिति के कई सदस्य व मंदिर के तमाम दुकानदारों ने शोक व्यक्त किया है।

### पूर्व प्रमुख की बेटी श्वेता कुमारी ने 410 अंक प्राप्त कर बनी कॉलेज टॉपर

- कॉलेज मे टॉप टेन करने वाले छात्र -छात्राओं को कलम व डायरी देकर किया गया सम्मानित

**आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता संवाददाता- पप्पू यादव**

**पालमू।** जिले के नौड़ीहा बाजार में अवस्थित कृष्ण मुरारी सिंह इंटर कॉलेज नौडीहा मे जैक द्वारा आयोजित इंटरमीडिएट वार्षिक परीक्षा 2025 में कॉलेज टॉप टेन करने वाले छात्र -छात्राओं को सोमवार को प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजन कर कलम व डायरी देकर सम्मानित किया गया। नौड़ीहा बाजार प्रखंड के पूर्व प्रमुख के बेटी श्वेता कुमारी ने 410 अंक प्राप्त कर अपने कॉलेज की टॉपर बनी । विवेक मिस्त्री 407 , धीरज कुमार 405, रनीश कुमार 379, स्मिता कुमारी 375, अर्पणा 368,खुशी कुमारी 366,सपना कुमारी 365,स्नेहा कुमारी 364, समित कुमार सिंह 349 अंक प्राप्त कर कॉलेज का नाम रौशन किया है। कॉलेज के सचिव प्रेम भीषण सहनी व प्राचार्य नितेश्वर कुमार सिंह , सन शाइन पब्लिक स्कूल के निर्देशक संतोष कुमार गुप्ता, आदर्श हाई स्कूल के प्राचार्य फारूक अंसारी ,पत्रकार पप्पू यादव - विश्वप्रेम कुमार एवं मनीष कुमार के द्वारा छात्र -छात्राओं को सम्मानित किया गया। मौके पर कॉलेज के सचिव प्रेम भीषण सहनी ने कार्यक्रम के सम्बोधित करते हुए कहा कि आने वाला समय इस कॉलेज के छात्र -छात्राओं स्टेट टॉपर बनकर दिखाएंगे । यह मेरा तरफ से अथक प्रयास रहेगा और इस शिक्षा संस्थान मे बेहतर से बेहतर शिक्षा की उत्तम व्यवस्था करना हमारी कर्तव्य है। कॉलेज के सचिव व प्राचार्य के द्वारा उपस्थित सभी अतिथि व पत्रकार साथियों को भी कलम व डायरी देकर सम्मानित किया गया। इस मौक पर प्रो अजय कुमार ,विनय कुमार सिंह सहित शिक्षक- शिक्षकेतर कर्मी उपस्थित रहे।

### घरटीया गांव की महिला की हृदय गति रुकने से मौत, कई लोगों ने जताया शोक

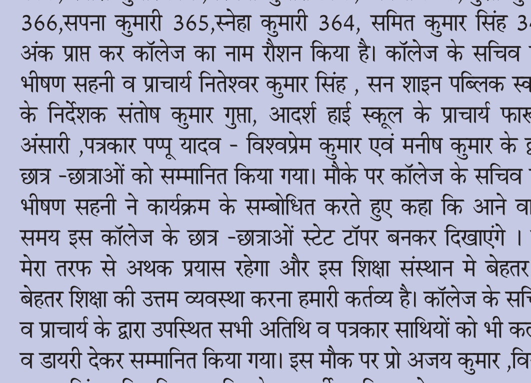

**आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता**

**पलामू।** जिले के विश्रामपुर थाना क्षेत्र के बाघमानावा पंचायत के घरटिया गांव के टोला कचनारिया निवासी राजेंद्र सिंह के 38 वर्षीय पत्नी मुनिया देवी की अचानक हृदय गति रुकने से सोमवार सुबह करीब 11 बजे मेदनीनगर के सदर अस्पताल में मौत हो गई है। अचानक महिला की मौत होने से क्षेत में शोक की लहर दौड़ गई। बताया गया है कि महिला को बीते शाम रविवार को पेट दर्द की शिकायत होने के बाद अचानक उसे गले में घुटन की शिकायत और हालत ज्यादा बिगड़ने पर परिजन उसे बिश्रामपुर सदर अस्पताल में भर्ती कराया, जहां चिकित्सा ने गंभीर स्थिति को देखते हुए मेदिनीनगर रेफर कर दिया। जहां इलाज के दौरान महिला की मौत हो गई। महिला के तीन बच्चे हैं। दो लड़का और एक लड़की पैदा हुए थे। उनकी उम्र 18 साल है। दूसर लड़का का उम्र 14 साल है। एक लड़के का उम्र 10 साल है। महिला की असामयिक मौत पर बाघमानावा पंचायत के कई जनप्रतिनिधि और ग्रामीणों ने शोक व्यक्त किया। और बताया कि महिला काफी मेहनती के साथ मिलनसार व्यक्तित्व के कारण उसके प्रति लोगों का विशेष स्नेह था। शोक व्यक्त करने वाले में बाघमानावा पंचायत मुखिया मनीष साव, पंचायत समिति उदय सिंह खरवार, वार्ड सदस्य संजय सिंह, डॉक्टर संतोष सिंह, लालेश्वर सिंह, जितेंद्र सिंह, नागेंद्र सिंह, महेंद्र सिंह, सुरेंद्र सिंह, उपेंद्र सिंह, प्रमोद सिंह वृजकेशर सिंह सहित कई लोगों का नाम शामिल है।

# टमटमटोला में जंगली हाथियों ने घर और अनाज को किया क्षतिग्रस्त

**संवाददाता राम कुमार**

**बालूमाथ।** बालूमाथ प्रखंड अंतर्गत टमटम टोला में बीती रात जंगली हाथियों का आतंक देखने को मिला। रात करीब दो बजे एक जंगली हाथी ने टोला में अचानक प्रवेश कर लिया,जिससे ग्रामीणों में हड़कंप मच गया। इस हमले में तीन किसानों मणि भुइयां,छोटेलाल साव और लक्ष्मण साव के घरों को काफी क्षति पहुंची है। हाथी ने घर में रखा अनाज भी रौंद डाला, जिससे किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा है।

ग्रामीणों के अनुसार, हाथी ने पहले मणि भुइयां के घर में घुसकर दीवारें तोड़ी और वहां रखे धान एवं चावल के बोरे नष्ट कर दिए। इसके बाद वह बगल के घरों में भी घुसा और छोटेलाल साव एवं लक्ष्मण साव के घरों को नुकसान पहुँचाया। हाथी की दहाड़ और तांडव से पूरा गांव भयभीत हो गया। किसी तरह ग्रामीणों ने शोर मचाकर हाथी को भगाने की कोशिश की, जिसमें घंटों का समय लग गया।

सूचना मिलने के बाद बालूमाथ पंचायत के मुखिया नरेश लोहरा सुबह मौके पर पहुँचे और प्रभावित परिवारों से मुलाकात की। उन्होंने घटनास्थल का निरीक्षण करते हुए प्रशासन से शीघ्र मुआवजा दिलाने का भरोसा दिलाया। मुखिया ने कहा कि यह एक गंभीर मामला है। पीड़ित परिवारों को यथाशीघ्र सरकारी सहायता मिले इसके लिए हम प्रखंड प्रशासन और वन विभाग से समन्वय स्थापित कर रहे हैं।

**प्रभावित किसान क्या बोले**

मणि भुइयां ने बताया कि उन्होंने हाल ही में धान की फसल काटकर घर में भंडारित किया था, जिसे हाथी ने पूरी तरह नष्ट कर दिया। छोटेलाल साव और लक्ष्मण साव ने भी यही बताया कि उनके घरों की छत और दीवारें गिर गई हैं,और महीनों की मेहनत पर पानी फिर गया।

**वन विभाग पर उठे सवाल**

ग्रामीणों ने वन विभाग पर लापरवाही का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि जंगली हाथियों की गतिविधि इस क्षेत्र में नई नहीं है,फिर भी कोई ठोस उपाय नहीं किए गए हैं। न तो कोई अलर्ट जारी किया गया और न ही गांव के आस-पास निगरानी की व्यवस्था की गई।

## संक्षिप्त समाचार

### केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी का देवघर एयरपोर्ट पर किया स्वागत

**देवघर।** सूक्ष्म, लघु एवं मध्य उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी शनिवार को बांका जाने के लिए हवाई मार्ग से देवघर एयरपोर्ट पहुंचे। एयरपोर्ट पर संथाल परगना खादी ग्रामोद्योग के सचिव श्री श्याम नंदन राय और सिल्क क्लस्टर के सीडीई विशाल कश्यप ने पुष्प गुच्छ देकर उनका स्वागत किया। स्वागत के दौरान केंद्रीय मंत्री ने खादी और ग्रामोद्योग के क्षेत्र में हो रहे कार्यों पर विस्तृत चर्चा की। इस अवसर पर खादी और ग्रामोद्योग आयोग के राज्य निदेशक मांगेराम, नोडल अधिकारी सह उप-निदेशक अशोक सिंह, सुनील कुमार सिंह सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

### पॉलिटेक्निक कॉलेज पाकुड़ में नशा मुक्ति एवं सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया गया

- 26 जून तक जिलेभर में चलेगा निषिद्ध मादक पदार्थों के विरुद्ध जागरूकता अभियान
- उपायुक्त ने सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मियों को नशामुक्ति की दिलाई शपथ

**सुस्मित तिवारी**
**आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़**

**पाकुड़-** सदर प्रखंड स्थित पॉलिटेक्निक कॉलेज पाकुड़ में सोमवार को जिला प्रशासन के द्वारा नशा मुक्ति एवं सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया गया। उपायुक्त मनीष कुमार ने विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि नशा एक ऐसी सामाजिक बुराई है जो व्यक्ति के स्वास्थ्य, परिवार और समाज को गहरी चोट पहुंचाता है। उपायुक्त ने छात्र -छात्राओं से अपील किया कि नशीली चीजों से दूर रहते हुए अपने घर से ही नशा मुक्ति अभियान की शुरुआत करें। अपने अभिभावकों तथा आसपास के समाज के लोगों को नशा से दूर रहने की सलाह दें। इसके अलावा उपायुक्त ने छात्र-छात्राओं को सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने कहा कि हम सभी का कर्तव्य है कि हम सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करें और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें। हेलमेट पहनने, शराब पीकर वाहन न चलाने, सीट बेल्ट का इस्तेमाल करने, ट्रैफिक नियमों का पालन करने और सड़क दुर्घटना पीड़ितों की मदद करने हेतु प्रेरित किया।

### श्री परशुराम अखाड़ा ने शहीद कुंदन ओझा की पुण्यतिथि मनाई

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam**

**साहिबगंज।** शहर के एनआरपी सेंटर स्कूल मे गलवान घाटी में 16 जून 2020 को चीनी सैनिकों के साथ हुए हिंसक झड़प में वीरगति को प्राप्त होने वाले साहिबगंज के वीर सपूत कुंदन ओझा जी शहादत दिवस व पांचवीं पुण्यतिथि मनाई गई।श्री परशुराम अखाड़ा द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में सबसे पहले शाहिद कुंदन ओझा जी की चित्र पर माल्यार्पण एवं उन्हें पुष्प अर्पित कर सभी लोगों ने श्रद्धांजलि सुमन अर्पित किया।कार्यक्रम में आए हुए शहीद कुंदन ओझा जी के पिता रवि शंकर ओझा को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। भगवती रंजन पांडे,सुबोध झा एवं ज्योति मिश्रा ने शाहिद की गाथा अपने काव्य के रूप में सुनाइ।अखाड़ा युवा संयोजक अंकित पांडे ने कहा कि शहीद कुंदन ओझा को किसी कार्यक्रम तक सीमित नहीं करना है इनके बारे में विद्यालय के पाठ्यक्रमों में जोड़ा जाए।अखाड़ा प्रमुख राजीव ओझा ने कहा कि जल्द ही शाहिद कुंदन ओझा के घर के सामने शाहिद कुंदन द्वार बनाया जाए। उपस्थित सभी लोगों ने अपनी बातों से शाहिद की वीर गाथा सुनाई। इस मौके पर राजीव ओझा, सच्चिदानंद मिश्रा, अंकित पाण्डेय, मनोज झा, बच्चन पाठक, श्रीकांत ओझा, मनोज दुबे, परमानंद उपाध्याय, संजीत, वेद सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

### कंटेनर को ओवरटेक करने के दोरान बाईक सवार की हुई मौत सड़क जाम

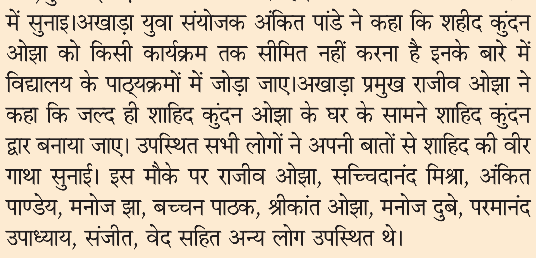

**रामगढ़/रामजी साह**

दुमका भागलपुर सड़क मार्ग एवं रामगढ़ प्रखंड के चंपातरी के पास कंटेनर को ओवरटेक करने के दौरान कंटेनर में बाइक्स सवार को जोरदार टक्कर मार दी जिसके कारण 20 वर्षीय अमित लकड़ा का मौत घटनास्थल पर ही होगी मृतक हंसडीहा थाना क्षेत्र के लकड़ाटांड का रहने वाला बताया जा रहा है ।वही घटना की जानकारी मिलते ही लकडाटांड के दर्जनों आदिवासी समुदाय के लोगों ने दुमका भागलपुर सड़क मार्ग एक घंटा जाम कर दिया जाम की सूचना पाकर सरैयाहाट बीडीओ महेश्वरी प्रसाद तथा थाना प्रभारी प्रकाश सिंह घटनास्थल पहुंचकर घटना का जायजा लिया तथा मृतक के परिजनों तथा ग्रामीणों को समझा बूझकर जाम को हटाया तथा मृतक के परिजनों को सरकारी नियम अनुसार सहायता करने का भी आश्वासन दिया।

# नशा मुक्ति जागरूकता अभियान के तहत रानी ज्योतिर्मय स्टेडियम में टी 20 क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया में

**सुस्मित तिवारी**
**आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो**

**पाकुड़-** जिला पर्यटन, कला-संस्कृति, खेलकूद एवं युवाकार्य विभाग पाकुड़ द्वारा मादक पदार्थ के दुरुपयोग एवं नशामुक्ति जागरूकता अभियान के तहत पाकुड़ के रानी ज्योतिर्मयी स्टेडियम में टी-20 क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। यह मैच पाकुड़ स्पोर्टस

एकेडमी एवं किंग्स इलेवन के बीच खेला गया। साथ ही राज प्लस टू हाई स्कूल में भाषण एवं लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस मादक पदार्थ रोकथाम जागरूकता अभियान में स्कूल के लगभग सैकड़ों छात्र- छात्राओं ने भागीदारी सुनिश्चित की जिसमें लेखन प्रतियोगिता में बालिका वर्ग में प्रथम सिंपी रक्षित, द्वितीय निशा दत्ता, तृतीय कीर्ति कुमारी गोंड एवं लेखन प्रतियोगिता बालक वर्ग में प्रथम सुभाजित मंडल, द्वितीय रूद्र भद्र, तृतीय विनीत कुमार त्रिवेदी एवं मादक पदार्थ निषेध में भाषण प्रतियोगिता में प्रथम शिवम उपाध्याय, द्वितीय रियाज शेख, तृतीय रचित राज मिश्रा एवं सभी विजेता एवं उपविजेता प्रतिभागियों को जिला खेल पदाधिकारी राहुल कुमार एवं विद्यालय के प्राचार्य आशुतोष कुमार के द्वारा ट्रॉफी मेडल एवं सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर जिला खेल समन्वयक विवेक रजक, शारीरिक शिक्षक आलमगीर आलम, खेलो इंडिया के प्रशिक्षक अक्षय बाउड़ी, क्रिकेट कोच रणवीर कुमार एवं विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिका उपस्थित थे।

# आदिम जनजाति उत्थान हेतु धरती आबा जन भागीदारी अभियान के तहत शिविरों का हुआ आयोजन

**सुस्मित तिवारी**
**आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो**

**पाकुड़-** केन्द्र सरकार के निर्देशानुसार 15 जून से 30 जून 2025 तक चलाए जा रहे धरती आबा जन भागीदारी अभियान के तहत सोमवार को जिले के सभी प्रखंड के विभिन्न कलस्टर में ग्राम स्तरीय विशेष शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों के माध्यम से विशेषकर जनजातीय वर्ग के पात्र एवं वंचित हितग्राहियों को शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराया जा रहा है।

इसी क्रम में पाकुड़ प्रखंड के दादपुर कलस्टर, हिरणपुर प्रखंड के बागशीशा कलस्टर, लिट्टीपाड़ा प्रखंड के जोरडीहा, कुंजबोना, करमाटाड़ कलस्टर, महेशपुर प्रखंड के गायबथान, शहरग्राम, पोखरिया कलस्टर, अमड़ापाड़ा प्रखंड के आलुबेड़ा कलस्टर एवं पाकुड़िया प्रखंड के खजुरडंगाल, बासेतकुंडी कलस्टर में आयोजित शिविर में आधार कार्ड, जाति प्रमाण पत्र, आयुष्मान कार्ड, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, जनधन खाते, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, राशन कार्ड, सामाजिक सुरक्षा पेंशन, पीएम विश्वकर्मा योजना, मुद्रा लोन एवं छात्रवृत्ति जैसी योजनाओं के अंतर्गत हितग्राहियों को चिन्हित कर लाभान्वित किया गया।

जिला स्तरीय एवं प्रखंड स्तरीय पदाधिकारियों अधिकारियों ने हितग्राहियों से संवाद कर योजनाओं की जानकारी दी एवं अधिक से अधिक पात्र व्यक्तियों तक लाभ पहुँचाने का आह्वान किया। जनभागीदारी को प्रोत्साहित करने वाले इस अभियान का उद्देश्य वंचित वर्ग को सरकारी योजनाओं से जोड़कर उन्हें मुख्यधारा में लाना है। जिला प्रशासन द्वारा इस अभियान को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित किया जा रहा है।

# धरती आबा एवं प्रोजेक्ट जागृति के तहत इंटीग्रेटेड एक्टिव केस सर्च अभियान का हुआ शुभारंभ

**सुस्मित तिवारी**
**आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो**

**पाकुड़-** धरती आबा जन भागीदारी अभियान एवं प्रोजेक्ट जागृति- बेहतर स्वास्थ्य की ओर एक कदम अंतर्गत जिला में सभी रोग नियंत्रण कार्यक्रमों को एकीकृत करते हुए इंटीग्रेटेड एक्टिव केस सर्च (IACS) अभियान का शुभारंभ उपायुक्त ने फीता काटकर पुराना सदर अस्पताल से शुभारंभ किया।

उपायुक्त मनीष कुमार ने कहा कि स्वास्थ्य विभाग पाकुड़ के द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों को अलग-अलग न करके एक साथ ही सभी तरह की बीमारियों की खोज आज 16 जून से डोर टू डोर अभियान चलाकर की जा रही है। जिला से इसका निगरानी की जा रही है। जांच के दौरान लोगो में किसी भी प्रकार का बीमारी मिलता है तो वहां क्विक रिस्पांस टीम भेजकर मेडिकल सुविधा दी जाएगी। जांच टीम को निर्देश दिया गया कि एक भी घर न छूटे। उपायुक्त ने जिलेवासियों से अपील किया कि जांच टीम आप सभी के घर जाएं तो उनका सहयोग जरूर करें। साथ ही सभी लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें।

मौके पर सिविल सर्जन डॉ मंटू कुमार टेकरीवाल, जिला भीवीडी पदाधिकारी डॉ अमित कुमार एवं जिला यक्ष्मा पदाधिकारी डॉ कौशलेश कुमार सिंह आदि उपस्थित रहे।

# उपायुक्त ने पाकुड़िया प्रखंड में विभिन्न योजनाओं का किया निरीक्षण

**सुस्मित तिवारी**
**आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो**

**पाकुड़ -** उपायुक्त मनीष कुमार के द्वारा पाकुड़िया प्रखंड का दौरा किया गया। इस दौरान उपायुक्त ने अबुआ आवास, मनरेगा अंतर्गत संचालित बिरसा हरित ग्राम योजना एवं पंचायत भवन लागडुम का निरीक्षण किया।

उपायुक्त ने लागडुम पंचायत अंतर्गत गांव में मनरेगा अंतर्गत संचालित बिरसा हरित ग्राम योजना के लाभुक शिवलाल टुडु के द्वारा किए गए प्लांटेशन, पीट डिजिंग का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अनुमान के अनुसार सीपीटी कंस्ट्रक्शन और सीआईबी लगाने का निर्देश जेई, रोजगार सेवक एवं पंचायत सेवक को दिया गया।

**डीसी ने अबुआ आवास का किया निरीक्षण**

उपायुक्त मनीष कुमार ने लागडुम पंचायत में अबुआ आवास योजना के तहत बनाये जा रहे आवासों का निरीक्षण किया। आवास निर्माण कार्यों में तेजी लाने, ससमय योजना पूर्ण करने एवं सरकारी मापदंड के अनुसार बनाने का निर्देश दिया। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को समन्वय स्थापित करते हुए अबुआ आवास एवं जनमन के कार्यों में तेजी लाने का निर्देश दिया। इस दौरान उपायुक्त ने अबुआ आवास की तीसरी किशत के बारे में जानकारी प्राप्त कर उचित दिशा निर्देश दिए।

इसके अलावा उपायुक्त ने लागडुम पंचायत भवन का निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में मीटिंग हॉल, मुखिया कक्ष, पंचायत सचिव कक्ष, ज्ञान केन्द्र, शौचालय की साफ-सफाई एवं पेयजल की उपलब्धता का जायजा लिया और आवश्यक दिशा-निर्देश दिया।

मौके पर विशेष कार्य पदाधिकारी त्रिभुवन कुमार सिंह, प्रखंड विकास पदाधिकारी सोमनाथ बनर्जी, बीपीओ जगदीश पंडित, सहायक अभियंता रोहित गुप्ता, प्रखंड समन्वयक समेत अन्य उपस्थित थे।

### झामुमो संगठन को मजबूत करने का काम करूंगा-सुरेंद्र यादव

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam**

**साहिबगंज।** झामुमो केंद्रीय समिति के अनुमोदन के बाद महासचिव विनोद कुमार पांडे ने साहेबगंज जिला कमेटी का विस्तार किया।वही साहिबगंज सकरोगढ़ निवासी सुरेन्द्र यादव को झामुमो जिला उपाध्यक्ष बनाया! वही सुरेन्द्र यादव ने इसके मुख्यमंत्री सह केंद्रीय अध्यक्ष हेमन्त सोरेन,केंद्रीय सचिव सह प्रवक्ता पंकज मिश्रा, राजमहल सांसद सह कार्यकारिनी सदस्य विजय हाँसदा,बोरियो विधायक सह कार्यकारिनी सदस्य धनंजय सोरेन, राजमहल विधायक सह केंद्रीय कार्यकारिनी सदस्य एमटी राजा, जिला अध्यक्ष अरुण कुमार सिंह जिला सचिव सुरेश टुडू के प्रति आभार व्यक्त किया।जिला उपाध्यक्ष सुरेंद्र यादव ने सभी नव नियुक्त जिला कमेटी के पदाधिकारीगणों को बधाई देते हुए कहा कि जिले में झामुमो को और मजबूत और धारधार बनाने का काम होगा। सुरेंद्र यादब ने कहा क़ी वह जिले के प्रत्येक प्रखंड के पंचायत,गांव,नगर में दौरा कर झामुमो को मजबूत बनाने का काम करेंगे! साथ ही झारखण्ड सरकार द्वारा चलाई जा रही जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी लोगों को देंगे.

### नहाने के दौरान तालाब में डूबने से एक युवक का मौत हो गया

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam**

**साहिबगंज।** राजमहल राधानगर थाना क्षेत्र के रजक टोला उधवा में सोमवार को नहाने के दौरान तालाब में डूबने से एक युवक का मौत हो गया। मिली जानकारी के अनुसार तूफान प्रमाणिक 25 वर्षीय सुबह लगभग 8ः00 बजे घर से कुछ दूरी पर तालाब में नहाने गया था, तभी कुछ देर के बाद किसी तरह वह गहरे पानी में चला गया और डूबने लगा। तभी घाट पर नहा रहे अन्य लोगों की नजर उस पर पड़ी जिसकी सूचना परिजनों को दिया तभी परिजनों एवं ग्रामीणों के द्वारा काफी खोजबीन के बाद उक्त युवक को तालाब से निकाला गया। जिसे इलाज के लिए आनन फानन में अनुमंडल अस्पताल लाया गया जहां चिकित्सकों ने जांच करने के उपरांत उक्त युवक को मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने बताया कि तूफान को तैरना नहीं आता था। घटना की सूचना मिलते ही राधानगर थाना के एएसआई दीवान कुमार निर्मल दलबल के साथ पहुंचकर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पोस्टमार्टम के बाद शव को परिजनों को सौंप दिया। मृतक तूफान प्रमाणिक बिहार का रहने वाला था बचपन में ही माता-पिता गुजर जाने के बाद नानी के पास ही रहता था। नहाने से जाने के पूर्व नानी को बोलकर गया था कि चाय बनाओ नहा कर तुरंत आकर पीते हैं,लेकिन दोबारा तूफान चाय पीने के लिए वापस घर नहीं आया। यही कहकर उसकी नानी सावित्री देव बार-बार रो-रो कर बेहोश हो रही थी। नानी का एकमात्र सहारा था। हृदय विदारक घटना से पूरे गांव में मातम पसर गया है।

### आपसी विवाद में हुई मारपीट में दोनों पक्षों से चार-चार लोग घायल हो गए

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam**

**साहिबगंज।** राजमहल थाना क्षेत्र अंतर्गत शहर के वार्ड नंबर एक महाजन टोली मोहल्ले में बीते रविवार को देर रात दो पक्षों में आपसी विवाद में हुई मारपीट में दोनों पक्षों से चार-चार लोग घायल हो गए। हिंदी जानकारी के अनुसार महाजन टोली निवासी पिंटू घोष (40), छोटू घोष (40), दीप कुमार घोष (9), मालती घोष (61) और दूसरे पक्ष के सुमिता घोष (60), श्रीराम घोष (40), राकेश यादव (35), कालू घोष (18) के बिच पुराने आपसी विवाद में कहा सुनी होते-होते बात मारपीट तक पहुंच गया। जिसमें दोनों पक्षों से कुल आठ लोग घायल हो गया। सभी को अपने-अपने परिजनों के द्वारा रात में ही अनुमंडल अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों के द्वारा सभी का इलाज किया गया। वहीं गंभीर रूप से चोटिल पिंटू घोष को बेहतर इलाज के लिए रेफर कर दिया गया। घटना की सूचना संबंधित थाना पुलिस को दे दी गई थी।

# शहादत दिवस के अवसर पर आज शहीद स्थल रोहिणी में देवघर विधायक सुरेश पासवान, उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी नमन प्रियेश लकड़ा, फूल माला पहन के श्रद्धांजलि दिया गया

**राजा कुमार का रिपोर्ट**

शहादत दिवस के अवसर पर आज दिनांक-16.06.2025 को शहीद स्थल रोहिणी में माननीय देवघर विधायक श्री सुरेश पासवान, उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी श्री नमन प्रियेश लकड़ा, जिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती किरण कुमारी, बीस सूत्री उपाध्यक्ष श्री मुन्नम संजय एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा शहीद सलामत अली, अमानत अली एवं शेख हारून को माल्यर्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इसके उपरांत माननीय देवघर विधायक, उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी, जिला परिषद अध्यक्ष, जिला बीस सूत्री उपाध्यक्ष श्री मुन्नम संजय एवं उपस्थित जनप्रतिनिधियों द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों एवं उनके परिवार के सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए आदर पूर्वक शॉल देकर सम्मानित किया गया। साथ ही निबंध लेखन, भाषण और चित्रकला प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विभिन्न स्कूलों के छात्र-छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

इसके अलावा माननीय देवघर विधायक श्री सुरेश पासवान ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि देश की आजादी के लिए कुर्बान हुए शहीदों की कुर्बानियों से हम सभी को प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। सबसे महत्वपूर्ण अन्याय के खिलाफ आवाज, नारी की रक्षा के लिए संकल्प, अज्ञानता मिटाने की दिशा में अपना योगदान देकर सही अर्थों में महान शहीदों को श्रद्धांजलि होगी। हमारे शहीदों की अमूल्य शहादत ने राष्ट्रभक्ति की एक अनूठी गाथा लिखी। ऐसे वीर देशभक्तों के दिखाए मार्ग पर चलना ही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आजाद भारत में अगर हम साँस ले पा रहे हैं तो सिर्फ व सिर्फ अपने वीर शहीदों की वजह से जिन्होंने अपने प्राणों की प्रवाह किये बिना हमारे बेहतर कल हेतु अपन जीवन न्यौछावर कर दिया।

शहादत दिवस के अवसर पर उपायुक्त श्री नमन प्रियेश लकड़ा ने कहा कि आजादी की पहली लड़ाई में शहीद सलामत अली, अमानत अली एवं शेख हारून के योगदान को नमन करते हुए कहा कि सच्ची श्रंद्धाजलि और सच्चा सम्मान होगा कि हमलोग उनकी शहादत से सीखते हुए देशहित और राज्य सेवा की भावना से कार्य करें। आगे उन्होंने उपस्थित लोगों को वीर शहीदों के बलिदान से प्रेरणा लेते हुए बेहतर भविष्य के निर्माण में सहयोग करने की बात कही। इसके अलावे उपायुक्त श्री नमन प्रियेश लकड़ा ने कहा कि रोहिणी शहीद स्थल पार्क प्रसिद्ध है। हमें उसे और बेहतरी पर ले जाने हेतु वृहद स्तर पर प्रचार-प्रसार करना आवश्यक है; जिससे यहां आने वाले पर्यटकों को इसकी जानकारी हो तथा ज्यादा से ज्यादा संख्या में यहां पर्यटक आकर्षित होते हुए इनके इतिहास को जान सके। आगे उपायुक्त ने समिति के सदस्यों से कहा कि इस पार्क के बेहतरी के लिए जो भी करना पड़े करें और इसे और भी गैरवशाली बनाएँ जिलां प्रशासन द्वारा हर संभव मदद की जाएगी।

इस दौरान मौके पर उपरोक्त के अलावे स्वतंत्रता सेनानी के परिजन, जिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती किरण कुमारी, श्री मुन्नम संजय बीस सूत्री उपाध्यक्ष, ताराचंद जैन, दिगंबर जैन धर्मिक न्यास परिषद के अध्यक्ष, सुधीर देव जी समीती के अध्यक्ष, प्रो0 रामनंदन, अनुमंडल पदाधिकारी, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी, जिला कल्याण पदाधिकारी, गोपनीय प्रभारी, जिला खेल पदाधिकारी, विभिन्न प्रखंडों के प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचलाधिकारी, सहायक जनसंपर्क पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं समिति के सम्मानित सदस्यगण आदि उपस्थित थे।

# अमेरिका के पाकिस्तानी मोह में फंसने की तार्किकता

## >> विचार

> “ एक बार फिर मामला है कि आप अमेरिकियों को एक-दो सांप ऐसे सौंप दें कि वे आपकी सपेरागिरी के कायल हो जाएं। यहां तीन कारण हो सकते हैं कि क्यों पश्चिमी देश पाकिस्तान के मोहपाश में फंसने को तैयार हैं :पहला, आतंकियों पर पाकिस्तान का निरंतर प्रभाव उसे एक कीमती मित्र बनाता है। हाल ही में, पाकिस्तान ने मोहम्मद शरीफुल्लाह ‘जफ़र’ सहित इस्लामिक स्टेट के पांच लड़ाके अमेरिकियों को सौंपे, जो 2021 में काबुल हवाई अड्डे के पास बम हमले में शामिल थे, जिसमें 13 अमेरिकी सैनिक मारे गए थे। तथ्य तो यह कि भले ही ‘जफ़र’ इस काबुल हमले का मास्टरमाइंड रहा हो, लेकिन वह आईएस के शीर्ष नेतृत्व में नहीं था। उसे सौंपकर मुनीर अपने लिए समय और प्रभाव खरीद रहे हैं- पाक की अमेरिका को लेकर रणनीति का अभिन्न अंग।

**ज्योति मल्होत्रा**

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के खिलाफ़ भारत द्वारा की गई सैन्य कार्रवाई के औचित्य को समझाने के वास्ते पिछले दो हफ्.तों में 40 से ज़्यादा भारतीय राजनेताओं और पूर्व राजनयिकों से बने सात प्रतिनिधिमंडल 33 देशों में भेजे गए, लेकिन गत 14 जून को वाशिंगटन डीसी में अमेरिकी सेना की 250वीं वर्षगांठ पर आयोजित परेड में भाग लेने के लिए पाकिस्तान के सेना प्रमुख और अब फील्ड मार्शल जनरल असीम मुनीर को आमंत्रित किया गया। इस बार की परेड में कुछ पुराना फौजी साजो-सामान 1991 के बाद पहली बार दिखा- 6,600 सैनिक, 28 अब्राम टैंक, 28 ब्रैडली लड़ाकू वाहन, 28 स्ट्राइकर वाहन, चार पैलाडिन सेल्फ-प्रोपेल्ड हॉवित्ज़र तोपें, आठ मार्चिंग बैंड, 24 घोड़े, दो खच्चर और एक कुत्ता झ्र कुछ रॉकेट लॉन्चर और प्रिसिजन-गाइडेड मिसाइलें भी। इस रोज़ डोनॉल्ड ट्रंप का 79वां जन्मदिन भी था। इस बीच, सांसदों के सभी सातों प्रतिनिधिमंडल स्वदेश लौट आए और उन्होंने प्रधानमंत्री से मुलाकात की। लंदन, पेरिस, रोम, कोपेनहेगन, बर्लिन और ब्रसेल्स में यूरोपीय संघ के मुख्यालय की यात्रा पर गए भाजपा के रविशंकर प्रसाद ने लौटने पर संवाददाताओं से कहा कि उन्होंने और उनके सहयोगियों ने इन सभी यूरोपीय शहरों में अपने वार्ताकारों को आतंकवाद के प्रति भारत की ‘ज़ीरो टॉलरेंस’ बारे बताया। प्रसाद ने कहा : ‘हमने साफ कर दिया कि हम पाकिस्तान के लोगों के खिलाफ नहीं। समस्या पाकिस्तान के जनरलों से है, जिनसे खुद वहां के लोग भी तंग आ चुके हैं।’ लगता है प्रसाद खबरों को ध्यान से नहीं पढ़ रहे हैं। दो दिन पहले ही वाशिंगटन डीसी में, यूएस सेंट्रल कमांड के शक्तिशाली कमांडर जनरल माइकल ई कुरिल्ला ने यूएस सीनेट सशस्त्र सेवाएं समिति को बताया कि पाकिस्तान एक ‘खास साझेदार’ है, खासकर आतंकवाद विरोधी मोर्चे पर। कुरिल्ला ने आगे कहा, ‘मुझे नहीं लगता कि यह कोई बाइनरी स्विच जैसा होना चाहिए कि यदि हम भारत के साथ संबंध रखें, तब हमें पाकिस्तान के साथ (संबंध) नहीं रखने चाहिए।’ इससे कुछ दिन

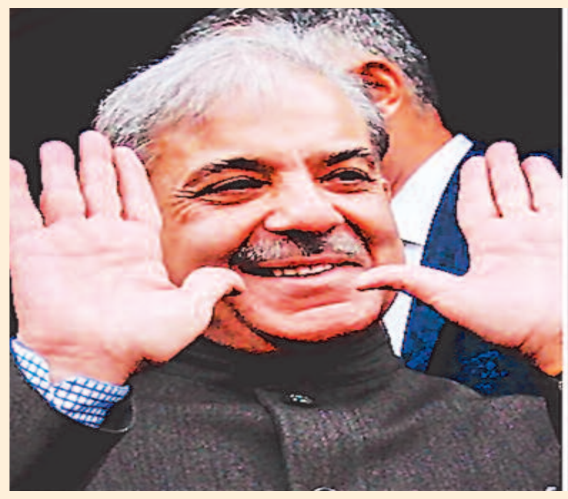

पहले, कुरिल्ला के बॉस, डोनॉल्ड ट्रम्प ने भी घोषणा की थी, ‘पाकिस्तान के पास बहुत मजबूत नेतृत्व है। कुछ लोगों को यह नागवार लगता है जब मैं ऐसा कहता हूं, लेकिन हुआ यही है, और उन्होंने उस युद्ध को रोक दिया। मुझे उन पर बहुत गर्व है। क्या मुझे श्रेय मिल रहा है? नहीं। वे मुझे किसी भी चीज़ का श्रेय नहीं दे रहे। तब भारत और अमेरिका के बीच प्रसिद्ध ‘रणनीतिक साझेदारी’ का क्या बना? इसके अलावा, क्या भारत और पाकिस्तान के बीच हमें सख्त नापसंद ‘हाइफ़नेशन’ (दोनों को बराबर पलड़े में तोलना) फिर से बन गया है? बड़ा सवाल, बेशक, यह कि दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश अभी भी ऐसे मुल्क के मोहपाश में क्यों फंसा है, जिसकी अर्थव्यवस्था गहरे संकट में है (आईएमएफ से 25 ऋण ले रखे हैं), जो कहने भर का लोकतंत्र है और भारत में आतंकी हमलों का मास्टरमाइंड बना हुआ है, जिसमें नवीनतम कांड पहलगाम में हुआ दुर्दांत हमला है। निश्चित रूप से, काली दाल में फिर कड़छी चल रही है। कम-से-कम 2008 के बाद से, जब भारत और अमेरिका ने परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए थे, जहां अमेरिकी भारत के साथ साझेदारी के लिए उत्सुक रहे वहीं ऐसे ही भारतीय भी। यह सिर्फ इस बारे नहीं था कि भारत कितने बोइंग विमान खरीदेगा, हालांकि इससे रिश्तों में मदद मिल सकती थी। अमेरिका ने व्यापारिक आदान-प्रदान पर टिकी साझेदारी से परे वास्तविक संबंध की कीमत को पहचाना, जिसमें भारत को चीन के प्रति-संतुलन के रूप में देखा जाने लगा। लेकिन ट्रम्प ने आपसी व्यापार में लेन-देन में बराबरी रखने की अपनी प्रवृत्ति के साथ दुनिया में उलटफेर कर दिया। पाकिस्तान को एक नयी राह की तरह देखा जाने लगा है। हिलेरी क्लिंटन ने 2012 में पाकिस्तान को लेकर दुविधा को बहुत भावुकता से व्यक्त किया था ‘बात यह नहीं कि आपने पिछवाड़े में कितने सांप पाल रखे हैं, और क्या वे आपको नहीं डंस सकते’। एक बार फिर मामला है कि आप अमेरिकियों को एक-दो सांप ऐसे सौंप दें कि वे आपकी सपेरागिरी के कायल हो जाएं। यहां तीन कारण हो सकते हैं कि क्यों पश्चिमी देश पाकिस्तान के मोहपाश में फंसने को तैयार हैं :पहला, आतंकियों पर पाकिस्तान का निरंतर प्रभाव उसे एक कीमती मित्र बनाता है। हाल ही में, पाकिस्तान ने मोहम्मद शरीफुल्लाह ‘जफ़र’ सहित इस्लामिक स्टेट के पांच लड़ाके अमेरिकियों को सौंपे, जो 2021 में काबुल हवाई अड्डे के पास बम हमले में शामिल थे, जिसमें 13 अमेरिकी सैनिक मारे गए थे। तथ्य तो यह कि भले ही ‘जफ़र’ इस काबुल हमले का मास्टरमाइंड रहा हो, लेकिन वह आईएस के शीर्ष नेतृत्व में नहीं था। उसे सौंपकर मुनीर अपने लिए समय और प्रभाव खरीद रहे हैं- पाक की अमेरिका को लेकर रणनीति का अभिन्न अंग, जो दशकों कारगर रहा। कुरिल्ला द्वारा पाकिस्तान की प्रशंसा के तुरंत बाद, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की दो प्रमुख समितियों में पाकिस्तान को अहम ओहदों पर को नामित किया गया- तालिबान पर प्रतिबंध समिति की अध्यक्षता और आतंकवाद विरोधी समिति का उपाध्यक्ष। जब अमेरिका को अहसास हो गया है कि पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठान की उपयोगिता भले कामों में बरतने की अपेक्षा नुकसान पहुंचाने वालों से निबटने में कहीं अधिक है, तो क्यों न राक्षस को कुछ-कुछ निवाला डालते रहें ताकि वह काबू में रहे? दूसरा, जब कोई ट्रंप को ना कह दे या बात काटे, तो यह उनके बेहद अहंकारी स्वभाव को रास नहीं आता। इसलिए जब उन्होंने और उनके सहयोगियों ने 10 मई को भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम के लिए ‘मध्यस्थता’ करने की घोषणा की, तब भारत ने यह बात नकार दी ट्रंप यह बात 12 बार और दोहरा चुके हैं)। हकीकत यह कि भारतीय वायु सेना ने 10 मई को 11 पाकिस्तानी हवाई अड्डों पर हमला करके करारा संदेश दिया, जिसने पाकिस्तानियों और अमेरिकियों, दोनों में, ‘ईश्वरीय भय’ पैदा कर दिया, और संघर्ष जल्द खत्म हो गया। ट्रंप जो भी कहें, उसे नकारने की जहमत क्यों उठाएं? तीसरा, पाकिस्तान खुद को पीड़ित दिखाने में माहिर है, यह कोई छोटी विडंबना नहीं। भारत को घिनौनी रंगत देने वाले अभियान को आगे बढ़ाकर कि ‘भारत सिंधु नदी के पानी को रोक 23 करोड़ लोगों को प्यासा मारना चाहता है’), वह वैश्विक सहानुभूति पाने की कोशिश में है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद वाशिंगटन व लंदन में बिलावल भुट्टो की मुहिम का उद्देश्य यही था। आतंकी हमलों में पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठान की भूमिका बारे सवालों को इस प्रश्न से दरकिनार कर दिया जाता है कि ‘सबूत कहां है?’ पाकिस्तान आतंकवाद के साथ अपने अनुभवों की तुलना मुंबई आतंकी हमले में अजमल कसाब जैसा ठोस सबूत पाने से करना चाहता है, जिसमें लगभग 170 लोग मारे गए थे। अमेरिका की सहानुभूति दिख रही है। जनरल कुरिल्ला ने कहा कि 2024 में पाकिस्तान को करीब 1,000 आतंकी हमले सहने पड़े, जिसमें 700 सुरक्षाकर्मी मारे गए और 2,500 घायल हुए। सवाल है कि अब आगे क्या। जनरल मुनीर ने अमेरिकियों को शीशे में उतार लिया है, लिहाजा अमेरिकी सेना की परेड में उनकी उपस्थिति, उन्हें कुछ मांगें और करने का मौका देगी। पाक-अमेरिका व्यापार में शून्य-टैरिफ का अनुरोध किया जाएगा; इससे भी महत्वपूर्ण है कि यह सुझाव दिया जाएगा कि अमेरिका भारत पर सिंधु जल संधि बहाल करने और वार्ता फिर से शुरू करने को दबाव डाले। ग्रीष्म ऋतु आगे लंबी और कठिन होने वाली है। हो सकता है भारत के पास कुछ पत्ते हों, लेकिन उसे यह सीखना होगा कि उन्हें सीने से लगाकर न रखे। पाकिस्तान की बेईमानी बारे अपना आकलन साझा करें, लेकिन इस बात पर घमंड न करे कि वह बड़ा और बेहतर दक्षिण एशियाई राष्ट्र है। बेहतर होगा कि अपने अंदर झांकें और अपने चाणक्य या फिर सन त्ज़ु को फिर पढ़ें। जिनके मुताबिक ‘अपने दोस्तों को हमेशा करीब रखना अच्छा विचार है, लेकिन दुश्मनों को और भी नज़दीक रखें।

**लेखिका ‘द ट्रिब्यून’ की प्रधान संपादक हैं**

## संपादकीय

# दिल्ली में स्कूल फीस पर कानून का शिकंजा

दिल्ली के निजी विद्यालयों में मनमाने तरीके से शुल्क बढ़ाए जाने पर सवाल उठते रहे हैं। अभी हाल ही में द्वारका में कई अभिभावकों ने सरकार की अनुमति के बिना एक विद्यालय पर शुल्क बढ़ोतरी का आरोप लगाया था। साथ ही दावा किया था कि बच्चों और उनके माता-पिता पर दबाव बनाने के लिए कुछ स्कूलों में अतिरिक्त कर्मी तैनात किए जाते हैं। निजी विद्यालयों की निरंकुशता का मुद्दा अदालतों में भी उठता रहा है। ऐसा भी नहीं कि शिक्षा निदेशालय को वस्तुस्थिति मालूम न हो। सवाल यह है कि निजी विद्यालयों को मनमानी करने की छूट किसने दी? कौन लोग हैं जो इन्हें अब तक शह देते रहे हैं? लगातार शिकायतें मिलने पर दिल्ली सरकार ने हाल ही में विधानसभा में दिल्ली स्कूल शिक्षा (पारदर्शिता निर्धारण और शुल्क विनियमन-2025) विधेयक पारित करने का निर्णय किया था, मगर किन्हीं कारणों से यह पेश नहीं किया जा सका था। सरकार निजी विद्यालयों को अब जवाबदेह बनाना चाहती है अब इस विधेयक को अध्यादेश के जरिए लागू करने का दिल्ली मंत्रिमंडल का फैसला एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इससे शुल्क प्रणाली में पारदर्शिता आएगी और अभिभावकों को भी बड़ी राहत मिलेगी। निजी विद्यालयों को अब जवाबदेह बनना होगा। वे अभिभावकों पर मनमाने तरीके से आर्थिक बोझ नहीं डाल सकेंगे।अब दिल्ली के निजी स्कूल नहीं वसूल पाएंगे मनमानी फीस, पेरेंट्स को मिलेगा लाभ; रेखा गुप्ता सरकार ने लिया बड़ा फैसला हैरत की बात तो यह है कि निजी विद्यालयों में शिक्षा शुल्क के अतिरिक्त अन्य मदों में राशि जोड़कर कई वर्षों से वसूली की जाती रही है। विकास शुल्क के नाम पर अभिभावकों पर दबाव बनाया जाता है। मगर, अब इस पर रोक लग सकेगी। गौरतलब है कि इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने मनमाना शुल्क बढ़ाने पर निजी विद्यालयों और दिल्ली शिक्षा निदेशालय को नोटिस जारी किए थे। इसमें दोराय नहीं कि बार-बार शुल्क बढ़ाए जाने से गरीब और मध्यवर्गीय परिवारों पर नाहक ही आर्थिक बोझ पड़ता है। नया अध्यादेश लागू होने के बाद निजी विद्यालय निर्धारित सीमा से अधिक शुल्क नहीं वसूल सकेंगे। इस अध्यादेश में ऐसे कई प्रावधान हैं, जिनसे अभिभावकों को चिंता से मुक्ति मिलेगी। शुल्क के नाम पर विद्यार्थियों को परेशान किए जाने पर पचास हजार के जुर्माने का प्रावधान निस्संदेह सरकार का सख्त कदम है।

# युद्धविराम के बाद भी सीमा पर आबादी डर और दहशत के साये में

**हारून रेशी**

जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा पर रहने वाली आबादी पर आफत टूट पड़ी है, प्रभावित इलाकों में अभी भी मातम पसरा है, हर आंख नम है और हर दिल गमगीन है। एक महीने से ज्यादा का समय बीत चुका है, लेकिन नियंत्रण रेखा पर गोलाबारी से प्रभावित इलाक़ों में तबाही के निशान अभी भी साफ़ दिखाई दे रहे हैं। पीड़ितों के चेहरों पर अभी भी डर और दहशत के साये दिखाई दे रहे हैं। नेता प्रतिपक्ष सुनील शर्मा के नेतृत्व में कई विधायकों के दल द्वारा सीमावर्ती इलाकों के दस दिवसीय दौरे के बाद सरकार को सौंपी गई विस्तृत रिपोर्ट के अनुसार घाटी के कुपवाड़ा और बारामुल्ला तथा जम्मू के पोख और राजौरी इलाकों में सीमा पार से गोलाबारी के कारण कम से कम दो हजार रिहायशी मकान और अन्य ढांचे क्षतिग्रस्त हुए हैं। अंधाधुंध गोलाबारी में रिहायशी मकान, दुकानें, पूजा स्थल, स्कूल भवन और कई वाहन भी तबाह हो गए। सबसे भयावह 7 मई से 10 मई तक के चार दिन थे। यानी ऑपरेशन सिंदूर की शुरुआत से लेकर दोनों देशों द्वारा युद्ध विराम की घोषणा तक, चारों जिलों की सीमावर्ती आबादी तबाह हो गई थी। अकेले पुंछ जिले में दो महिलाओं और चार बच्चों समेत अठारह लोगों की जान चली गई। मरने वालों में सैंतालीस वर्षीय रमीज खान के बारह वर्षीय जुड़वां बच्चे जैन अली और उर्वा फातिमा भी शामिल थे। रमीज खुद घायल होने के कारण जम्मू के एक अस्पताल में लेटे थे। सीमा पार से दागे गए मोर्टार शेल के टुकड़े उनके लीवर और पसलियों में धंस गए थे। 7 मई की सुबह सीमा पार से दागा गया एक गोला उनके घर के पिछले हिस्से पर लगा। उनके दोनों बच्चों की मौक़े पर ही मौत हो

गई। ऐसी ही दर्दनाक कहानियां कई अन्य पीड़ितों की सुनने को मिलती हैं। किसी ने अपनों को खोया तो किसी ने अपना घर। प्रभावित इलाकों में अभी भी मातम का माहौल है। कुपवाड़ा के करनाह सेक्टर के निवासी मंजूर अहमद को ऐसा लग रहा है जैसे उनकी दुनिया ही उलट गई हो। वह मजदूर हैं और उनके दो बेटे भी मजदूरी करते हैं। सात मई की आधी रात को उनके घर पर गोलाबारी हुई। घर तो तबाह हो ही गया, साथ ही गोशाला भी नष्ट हो गई और उनकी दो गायें मर गईं। रकीम से फोन पर बातचीत के दौरान उनके शब्द दिल दहला देने वाले थे, 'मेरा पुश्तैनी घर 2005 के भूकंप में तबाह हो गया था। उसके बाद मुझे यह नया घर बनाने में बीस साल लग गए। अब मेरा यह तीन कमरों का घर हाल ही में बनकर तैयार हुआ था। जब भूकंप में मेरा घर गिरा, उस समय मेरे दोनों बच्चे छोटे थे, लेकिन मैंने हालात का सामना करने की हिम्मत रखी। मैंने सालों मेहनत की और आखिरकार नया घर बना लिया, लेकिन अब नया घर बनाना मेरे बस की बात नहीं है। छोटी-मोटी कयामत ऐसी ही होती है। नियंत्रण रेखा पर गोलाबारी मूल रूप से पहलगाम में आतंकी घटना के बाद शुरू हुई थी, लेकिन सात मई से दस मई तक इसकी तीव्रता असाधारण रही। सबसे ज़्यादा तबाही इन्हीं चार दिनों में हुई। इस स्थिति के दौरान सीमा के नज़दीक रहने वाले सैकड़ों परिवार पलायन भी कर गए। ये लोग गोलाबारी के दौरान अपने घर, खेत और यहां तक कि जानवर भी छोड़कर भाग गए थे। बारामूला के उरी इलाके में भी इसी तरह का पलायन एक परिवार के लिए आफत लेकर आया। यह परिवार अपनी कार से सुरक्षित इलाके की ओर भाग रहा था, तभी घर से कुछ किलोमीटर दूर सीमा पार से दागा गया गोला उनकी कार से टकराया, जिसमें गृहिणी नरगिस बानो की मौत हो गई और परिवार के दो सदस्य घायल हो गए। अब ज्यादातर लोग लौट आए हैं, लेकिन उनके सामने कई परेशानियां हैं। शायद उनकी सबसे बड़ी समस्या मोर्टार के गोले हैं, जो बिना फटे रह गए हैं। हालांकि सेना ने बड़े अभियान के तहत इनमें से ज्यादातर गोले बरामद कर उन्हें बेकार कर दिया है, लेकिन ऐसी स्थिति में हमेशा यह आशंका बनी रहती है कि किसी खेत या घर की छत आदि पर कोई गोला बिना फटा रह गया हो। पहले भी कई बार ऐसे गोले बाद में फट चुके हैं और कई लोगों की जान जा चुकी है। ऐसा भी नहीं है कि जम्मू-कश्मीर में सीमा पर रहने वाली आबादी को आज पहली बार ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा हो। वे गोलियों की गड़गड़ाहट और गोलाबारी की गूंज में रहे हैं। उन्होंने पिछले आठ दशकों में भारत और पाकिस्तान के बीच कई युद्ध देखे और झेले हैं। पिछले पैंतीस वर्षों में हजारों सशस्त्र झड़पें देखीं। वे एक जैसे हालात में रहे। वे मरते रहे और अपनी जान के लिए संघर्ष करते रहे। जब भी भारत और पाकिस्तान की सेना ने एक-दूसरे पर गोलियां चलाईं, तो सीमा पर रहने वाले लोगों पर आफत आ गई। 2003 में जब तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और पाकिस्तानी राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ ने नियंत्रण रेखा पर संघर्ष विराम समझौते पर हस्ताक्षर किए, तो सीमा पर रहने वाले लोगों ने पहली बार राहत की सांस ली थी। यह राहत लंबे समय तक चलने वाली साबित हुई। हालांकि, 2019 में जब मोदी सरकार ने एकतरफा तरीके से संसदीय अधिनियम के जरिए जम्मू-कश्मीर का विशेष संवैधानिक दर्जा खत्म कर दिया और उसका राज्य का दर्जा छीनकर उसे दो केंद्र शासित प्रदेशों में बांट दिया, तो दोनों देशों के बीच दुश्मनी फिर से शुरू हो गई और इसके साथ ही सीमाओं पर गोलाबारी फिर से शुरू हो गई। जाहिर है, इस साल 10 मई को दोनों देशों के बीच युद्ध विराम की घोषणा की गई, लेकिन यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि यह लंबे समय तक चलने वाला साबित होगा या नहीं।

# केरल के सम्पूर्ण डिजिटल साक्षरता मॉडल को पूरे भारत में अपनाने की जरूरत

**प्रो. मिलिंद कुमार शर्मा**

भारत एक विशाल और विविधताओं से सम्पन्न राष्ट्र है, जो तीव्रता से डिजिटल युग की ओर कदम बढ़ा रहा है। सरकार द्वारा चलाए जा रहे ‘डिजिटल इंडिया’ जैसे अभियान भारत को तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास कर रहे हैं। यद्यपि, आज भी देश के अधिकांश ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता की कमी एक बड़ी बाधा बनी हुई है तथापि केरल राज्य ने सम्पूर्ण डिजिटल साक्षरता प्राप्त कर इस दिशा में एक अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया है। यद्यपि इसकी अभी आधिकारिक घोषणा होना शेष है फिर भी यह उल्लेखनीय है कि इस अभियान में केरल राज्य ने लगभग 21 लाख लोगों को डिजिटल साक्षर किया है। यह उपलब्धि न मात्र तकनीकी दृष्टि से अपितु सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक और शैक्षिक दृष्टिकोण से भी अहम है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि यदि केरल राज्य का यह मॉडल पूरे भारत में लागू किया जा सके तो इसके दूरगामी परिणाम दिखाई दे सकते हैं और हमारे विकसित भारत के स्वप्न को पंख लगा सकते हैं। केरल ने डिजिटल साक्षरता को एक व्यापक और समावेशी अभियान के रूप में लिया, जिसमें समाज के हर वर्ग को सम्मिलित किया गया। स्वयं सहायता समूह द्वारा प्रारंभ किए गए इस कार्य की शुरुआत ‘डिजी केरल’ परियोजना से हुई, जो देश की पहली ग्रामीण डिजिटल साक्षरता योजना कही जा सकती है। इस योजना के अंतर्गत राज्य भर में 21 लाख से अधिक डिजिटल असाक्षर नागरिकों की पहचान कर उनको कंप्यूटर, इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं का सफल प्रशिक्षण दिया गया। यह रेखांकित करना उचित होगा कि राज्य का यह भागीरथी प्रयास के जरिए न केवल राज्य के कोने कोने में डिजिटल शिक्षा प्रदान की जा रही है, अपितु सरकार की ई-गवर्नेंस सेवाओं को भी आम जनता तक पहुंचाने में सार्थक योगदान कर रहे हैं। इस अभियान की एक और विशेषता यह है कि इसमें महिलाओं की भागीदारी को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया गया। कुदुम्बश्री जैसे महिला सशक्तीकरण समूहों को डिजिटल प्रशिक्षण देकर उन्हें उनके समुदायों में डिजिटल साक्षरता फैलाने का दायित्व सौंपा गया। इससे न केवल तकनीकी ज्ञान का प्रसार हुआ, अपितु महिलाओं की सामाजिक भूमिका भी सुदृढ़ हुई। इसके अतिरिक्त, केरल ने यह भी सुनिश्चित किया कि हर आयु वर्ग के लोगों को यह ज्ञान व कौशल प्राप्त हो-चाहे वह विद्यार्थी हो, गृहिणी हो, मनरेगा कामगार हो, कृषि से जुड़े युवा हो या बुजुर्ग। केरल की इस सफलता का सबसे बड़ा कारण उसकी उच्च साक्षरता दर और शिक्षा प्रणाली में तकनीक की पहले से उपस्थित स्वीकार्यता है। निसंदेह राज्य सरकार की राजनीतिक इच्छाशक्ति भी इस अभियान को गति देने में प्रमुख भूमिका निभाई है। इसके अतिरिक्त, सामाजिक भागीदारी और तकनीकी ढांचे की सुगमता से उपलब्धता ने इस अभियान को जन आंदोलन का

स्वरूप दे दिया। स्थानीय निकायों और स्वयंसेवी संगठनों ने भी इस प्रयास में उत्साहपूर्वक भाग लिया। अब प्रश्न यह है कि इस मॉडल को पूरे भारत में कैसे लागू किया जा सकता है। भारत जैसे विविधता प्रधान देश में किसी एक मॉडल को सीधे लागू करना न तो संभव होगा न ही उचित होगा। अतः सवर्प्रथम प्रत्येक राज्य को अपनी स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार इस मॉडल को ढालना होगा। कुछ राज्यों में भौगोलिक बाधाएं हैं तो कुछ में सामाजिक-पारिवारिक रूढियां। इन सभी को ध्यान में रखकर डिजिटल शिक्षा कार्यक्रमों को तैयार करना होगा। ग्रामीण भारत में इंटरनेट की पहुंच अब भी सीमित है, इसलिए डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को और सशक्त करना आवश्यक है। भारतनेट जैसी योजनाओं को तेज गति से क्रियान्वित करना होगा, जिससे हर पंचायत स्तर पर ब्रॉडबैंड सुविधा सरलता से उपलब्ध हो सके। इसके साथ ही, हर जिले और ब्लॉक में स्थानीय डिजिटल प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना की जानी चाहिए। डिजिटल साक्षरता को बढ़ाने के लिए महिलाओं, युवाओं और किसानों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। विशेषकर महिला स्वयं सहायता समूहों और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करके उन्हें अपने समुदायों में प्रशिक्षण कार्य में लगाया जा सकता है। इससे समाज में डिजिटल जागरूकता का वातावरण बनेगा और तकनीक का समावेश तेजी से होगा। शिक्षण संस्थानों की सक्रिय भागीधारी इस अभियान में क्रांतिकारी सिद्ध हो सकती है। स्थानीय तकनीकी संस्थान अपने विधार्थियों को समय समय पर आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षण के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इससे युवा विद्या?थयों को अपने सामाजिक दायित्व निवर्हन का भी भान हो सकेगा। सरकार को निजी संस्थानों और गैर-सरकारी संगठनों के साथ मिलकर सार्वजनिक-निजी भागीदारी के अंतर्गत इस अभियान को सफल करने के लिए नित नवाचार करने के प्रबल प्रयास करने होंगे। निजी क्षेत्र तकनीकी कौशल, ज्ञान, सामग्री और संसाधनों के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इसके अतिरिक्त, यह नितांत आवश्यक कि है डिजिटल साक्षरता की सामग्री व संसाधन स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध हो, जिससे आम नागरिक उसे सहजता से उसे समझ व प्रयोग कर सकें। इन प्रयासों के मध्य यह भी आवश्यक है कि कार्यान्वयन की निगरानी और मूल्यांकन की सुदृढ़ व्यवस्था बनाई जाए। यदि किसी राज्य में यह योजना अपेक्षाकृत धीमी गति से आगे बढ़ रही हो तो समय रहते सुधारात्मक कदम उठाने के लिए प्रयास करने होंगे। यही नहीं, लोगों की सामाजिक मानसिकता में भी परिवर्तन लाने की आवश्यकता है जिससे वे तकनीक को सुगमता से स्वीकार कर सके। इस प्रयास में कुछ चुनौतियां अवश्य होंगी। कुछ राज्य संसाधनों की कमी से जूझ सकते हैं, तो कहीं तकनीकी प्रशिक्षकों की उपलब्धता एक समस्या हो सकती है। अनेक समुदायों में बुजुर्गों और रूढ़िवादी सोच के चलते तकनीक अपनाने में कठिनाई हो सकती है। परन्तु सरकार, समाज, निजी और अन्य हितधारक इस क्षेत्र में मिलकर योजनाबद्ध तरीके से कार्य करें, तो यह कार्य असंभव भी नहीं है। अंततः कहा जा सकता है कि केरल का डिजिटल साक्षरता मॉडल भारत के लिए एक आदर्श उदाहरण है। यह न केवल तकनीकी दृष्टि से अपितु सामाजिक समावेशन के स्तर पर भी अत्यंत प्रभावशाली व लाभकारी है। भारत के ‘डिजिटल इंडिया’ स्वप्न को मूर्त रूप देना है तो अन्य राज्यों को केरल से सीख लेकर, स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार योजनाओं को ढालकर, और समाज के प्रत्येक वर्ग की भागीधारी से डिजिटल साक्षरता के इस आंदोलन का पूरे देश में प्रचार प्रसार करना होगा। तभी भारत एक सशक्त और समावेशी डिजिटल राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ सकेगा।

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक व संपादक **सरोज चौधरी** द्वारा ई-37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित तथा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस लालगुटवा रांची से मुद्रित, **संस्थापक संपादक : स्व. राधाकृष्ण चौधरी, प्रबंध संपादक अरूण कुमार चौधरी * फोन :** 9471170557/08084674042, **ई-मेल :** aadivashiexpress@gmail.com

## संक्षिप्त समाचार

### वन विभाग की बड़ी कार्रवाई: 17 बोटा सखुआ लकड़ी के साथ पिकअप वैन जब्त

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam**
**साहिबगंज।** वन विभाग साहिबगंज द्वारा अवैध लकड़ी तस्करी के विरुद्ध एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया गया। गुप्त सूचना के आधार पर रविवार रात्रि गश्ती के दौरान वन विभाग की टीम ने एक पिकअप वैन को 17 बोटा सखुआ लकड़ी के साथ जब्त कीया ।
वाहन को साहिबगंज आईटीआई कॉलेज के पास रोका गया, जहाँ पर उक्त लकड़ियाँ बिना वैध दस्तावेज के लदी हुई पाई गईं। यह कार्रवाई उपवन परिसर पदाधिकारी श्री अंकित झा के नेतृत्व में की गई।
वहीं वन प्रमंडल पदाधिकारी श्री प्रबल गर्ग ने कहा, ÷वन विभाग प्राकृतिक संपदा की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। लकड़ी की अवैध तस्करी करने वालों को किसी भी स्थिति में बख्शा नहीं जाएगा। ऐसी गतिविधियों पर कठोर कार्रवाई जारी रहेगी।
इस कार्रवाई में उपवन परिसर पदाधिकारी श्री अंकित झा के साथ गृह रक्षक चंदन कुमार, एवं अन्य वनकर्मी भी मौजूद रहे।

### जल मीनार से पानी सप्लाई की पाइप की स्थिति जर्जर , कई जगह हो रहा है पानी बर्बाद

**बड़कागांव संजय कुमार**
**बड़कागांव।** प्रखंड अंतर्गत चंदौल पंचायत के पुन्दोल गांव में संजय पासवान के घर के पास 2023-24 में लाखों रुपया खर्च से पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल हजारीबाग जल जीवन मिशन के तहत्, सोलर आधारित लघुग्रामीण जल पूर्ति योजना हेतु जल मीनार का निर्माण संवेदक लोक इंटरप्राइजेज के द्वारा कराया गया है। जल मीनार में निरंतर पानी तो चढ़ रहा है परंतु महज 2-4 घर को ही पानी सप्लाई हो पा रहा है। जबकि 30 से 35 घरों को पानी सप्लाई करना था। जिसे लेकर घर-घर नल भी लगाया गया है। परंतु अंडरग्राउंड पाइप कई जगह टूट गए हैं जिसके कारण पानी बाहर निकल कर बर्बाद हो जा रहा है। और कई जगह जमीन के अंदर ही पाइप दब गया है जिसके कारण पानी की सप्लाई आगे नहीं हो पा रहा है। जिसके कारण ग्रामीणों को पेयजल की घोर समस्या से जूझना पड़ रहा है। मामले को लेकर चंदौल पंचायत के उप मुखिया शमशेर अंसारी ने कहा कि जल निर्माण बने हुए महज 2 वर्ष हुए हैं। और खराब हुए 1 साल हो गए हैं। मात्र दो-चार घर में हीं पानी सप्लाई हो पा रहा है। संवेदक को कई बार बोलने के बाद भी ध्यान नहीं दे रहा है। जबकि जल मीनार का रख रखाव के लिए 5 वर्षों तक बेहतर ढंग से निरंतर संचालन के लिए संवेदक की जिम्मेवारी होती है। कहीं टूट-फूट हो, पाइप की मरमती हो इन सभी की जिम्मेवारी मरम्मत कराना संवेदक को करना होता है। जल्द मरम्मत नहीं हुआ और घर-घर पानी नहीं पहुंचा तो हम ग्रामीण डीसी से मिलकर शिकायत करेंगे।

### राष्ट्रीय तेली साहु महासंगठन का प्रखंड कमेटी का पुनर्गठन

- पदुम साव जिला मंत्री, जानकी साव अध्यक्ष, व महासचिव बने डुभन साव

**बड़कागांव संवाददाता**
**बड़कागांव।** राष्ट्रीय तेली साहु महासंगठन का प्रखंड कमेटी का विस्तार रुकमणी भवन बड़कागांव में जिला अध्यक्ष कैलाश साव की अध्यक्षता व युवा जिला अध्यक्ष अरविंद कुमार के संचालन में किया गया। कार्यक्रम में बातौर मुख्य अतिथि संगठन के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष हरिनाथ साव , विशिष्ट अतिथि प्रमोद साव रांची जिला अध्यक्ष, हजारीबाग जिला अध्यक्ष कैलाश साव ,जिला उपाध्यक्ष अशोक साव,युवा अध्यक्ष अरविंद कुमार व अन्य अतिथियों को फूलमाला पहनाकर स्वागत किया गया । तत्पश्चात प्रखंड कमेटी का पुनर्गठन के लिए अध्यक्ष पद के पदूम साव,जानकी साव, दिनेश साव तीन व्यक्ति का नाम आया जिसमें दो लोगों ने स्वेच्छा से नाम वापस लिया और सर्वसम्मति से जानकी साव को अध्यक्ष,डुभन साव महासचिव,सचिव मुकेश कुमार साव,प्रखंड युवा अध्यक्ष मिथलेश कुमार साव, वहीं जिला मंत्री पदूम साव ,युवा जिला उपाध्यक्ष दिनेश कुमार साव उर्फ दिपू साव को नियुक्त किया गया ।
वहीं अतिथियों ने नवनिर्वाचित सदस्यों को माला पहनाकर स्वागत किया। इस मौके पर जिला संरक्षक कौलेश्वर साव,अखिल भारतीय तैलिक साहु समाज के प्रखंड अध्यक्ष जगतनंदन प्रसाद गुप्ता,पुर्व अध्यक्ष धनू प्रसाद निराला, प्रखंड उपाध्यक्ष मोहन साव,कोषाध्यक्ष निरंजन साव, बेचन साव, दिनेश साव, मिथलेश कुमार साव,विनय साव, मुखिया प्रतिनिधि राजकुमार साव ,प्रेम साव, राजकिशोर साव,कोमलचंद साव,कजरु साव,बाबुलाल साव,व अन्य दर्जनों समाज के बुद्धिजीवी गण मौजूद थे।

# बरहेट प्रखंड में 10 दिवसीय मेगा मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर का हुआ शुभारंभ

**उपायुक्त हेमंत सती और पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह ने किया उद्घाटन**

**अजय कुमार कुशवाहा**
**आदिवासी एक्सप्रेस जिला ब्यूरो**
बरहेट प्रखंड स्थित +2 राज्य संपोषित दामिन उच्च विद्यालय परिसर आज दस दिवसीय मेगा मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर का शुभारंभ किया गया। इस विशेष शिविर का उद्घाटन जिला दंडाधिकारी-सह-उपायुक्त हेमंत सती एवं पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से किया। इस शिविर का आयोजन जिला प्रशासन साहिबगंज, स्वास्थ्य विभाग एवं चेन्नई स्थित शंकर नेत्रालय के सहयोग से किया जा रहा है, जिसमें निन्शुल्क नेत्र जाँच और मोतियाबिंद ऑपरेशन की सुविधा दी जा रही है।

इस अवसर पर उपायुक्त हेमंत सती ने कहा कि यह विशेष शिविर जिले के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले उन लोगों के लिए एक सुनहरा अवसर है, जो आंखों की समस्याओं से जूझ रहे हैं लेकिन संसाधनों के अभाव में उपचार नहीं करवा पा रहे हैं। नेत्र स्वास्थ्य हमारे जीवन की गुणवत्ता से जुड़ा हुआ विषय है और प्रशासन का प्रयास है कि जरूरतमंदों तक यह सेवा निःशुल्क और सुलभ रूप में पहुँचे। उन्होंने लोगों से अपील की कि इस अवसर से न चूकें और अनिवार्य रूप से आंखों की जांच कराएं।
पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह ने कहा कि अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग यह जान ही नहीं पाते कि उनकी आंखों में समस्या है। यह शिविर ऐसे लोगों के लिए वरदान साबित हो सकता है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इस शिविर की जानकारी अपने आसपास के लोगों को देनी चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसका लाभ उठा सकें।
शिविर की विस्तृत जानकारी देते हुए सिविल सर्जन प्रवीण कुमार संथालिया ने बताया कि देश के अग्रणी नेत्र चिकित्सा संस्थानों में से एक शंकर नेत्रालय, चेन्नई की विशेषज्ञ टीम इस शिविर में मौजूद है। उन्होंने बताया कि नेत्र जांच की प्रक्रिया 16 जून से 22 जून,2025 तक प्रतिदिन प्रातः 7:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक चलेगी। इसके पश्चात 20 जून से 24 जून,2025 के बीच मोतियाबिंद ऑपरेशन किए जाएंगे। समस्त प्रक्रिया पूर्णतः निन्शुल्क है, जिसमें ऑपरेशन, दवाएं एवं देखभाल की सुविधाएं शामिल हैं।
इस मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी अरविंद चोपड़ा, सामाजिक संस्था बॉक्सा ट्रस्ट के संस्थापक सहित अनेक स्वास्थ्यकर्मी, स्वयंसेवी और आमजन उपस्थित थे। बॉक्सा ट्रस्ट के प्रतिनिधियों ने बताया कि वे गांव-गांव जाकर प्रचार कर रहे हैं और लोगों को शिविर तक लाने में सहायता कर रहे हैं।
शिविर के पहले ही दिन 200 लोगों ने अपनी नेत्र जांच करवाई और कई लाभार्थियों ने भविष्य में ऑपरेशन के लिए पंजीकरण भी करवाया।
स्थानीय निवासी जो पिछले एक वर्ष से आंखों की समस्या से परेशान थे, ने बताया, ÷हमें लगा था कि ऑपरेशन के लिए शहर जाना पड़ेगा, लेकिन अब डॉक्टर खुद गांव आ गए हैं। यह हमारे लिए बहुत बड़ी राहत है। शिविर स्थल पर जिला प्रशासन द्वारा पेयजल, साफ-सफाई, बैठने की समुचित व्यवस्था की गई है। सुरक्षा व्यवस्था हेतु पुलिस बल की तैनाती की गई है।
कार्यक्रम के अंत में उपायुक्त श्री सती ने चिकित्सकों, तकनीकी स्टाफ एवं स्वयंसेवकों को सम्मानित करते हुए कहा कि इस तरह के शिविर ग्रामीण जनजीवन को बदलने की क्षमता रखते हैं। प्रशासन का लक्ष्य है कि जिले के हर नागरिक तक बुनियादी स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचे और सभी लोग स्वस्थ और सक्षम जीवन जी सकें।

## धरती आबा जनभागीदारी अभियान के तहत आधार कैम्प का आयोजन प्रारंभ

**आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता**
**साहिबगंज।** जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार के धरती आबा जनभागीदारी अभियान तथा महिला, बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में जिले में व्यापक स्तर पर आधार कैम्प का आयोजन प्रारंभ किया गया है। यह अभियान जिले के 08 प्रखंडों के 39 पंचायतों में आरंभ हो चुका है, जिसका विस्तार आगामी 16 जून 2025 से 11 अगस्त 2025 तक जिले के कुल 162 पंचायतों में किया जाएगा। प्रत्येक पंचायत में पाँच दिनों

तक चलने वाला यह कैम्प समाज के अंतिम व्यक्ति तक आधार पंजीकरण, सुधार एवं अपडेट की सुविधाएँ पहुँचाने हेतु समर्पित है। इसका उद्देश्य विशेष रूप से जनजातीय एवं हाशिए पर रह रहे समुदायों को सरकारी योजनाओं से जोड़ना है। इस अभियान को सफल बनाने हेतु जिला समाज कल्याण पदाधिकारी, पोस्टल बैंक मैनेजर एवं जिला परियोजना पदाधिकारी की उपस्थिति में सभी प्रखंडों के प्रखंड विकास पदाधिकारी, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी, महिला पर्यवेक्षिका एवं पंचायत सचिव समन्वय कर रहे हैं। कैम्प में नागरिकों को आधार सेवाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे उन्हें विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ समय पर प्राप्त हो सके। जिला प्रशासन का यह प्रयास 'सबका साथ, सबका विकास' की दिशा में एक सशक्त कदम है।

## पिकअप वाहन पर लदा कोल्ड ड्रिंक नीचे गिर पड़ा जिससे आसपास के कुछ लोग कोल्ड ड्रिंक लेकर भागते नजर आए

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam**
**साहिबगंज।** बरहेट सोमवार के अपराह्न बरहेट- बोरियो मुख्य सड़क में बाबूपुर गाँव के पास कोल्ड ड्रिंक से लदा एक पिकअप वाहन असंतुलित होकर पलट गया इस दौरान एक मोटरसाइकिल को क्षति पहुँची है। घटना में पिकअप वाहन पर लदा कोल्ड ड्रिंक नीचे गिर पड़ा जिससे आसपास के कुछ लोग कोल्ड ड्रिंक लेकर भागते नजर आए। वहीं जानकारी मिलने के बाद बरहेट थाना के सहायक अवर निरीक्षक अशोक सिंह दलबल के साथ मौके पर पहुंचे तथा आवश्यक कार्रवाई में जुट गए। घटना के संबंध में बताया गया कि बरहेट से बोरियो की ओर आ रहा बोलोरो पिकअप वाहन जेएच 01 सीएन 6618 और जितेंद्र कुमार दत्ता का एक होंडा साइन मोटरसाइकिल जेएच 18 डी 4507 जो पंचकठिया से बरहेट की ओर आ रहा था, जहां बाबूपुर गाँव के पास पिकअप वाहन का संतुलन बिगड़ जाने पर वाहन मोटरसाइकिल से टकरा गया जिसमें मोटरसाइकिल क्षतिग्रस्त हो गया और वाहन पलट गई। घटना के बाद पिकअप वाहन का चालक और उपचालक मौके से फरार हो गया। घटना में किसी के हताहत होने की कोई जानकारी नहीं मिली है।

## निषिद्ध मादक पदार्थों के दुरुपयोग के विरुद्ध सिदो-कान्हू स्टेडियम में युवाओं को किया गया जागरूक

**अजय कुमार कुशवाहा**
**आदिवासी एक्सप्रेस जिला ब्यूरो**
**साहिबगंज** पर्यटन, कला, संस्कृति, खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग, झारखंड, रांची के निदेशानुसार दिनांक 10 जून से 26 जून 2025 तक ÷निषिद्ध मादक पदार्थों के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय दिवस÷ के उपलक्ष्य में राज्यव्यापी अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में जिला खेल कार्यालय, साहेबगंज द्वारा सिदो-कान्हू स्टेडियम में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
इस अवसर पर आवासीय बालक एथलेटिक्स प्रशिक्षण केंद्र एवं डे बोर्डिंग बालिका कुश्ती प्रशिक्षण केंद्र के खिलाड़ियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और नशा विरोधी

अभियान में अपनी सक्रिय भागीदारी दिखाई। युवाओं के बीच भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कई प्रतिभागियों ने अपने विचार रखते हुए नशे के दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला। सभी ने यह संकल्प लिया कि वे स्वयं भी नशे से दूर रहेंगे और दूसरों को भी नशा मुक्त जीवन अपनाने के लिए प्रेरित करेंगे।
कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को नशीले पदार्थों से होने वाले मानसिक, शारीरिक और सामाजिक नुकसान के प्रति जागरूक करना तथा उन्हें एक स्वस्थ, अनुशासित और खेलोन्मुख जीवनशैली की ओर प्रेरित करना था। वक्ताओं ने युवाओं से आग्रह किया कि वे नशा से दूर रहें, नशा करके वाहन न चलाएं, और अपने आसपास के लोगों को भी जागरूक करें।
मौके पर जिला खेल समन्वयक कौशल किशोर मरांडी, एथलेटिक्स कोच योगेश यादव, खेलो इंडिया कुश्ती कोच प्रकाश सिंह बादल, निमाई चौधरी, मिथुन कुमार, भुवन मंडल सहित अन्य गणमान्य उपस्थित थे।
कार्यक्रम के सफल आयोजन में प्रशिक्षकों, खिलाड़ियों एवं जिला खेल कार्यालय के सभी कर्मियों की सक्रिय सहभागिता सराहनीय रही।

## मतदान केंद्रों के नजरी नक्शा, की-मैप एवं टर्निंग पॉइंट कोऑर्डिनेट्स संकलन हेतु एईआरओ एवं सभी बीएलओ सुपरवाइजर को प्रशिक्षण दिया गया

**आदिवासी एक्सप्रेस**
**हजारीबाग।** मतदाता सूची विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम के पूर्व पुनरीक्षण गतिविधियों के पूर्व Geo-Fencing के तहत मतदान केन्द्रों के नजरी नक्शा, की-मैप तैयार करने तथा टर्निंग पॉइंट कॉर्डिनेट्स को संकलित करने के निमित्त सोमवार को समाहरणालय सभाकक्ष में उप निर्वाचन पदाधिकारी, हजारीबाग के द्वारा 25-हजारीबाग विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र के सभी सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी एवं सभी बी0एल0ओ0 सुपरवाइजर को प्रशिक्षण दिया गया.
उप निर्वाचन पदाधिकारी के द्वारा सभी सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारियों को अपने अधीनस्थ बी0एल0ओ0 को मतदान केन्द्रों के नजरी नक्शा, की मैप तैयार करने तथा टर्निंग प्वाइंट को ऑडिनेट्स को संकलित करने के सम्बन्ध में प्रखंड स्तर पर 21.06.2025 तक सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण देने हेतु निदेश दिया गया। इस मौके पर उप निर्वाचन पदाधिकारी, हजारीबाग, निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी-सह-अनुमंडल पदाधिकारी, सदर तथा सभी सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी एवं सभी बी0एल0ओ0 सुपरवाइजर 25-हजारीबाग विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र उपस्थित रहे.

## बिजली को लेकर बड़कागांव से सैकड़ो लोग धरना में हुए शामिल

**बड़कागांव संवाददाता**
**बड़कागांव।** बिजली समस्या को लेकर हजारीबाग जुलु पार्क स्थित बिजली विभाग के महा प्रबंधक कार्यालय का तालाबंदी एवं धरना प्रदर्शन कार्यक्रम किया गया। जिसमें बड़का गांव विधानसभा विधायक रोशन लाल चौधरी के नेतृत्व में बड़कागांव से भारी संख्या में भाजपा आजसू कार्यकर्ता के अलावा ग्रामीण धरना प्रदर्शन एवं तालाबंदी कार्यक्रम में शामिल हुए। एवं आंदोलन मे अपनी सहभागिता निभाई। लोगों ने कहा कि राज्य सरकार कि गलत नीतियों के

कारण बड़कागांव प्रखंड समेत हजारीबाग जिले के तमाम प्रखंडों में बिजली बाधित हो रही है। बिजली की इस लचर व्यवस्था को हम लोग दूर कराकर हीं दम लेंगे।
जिसमें मुख्य रूप से आजसू केंद्रीय सचिव कोलेश्वर गंझु, केंद्रीय सदस्य संदीप कुशवाहा ,प्रखंड अध्यक्ष गौतम वर्मा, प्रवक्ता तपेश्वर कुमार तापस, भाजपा मंडल अध्यक्ष खेमलाल महतो, विधानसभा सांसद प्रतिनिधि पूनम साहू, विधानसभा सांसद सह प्रतिनिधि कृष्णा राम बड़कागांव सांसद प्रतिनिधि रंजीत कुमार, पूर्वी सांसद प्रतिनिधि महेंद्र महतो, टुकेस्वर प्रसाद, नरेश साव, अशोक महतो, पूर्व मुखिया पारसनाथ महतो, भीखन महतो, शिबू कुमार , उपेंद्र कुमार, गीरेंद्र कुमार, उपेंद्र प्रसाद ,मनीष पांडे , सुमन गिरी, नागेश्वर तूरी ,कामेश्वर महतो ,दिनेश महतो, के अलावा भारी संख्या में लोग शामिल थे।

## बरहेट प्रखंड में 10 दिवसीय मेगा मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर का हुआ शुभारंभ

**डीसी हेमंत सती और एसपी अमित कुमार सिंह ने किया उद्घाटन**

**आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता**
**साहिबगंज।** बरहेट प्रखंड स्थित प्लस टू राज्य संपोषित दामिन उच्च विद्यालय परिसर आज दस दिवसीय मेगा मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर का शुभारंभ किया गया। इस विशेष शिविर का उद्घाटन जिला दंडाधिकारी-सह-डीसी हेमंत सती एवं एसपी अमित कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से किया। इस शिविर का आयोजन जिला प्रशासन साहिबगंज, स्वास्थ्य विभाग एवं चेन्नई स्थित शंकर नेत्रालय के सहयोग से किया जा रहा है, जिसमें निःशुल्क नेत्र जाँच और मोतियाबिंद ऑपरेशन की सुविधा दी जा रही है। इस अवसर पर डीसी हेमंत सती ने कहा कि यह विशेष शिविर जिले के सुदूरवर्ती क्षेत्रों

में रहने वाले उन लोगों के लिए एक सुनहरा अवसर है, जो आंखों की समस्याओं से जूझ रहे हैं लेकिन संसाधनों के अभाव में उपचार नहीं करवा पा रहे हैं। नेत्र स्वास्थ्य हमारे जीवन की गुणवत्ता से जुड़ा हुआ विषय है और प्रशासन का प्रयास है कि जरूरतमंदों तक यह सेवा निःशुल्क और सुलभ रूप में पहुँचे। उन्होंने लोगों से अपील की इस अवसर से न चूकें और अनिवार्य रूप से आंखों की जांच कराएं। एसपी अमित कुमार सिंह ने कहा कि अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग यह जान ही नहीं पाते कि उनकी आंखों में समस्या है। यह शिविर ऐसे लोगों के लिए वरदान साबित हो सकता है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इस शिविर की जानकारी अपने आसपास के लोगों को देनी चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसका लाभ उठा सकें। शिविर की विस्तृत जानकारी देते हुए सिविल सर्जन प्रवीण कुमार संथालिया ने बताया कि देश के अग्रणी नेत्र चिकित्सा संस्थानों में से एक शंकर नेत्रालय, चेन्नई की विशेषज्ञ टीम इस शिविर में मौजूद है। उन्होंने बताया कि नेत्र जांच की प्रक्रिया 16 जून से 22 जून, 2025 तक प्रतिदिन प्रातः 7:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक चलेगी। इसके पश्चात 20 जून से 24 जून, 2025 के बीच मोतियाबिंद ऑपरेशन किए जाएंगे। समस्त प्रक्रिया पूर्णतः निःशुल्क है, जिसमें ऑपरेशन, दवाएं एवं देखभाल की सुविधाएं शामिल हैं। इस मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी अरविंद चोपड़ा, सामाजिक संस्था बॉक्सा ट्रस्ट के संस्थापक सहित अनेक स्वास्थ्यकर्मी, स्वयंसेवी और आमजन उपस्थित थे। बॉक्सा ट्रस्ट के प्रतिनिधियों ने बताया कि वे गांव-गांव जाकर प्रचार कर रहे हैं और लोगों को शिविर तक लाने में सहायता कर रहे हैं। शिविर के पहले ही दिन 200 लोगों ने अपनी नेत्र जांच करवाई और कई लाभार्थियों ने भविष्य में ऑपरेशन के लिए पंजीकरण भी करवाया। स्थानीय निवासी जो पिछले एक वर्ष से आंखों की समस्या से परेशान थे, ने बताया, हमें लगा था कि ऑपरेशन के लिए शहर जाना पड़ेगा, लेकिन अब डॉक्टर खुद गांव आ गए हैं। यह हमारे लिए बहुत बड़ी राहत है। शिविर स्थल पर जिला प्रशासन द्वारा पेयजल, साफ-सफाई, बैठने की समुचित व्यवस्था की गई है। सुरक्षा व्यवस्था हेतु पुलिस बल की तैनाती की गई है। कार्यक्रम के अंत में डीसी ने चिकित्सकों, तकनीकी स्टाफ एवं स्वयंसेवकों को सम्मानित करते हुए कहा कि इस तरह के शिविर ग्रामीण जनजीवन को बदलने की क्षमता रखते हैं। प्रशासन का लक्ष्य है कि जिले के हर नागरिक तक बुनियादी स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचे और सभी लोग स्वस्थ और सक्षम जीवन जी सकें।

## संक्षिप्त समाचार

### जमुआ विधायक मंजू कुमारी ने किया जमुआ सीएचसी का औचक निरीक्षण

**जमुआ, प्रतिनिधि।** जमुआ विधायक मंजु कुमारी ने सोमवार को समुदायिक स्वस्थ केन्द्र का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने मरीजों से व्यवस्था की जानकारी ली। मरीजों ने सफाई व्यवस्था की शिकायत किया तथा कुछ सहिया साथी द्वारा बारह हजार रुपये का प्रोत्साहन राशि निकालने पर 2000 रु. लेने की बात कही गई। जमुआ विधायक मंजू कुमारी ने प्रभारी चिकित्सा प्रभारी डॉ कुलदीप तिर्की को जाँच के निर्देश दिए एवं सफाई व्यवस्था पर उचित ध्यान देने को कहा। पुनः 15 दिन में अस्पताल का निरीक्षण करने की बात कही। निरीक्षण के दौरान पूर्व मंडल अध्यक्ष अशोक सिंह, भाजपा नेता राजेन्द्र राय, परमेश्वर यादव, संजीत अग्रवाल, गोपाल कृष्ण पाण्डेय, रूपलाल दास, सोनु मोदी, रामानंद कुशवाहा सहित अन्य मौजूद थे।

### पेयजलापूर्ति को सुदृढ़ करने की कवायद

- **जल जीवन मिशन के तहत अंबाटांड खरगडीहा में बंद जलापूर्ति को चालू कराने की मांग**

**जमुआ, प्रतिनिधि।** जमुआ प्रखंड मुख्यालय के सभागार में सोमवार को जल जीवन मिशन के तहत सहिया एवं जल सहिया का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में जल जीवन मिशन के तहत जलापूर्ति को निर्बाध रूप से चालू कराने की बात कही गई।गिरिडीह के डीसी के निर्देशानुसार कार्यपालक अभियंता पेयजल स्वच्छता के द्वारा पत्र जारी कर ग्रामीण जलापूर्ति को सुदृढ़ करने के लिए जल सहियाओं को आवश्यक निर्देश दिए गए। प्रशिक्षण में कहा गया कि पेयजलापूर्ति योजना को सुदृढ़ करके उसे प्रखंड प्रमुख को जिम्मा दिया जाएगा। प्रखंड प्रमुख प्रतिनिधि संजीत यादव ने कहा कि गर्मी को देखते हुए पंचायत स्तर पर गठित जल स्वच्छता समिति को सक्रिय होना चाहिए। कहा चापानल का वितरण आसमान हुआ है। चापानल को पारदर्शी तरीके से वितरक नहीं किया गया पेयजलापूर्ति योजना भी गांवों में फ्लॉप हो गई है।ऐसे में ग्रामीणों के समक्ष पेयजल की समस्या उत्पन्न होने की संभावना बढ़ गई है। प्रशिक्षण में बीडीओ अमल जी ने भी कहा कि जल जीवन मिशन के कार्यों को मिशन मोड में करने की जरूरत है। उपप्रमुख रब्बुल हसन रब्बानी सहित कई जल सहिया सहित कई लोग थे।

### गिरिडीहः नेकपुरा-देवरी मार्ग की मरम्मति शुरू, मीडिया की सक्रियता और जनदबाव से मिली राहत

- **कांग्रेस नेता ई. अनिल चौधरी ने मीडिया कर्मियों और जनता का जताया आभार**

**गिरिडीह, प्रतिनिधि।** जिले के नेकपुरा से देवरी को जोड़ने वाली मुख्य सड़क की स्थिति विगत कई वर्षों से बेहद जर्जर थी। वर्ष 2016 में इस सड़क का निर्माण हुआ था, लेकिन निर्माण के कुछ ही महीनों के भीतर सड़क टूटने लगी। धीरे-धीरे हालत इतनी बदतर हो गई कि बारिश के मौसम में यह सड़क दलदल में तब्दील हो जाती थी। इस सड़क से होकर लगभग आठ पंचायतों के लोग प्रतिदिन आवाजाही करते हैं। बच्चे-बच्चियां इसी मार्ग से स्कूल और कॉलेज जाते हैं, तो वहीं आम ग्रामीण ब्लॉक मुख्यालय और बाजार से जुड़े अपने जरूरी कामों के लिए इसी सड़क पर निर्भर रहते हैं। अनुमानित तौर पर करीब 50 हजार की आबादी के लिए यह सड़क जीवनरेखा के समान है।

**मीडिया की भूमिका रही अहम**

हाल ही में विभिन्न मीडिया चैनलों और पत्रकारों द्वारा इस सड़क की दुर्दशा को प्रमुखता से दिखाया गया, जिससे सरकार और प्रशासन की नींद टूटी। मीडिया की सक्रिय भूमिका से जनदबाव बना और प्रशासन को तत्काल संज्ञान लेना पड़ा। इसके परिणामस्वरूप, फिलहाल सड़क की अस्थायी मरम्मत का कार्य शुरू कर दिया गया है।

**क्या कहते हैं कांग्रेस नेता ई. अनिल चौधरी**

कांग्रेस नेता ई. अनिल चौधरी ने इस कार्य के लिए सभी मीडिया कर्मियों का धन्यवाद दिया और कहा जब तक इस सड़क का पुर्ननिर्माण नहीं हो जाता, हम सरकार से लगातार इसकी मांग करते रहेंगे। सड़क की हालत को सुधारना केवल जनता की सुविधा नहीं, बल्कि सरकार की जिम्मेदारी है। उन्होंने आगे कहा कि स्थानीय सांसद और विधायक ने आज तक इस मुद्दे पर गंभीरता नहीं दिखाई, जिससे लोगों को निरंतर परेशानी झेलनी पड़ी है।

**जनता को मिली थोड़ी राहत**

हालांकि यह केवल आंशिक मरम्मत है, फिर भी इससे आमजन को फिलहाल के लिए राहत मिली है। ग्रामीणों ने मरम्मत कार्य शुरू होने पर खुशी जताई और ई. अनिल चौधरी के प्रयासों और मीडिया की भूमिका की सराहना की है। स्थानीय निवासी रामदेव यादव ने कहा अगर मीडिया और अनिल जी ने आवाज़ नहीं उठाई होती, तो ये सड़क आज भी यूं ही पड़ी रहती। हम सब उनके आभारी हैं।

**भविष्य की मांग**

स्थानीय लोगों ने सरकार से आग्रह किया है कि जल्द से जल्द इस सड़क का पुनः गुणवत्तापूर्ण निर्माण कराया जाए ताकि भविष्य में फिर से ऐसी स्थिति उत्पन्न न हो। इसके साथ ही, इस मार्ग को राज्य योजना में शामिल कर स्थायी समाधान की मांग भी की गई है।

# सनातन ऐड सहायता की हुई वैश्विक शुरूआत

**गिरिडीह, प्रतिनिधि।** दिल्ली में बसे पाकिस्तानी सनातनी व हिंदुओं को श्रीराम सेना कैंप में मिली राशन कीट की पहली खेप 9 सालों से समाज सेवा, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा को समर्पित न्यास पीआईयू ट्रस्ट द्वारा पाकिस्तान के सिंध व अन्य प्रांत से आए सनातनी गरीब प्रवासियों/माताओं/बहनों विद्यार्थियों को निःशुल्क राशन किट, घरेलू जरूरत व पाठ्य सामग्री दिल्ली के पाकिस्तानी हिन्दू बस्ती, श्रीराम सेना कैंप, मजनू का टिला में सनातन सहायता की पहली खेप 15 जून 2025 को दर्जनों राशन कीट वितरित की गई। जिसमें कैंप में विधवाओं को यह राशन कीट प्रदान की गई। जिसमें 5 किलो आटा सहित खाने पीने की 20 चीजें थी। इसमें लक्ष्मी प्रधानमंत्री मोदी जी से मिल चुकी हैं। इसके अलावा वसना, भागीरथ, सोनादास, धर्मपाल, ओमप्रकाश के अलावा दर्जनों पाकिस्तानी हिन्दू को राशन कीट प्रदान किया। सभी में पीआईयू ट्रस्ट व इसके संस्थापक अध्यक्ष डॉ सुरेश वर्मा का बहुत आभार व्यक्त किया। प्रत्येक माह के दूसरी व अंतिम रविवार को सनातन सहायता/ सनातन ऐड वितरित की जायेगी। इसी क्रम में अगली सहायता कीट 29 जून को दी जानी है। सनातन ऐड/सहायता वैश्विक स्तर पर हुई एक ऐतिहासिक पहल पाकिस्तानी हिंदुओं, सिखों, जैनों, बौद्धों को भी मिलेगी जीवन जीने हेतु आर्थिक, कानूनी व अन्य सहायता मिलेगी। इसके साथ ही डॉ सुरेश वर्मा द्वारा इन पाकिस्तानी बच्चों को निःशुल्क शिक्षा हेतु निशुल्क अध्ययन व पठन-पाठन हेतु मुखर्जी नगर दिल्ली में प्रियदर्शी पाठशाला नाम से एक क्लास, टीचर निशुल्क प्रदान किया गया है। साथ ही वे स्वयं भी इन बच्चों को पढ़ाएंगे। इस कार्यक्रम में सनातन सहायता के अंतर्राष्ट्रीय आउटरीच सेल के उपाध्यक्ष डॉ. कुणाल कृष्ण, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की भी गरिमामई उपस्थिति थी। साथ में शुभम, राजेंद्र, गौरव समेत दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित थे। इस महान सेवा कार्य में दानदाता आर्थिक सहायता स्वेच्छानुसार कर सकते हैं। विश्व सनातन परिषद द्वारा सनातन संरक्षण व विकास कोष (पंजीकरण जारी) कि ओर से दानदाताओं को सनातनी जीवन रक्षा रत्न सम्मान प्रदान करेगी। दानदाता स्वयं आकर सनातन ऐड वंचित व प्रवासी पाकिस्तानी सनातनी को कीट के रूप में प्रदान कर सकते हैं। डॉ. सुरेश वर्मा की मानवता के नाम एक मार्मिक पहल की गई है। सनातन एआईडी के अंतर्राष्ट्रीय संस्थापक अध्यक्ष डॉ. सुरेश वर्मा हैं। जो दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र रह चुके हैं। इसके साथ ही कानूनी प्रकोष्ठ अध्यक्ष वकील ओमकार कुशवाहा हैं। संवेदना व साहित्य प्रकोष्ठ के अध्यक्ष राम रतन श्रीवास हैं। मानवता संवर्धन प्रकोष्ठ की उपाध्यक्ष डॉ श्वेता शरण का मनोनयन हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय आउटरीच सेल के उपाध्यक्ष डॉ. कुणाल कृष्ण, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय विश्वविद्यालय साथ ही यूनिवर्सिटी आउटरीच सेल के उपाध्यक्ष प्रो. डॉ. उमेश सिंह, सहायक प्रोफेसर, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स हैं। इस सनातन सहायता से विश्व के सनातनी जीवन, सनातन धर्म स्थल, सनातनी विरासत स्थल, धार्मिक पुस्तकें व हर तरह के पुनर्निर्माण व सहायता प्रदान की जाएगी जिसके लिए सनातन संरक्षण व विकास कोष न्यास का पंजीकरण भी कराया जा रहा है। दिल्ली व अन्य विश्वविद्यालय के इंटर्न को भी इस महान कार्यों में जोड़ा जा रहा है। इसके गठन समिति की बैठक डॉ मुखर्जी नगर में 7 जून को सम्पन्न हुई। इसके साथ ही इसके लोगो को भी लोकार्पित किया गया।

# जमुआ विधायक मंजू कुमारी ने जनता दरबार लगाया, समस्या से हुए रूबरू

- **जमुआ विधायक मंजू कुमारी ने जनता दरबार लगाकर लोगों की समस्याओं को सुना। उन्होंने समस्याओं के समाधान का भरोसा दिया और अधिकारियों को निर्देश दिए**

**जमुआ, प्रतिनिधि।** जमुआ विधायक मंजू कुमारी ने सोमवार को प्रखड़ सह अंचल कार्यालय मे जनता दरबार लगाकर लोंगो की समस्याओं से रूबरू हुए विधायक ने लोगों की समस्याओं को सुनकर समाधान करने का भरोसा दिया। जमुआ विधायक मंजू कुमारी ने कहा कि जनप्रतिनिधि के रूप में यह मेरा प्राथमिक एवं परम दायित्व है कि जन समस्याओं का समाधान करें। कहा कि प्रत्येक माह लोगों की समस्याओं से अवगत होकर लोंगो के कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास होता है। जनता दरबार में कई समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया जनता दरबार में कुल 35 आवेदन आए। जिसमे पाँच आवेदन को ऑन दा स्पोट निराकरण किया गया। शेष 30 आवेदन को संबंधित विभाग के पास निर्देशित किया गया है और कहा गया की सभी आवेदन को जल्द निराकरण करे प्रत्येक महिना के 16 तारीख को जनता दरबार लगेगा और क्षेत्र का लोग लाभ उठावे। मौके पर भाजपा के वरिष्ठ नेता साहेब महतो, राजेन्द्र राय, परमेश्वर यादव, अशोक सिंह, दयान्द राय, प्रदीप सिंह, गोपालकृष्ण पांडे, रूपलाल दास, बिनय राय, सुनील राय, परिणय सिन्हा, अनुपम सिन्हा, सूरज कुमार, संजीत कुमार, आशीष सिन्हा, सोनू मोदी, रविषेक राय, अमरेंद्र कुमार, रामानंद कुशवाहा, पप्पू कुमार, विवेकानंद कुशवाहा, अजय कुमार, रंजन कुमार सहित कई भाजपा कार्यकर्त्ता मौजूद थे।

# ट्रैक्टर लदे ट्रेलर की चपेट में आने से घायल बाइक सवार युवक की हालत गंभीर

**मुआवजे की मांग को लेकर ग्रामीणों ने किया सड़क जाम**

**गिरिडीह, प्रतिनिधि।** गिरिडीह जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र के बेरगी में न्यू भारत एग्रो ट्रेक्टर शोरुम के पास कल रविवार की शाम ट्रैक्टर लदे ट्रेलर ने एक बाइक सवार युवक को अपने चपेट में आने से गंभीर रूप से घायल हो गया था, घायल युवक को इलाज के लिए सदर अस्पताल लाया गया जहां चिकित्सकों ने उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए धनबाद रेफर कर दिया था। अभी धनबाद स्थित एक निजी अस्पताल में घायल युवक का इलाज चल रहा है। घायल व्यक्ति की पहचान कारीपहरी निवासी 34 वर्षीय मुकेश वर्मा के रूप में की गई है। इस दौरान परिजनों ने बताया कि घायल युवक मुकेश वर्मा कोमा में है और गंभीर स्थिति में आईसीयू में भर्ती है। घटना के बाद परिजनों और ग्रामीणों ने ट्रैक्टर लदे ट्रैलर को पकड़ रखा है और मुआवजे की मांग को लेकर आज सोमवार को सड़क जाम कर दिया। सूचना मिलने पर मुफस्सिल थाना पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों को समझा बुझाकर जाम हटवाया। घटना के संबंध में माले नेत्री प्रीति भास्कर ने बताया कि मुकेश बाइक से अपने घर की ओर आ रहा था। इसी दौरान ट्रैक्टर लोड ट्रेलर बेरगी स्थित न्यू भारत एग्रो ट्रैक्टर शोरूम में ट्रैक्टर उतारने के लिए आया हुआ था और वहां ट्रैक्टर उतारने के बाद वह ट्रेलर को पीछे करने के दौरान बाइक सवार मुकेश वर्मा को अपनी चपेट में ले लिया। जिसमें बाइक सवार मुकेश वर्मा बुरी तरह घायल हो गया है। घायल मुकेश वर्मा के घर की स्थिति ठीक नहीं है कि वे लोग मुकेश का इलाज करा सके। ग्रामीणों के द्वारा आपसी सहयोग से चंदाकर इलाज का बिल दिया जा रहा है। जिससे मुकेश का इलाज चल रहा है। वहीं आज सोमवार को ग्रामीणों ने न्यू भारत एग्रो ट्रैक्टर शोरूम के सामने सड़क जाम कर दिया और कहा कि कम से कम इलाज की रकम की सहायता दी जाए। इस दौरान मुफस्सिल थाना पुलिस मौके पर पहुंची और आक्रोशित लोगों को उचित मुआवजे का आश्वासन देकर सड़क जाम हटवाया। वहीं ट्रैक्टर शोरूम के मालिक का कहना है कि ट्रांसपोर्ट कंपनी के द्वारा कल दोपहर में ही उनके यहां ट्रैक्टर उतार दिया गया था और बाकी का ट्रैक्टर को ट्रांसपोर्ट कंपनी के ट्रेलर के द्वारा देवघर में पहुंचना था, इस बीच ड्राइवर की गलती से यह दुर्घटना घटी जिसके लिए ट्रांसपोर्ट कंपनी जिम्मेदार है। प्रशासन की बात को मानते हुए ग्रामीणों ने सड़क जाम तो हटा दिया मगर उनका कहना था की मुआवजा कौन देगा यह स्पष्ट नहीं हो पाया है जिस वजह से मौजूद परिजन और ग्रामीण बेरगी स्थित न्यू भारत एग्रो ट्रैक्टर शोरूम के बाहर बैठे हुए हैं। जहां काफी संख्या में पुलिस बल की तैनाती कर दी गई है।

# अनियमित विद्युतापूर्ति के विरोध में माले ने घेरा कार्यालय

**जमुआ, प्रतिनिधि।** जमुआ क्षेत्र में हो रही अनियमित विद्युतापूर्ति के विरोध में भाकपा माले की जमुआ प्रखंड कमिटी ने सोमवार को विद्युत विभाग के खरगडीहा स्थित अनुमंडलीय कार्यालय का घेराव किया। इस दौरान माले ने एक मांगपत्र सौंप कर कहा कि भीषण गर्मी में जमुआ क्षेत्र के लोंगो को बिजली नहीं मिल रहा है। अनियमित विद्युतापूर्ति के कारण आम जनजीवन प्रभावित हुआ है। जबकि विद्युत विभाग के अधिकारी और कर्मचारी अपने दफ्तर से भी नदारद रहते हैं। कहा कि ग्रामीण इलाकों के विद्युत उपभोक्ताओं के बिजली मीटर जले हुए हैं, विभाग को सूचित करने पर भी मीटर नहीं बदला जा रहा है, ऐसी स्थिति में सरकार द्वारा दो सौ यूनिट मुफ्त बिजली देने की क्या अद्यतन स्थिति है, इसका पता नहीं चल पाता है। ग्यारह हजार वोल्ट लाइन का तार और पोल कई स्थानों में जर्जर हो गया है। इसे बदलने की जहमत विभाग नहीं उठा रहा है। अगर विभाग का यही रवैया रहा तो माले और भी उग्र आंदोलन करने के लिए विवश होगा। घेराव कार्यक्रम में माले के जिला सचिव अशोक पासवान, विजय पांडेय, मीना दास, मनौवर हसन बंटी, अजय चौधरी, उस्मान अंसारी समेत कई अन्य उपस्थित थे।

### डुमरी आत्महत्या कांड में संजय मेहता ने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को लिखा पत्र

- **कार्रवाई की माँग की, आयोग में मामला दर्ज**

**गिरिडीह, प्रतिनिधि।** गिरिडीह जिला अंतर्गत डुमरी प्रखंड के बलथरिया पंचायत के पंचायत सेवक सुखलाल महतो की आत्महत्या मामले में आजसू नेता संजय मेहता ने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, नई दिल्ली को पत्र लिखकर न्याय की माँग की है। संजय मेहता ने आयोग के अध्यक्ष के नाम अपने पत्र में स्पष्ट किया है कि यह मामला न सिर्फ मानवाधिकारों के उल्लंघन से जुड़ा है, बल्कि कार्यस्थल पर सरकारी पदाधिकारियों द्वारा किए गए मानसिक उत्पीड़न का गंभीर उदाहरण भी है। उन्होंने बताया कि मृतक सुखलाल महतो ने आत्महत्या के पूर्व लिखे पत्र में डुमरी के प्रखंड विकास पदाधिकारी (बीडीओ) समेत तीन अन्य अधिकारियों पर मानसिक प्रताड़ना और सार्वजनिक अपमान के गंभीर आरोप लगाए थे। संजय मेहता ने आशंका जताई है कि चूंकि यह मामला सरकार और सरकारी पदाधिकारियों से जुड़ा है, इसलिए तथ्यों के साथ छेड़छाड़ की जा सकती है, और सरकारी मशीनरी द्वारा सच्चाई को दबाने की कोशिश की जा सकती है। उन्होंने कहा कि यहाँ तो मुंसिफ़ ही चोर है, इसलिए मानवाधिकार आयोग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। संजय मेहता ने आयोग को भेजे अपने पत्र में संविधान के अनुच्छेद 21 और यूनिवर्सल डिक्लेरेशन ऑफ ह्यूमन राइट्स के अनुच्छेद 5 का हवाला देते हुए कहा कि प्रत्येक नागरिक को सम्मानपूर्वक जीवन और अमानवीय व्यवहार से मुक्ति का अधिकार है, और यह घटना इन मूल अधिकारों का घोर उल्लंघन है। मानवाधिकार आयोग ने संजय मेहता के पत्र पर संज्ञान लेते हुए केस संख्या 14015/आईएन/2025 के अंतर्गत दिनांक 16 जून 2025 को मामला दर्ज कर लिया है। संजय मेहता ने आयोग से निष्पक्ष जाँच और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की माँग की है। उन्होंने कहा कि यह मामला गिरिडीह जिले में कार्यस्थल पर व्याप्त भ्रष्टाचार और अमानवीयता को उजागर करता है, और यदि समय रहते ऐसे मामलों पर न्याय नहीं हुआ, तो यह प्रवृत्ति और भयावह रूप ले सकती है।

### जमुआः पंकज मोबाईल एंड गिफ्ट पॉइंट का उद्घाटन झामुमो नेता महेंद्र कुमार ने फीता काटकर किया

**जमुआ, प्रतिनिधि।** जमुआ प्रखंड अंतर्गत थाना रोड में पंकज मोबाईल एंड गिफ्ट पॉइंट का उद्घाटन झामुमो नेता सह पूर्व मुखिया हरला महेंद्र कुमार ने फीता काटकर किया। झामुमो नेता महेंद्र कुमार ने कहा कि जमुआ में इस तरह का दुकान खुलना काफी अच्छा है। कहा कि वर्तमान समय में मोबाईल लोगों की जरूरत का खास साधन बन गया है। इस टेक्नोलॉजी को रोजाना विस्तार हो रहा है। इसकी जरूरत अभी के समय में हर व्यक्ति को है। इसके बिना लोगों का कई काम बाधित हो जाता है। मोबाईल टैक्नोलॉजी ने दुनिया के कारण दुनिया के किसी भी हिस्से के लोग आपस जुड़े रहते हैं। मोबाईल ने लोगों के बीच शहरो की दूरी को खत्म कर दिया है। दुकान के संचालक पंकज कुमार ने कहा कि हमारे यहां मोबाईल उपभोक्ताओं के लिए विशेष व्यवस्था की जाएगी, विभिन्न कंपनियों का मोबाईल मार्केट दर पर लोगों को उपलब्ध कराया जाएगा। हमारे यहां मोबाईल, चार्जर, कवर, कनेक्टर एवं मशीन के द्वारा लेमिनेशन किया जाता हैं एवं परीक्षा का फॉर्म भी भरा जाता हैं। हमारे यहां फाइनेंस की भी सुविधा उपलब्ध है एवं हर प्रकार के गिफ्ट भी मिलते हैं। मौके पर बालगोविंद यादव, आलोक कुमार, कुणाल कुमार, मनीष कुमार, बिंदु कुमार, प्रवीण यादव, दिनेश कुमार, संजय कुमार, सिकंदर कुमार, पिंटू कुमार, मुकुल कुमार, रवि कुमार, साकेत सौरभ, प्रवीण कुमार, महेश कुमार, मनीष कुमार आदि कई मौजूद थे।

# योग केवल आसन नहीं, बल्कि जीवनशैली हैः योगी लवकुश

**गिरिडीह, प्रतिनिधि।** योग, प्राचीन भारतीय विज्ञान, शरीर, मन और आत्मा को जोड़ता है। अंतर्राष्ट्रीय योग शिक्षक योगी लवकुश, जो लक्सर, मिस्र में वरिष्ठ योग प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत हैं, योग को वैश्विक स्तर पर ऑनलाइन और ऑफलाइन बढ़ावा दे रहे हैं। उनकी विशेषज्ञता हठ योग, पवनमुक्तासन, प्राणायाम और चिकित्सीय योग में है, जो ÷एक धरती, एक स्वास्थ्य की थीम को साकार करती है। योगी लवकुश का मानना है कि योग केवल आसन नहीं, बल्कि जीवनशैली है। वे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) के अवसर पर मुफ्त सत्र आयोजित करते हैं, जिसमें अनुलोम-विलोम, सूर्य नमस्कार और शवासन जैसे अभ्यास शामिल हैं। उनके ऑनलाइन सत्र दुनिया भर के लोगों को जोड़ते हैं, जबकि ऑफलाइन कार्यशालाएँ स्थानीय समुदायों में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाती हैं। योग तनाव कम करता है, शारीरिक शक्ति बढ़ाता है और मानसिक शांति प्रदान करता है। योगी लवकुश के प्रयासों से, योग सभी उम्र के लिए सुलभ हो रहा है। वे कहते हैं, योग एकता का प्रतीक है, जो हमें प्रकृति और स्वयं से जोड़ता है। उनके मार्गदर्शन में, योग वैश्विक स्वास्थ्य और शांति का आधार बन रहा है।

**झारखंड से इजिप्ट तक योग की यात्रा**

जिले के खोरीमहुआ अनुमंडल अंतर्गत खैरौन गांव के अंतर्राष्ट्रीय योग शिक्षक योगी लवकुश ने कहा कि योग हमारी दिनचर्या का हिस्सा था। सुबह के समय, गाँव के लोग खुले मैदान में योग करते थे, जो हमें प्रकृति के करीब लाता था। आज, इजिप्ट में, मैं उसी परंपरा को जीवित रखने का प्रयास कर रहा हूँ। यहाँ के लोग योग को उत्साह के साथ अपनाते हैं, और मैं उन्हें सिखाता हूँ कि कैसे योग उनके जीवन को संतुलित और सकारात्मक बना सकता है। इस अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर, सभी से आग्रह करता हूँ कि वे योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करें। चाहे आप झारखंड के किसी गाँव में हों या इजिप्ट के किसी शहर में, योग आपके जीवन को समृद्ध करेगा। आइए, हम सब मिलकर एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के संदेश को फैलाएँ और विश्व को एक स्वस्थ, शांतिपूर्ण स्थान बनाएँ।

## संक्षिप्त समाचार

### 2024 बैच के आईएएस अधिकारी आनंद शर्मा ने हजारीबाग के प्रशिक्षु आईएएस के रूप में दिया योगदान

● उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह से भेंट कर सौंपा योगदान

आदिवासी एक्सप्रेस

**हजारीबाग।** सोमवार को प्रशिक्षु भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) अधिकारी आनंद शर्मा ने हजारीबाग के उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह के समक्ष अपना योगदान दिया। उन्होंने अपने 12 माह के प्रशिक्षण अवधि के अंतर्गत जिले में विभिन्न प्रशासनिक कार्यों एवं योजनाओं के क्रियान्वयन की प्रक्रिया को समझने हेतु योगदान स्थल पर कार्यभार ग्रहण किया। आनंद शर्मा 2024 बैच के आईएएस अधिकारी है। ये दिल्ली के रहने वाले है।

इस अवसर पर उपायुक्त ने प्रशिक्षु आईएएस अधिकारी का स्वागत करते हुए उन्हें जिले की प्रशासनिक संरचना, प्राथमिकता वाले क्षेत्रों तथा जनहितकारी योजनाओं से अवगत कराया। प्रशिक्षु अधिकारी आने वाले समय में जिलांतर्गत विभिन्न विभागों एवं प्रखंडों में कार्य का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करेंगे, जिससे उन्हें प्रशासनिक सेवाओं की बेहतर समझ विकसित करने में सहायता मिलेगी।

### हावड़ा लाठीचार्ज मामला-सुप्रीम कोर्ट से 6 पुलिस अधिकारियों को अंतरिम राहत, हाईकोर्ट के आदेश पर लगी रोक

**नई दिल्ली/हावड़ा।** पश्चिम बंगाल के हावड़ा जिला अदालत परिसर में हुए पुलिस लाठीचार्ज मामले में 6 वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को सुप्रीम कोर्ट से फिलहाल अंतरिम राहत मिल गई है। सोमवार को सुप्रीम कोर्ट ने कलकत्ता हाईकोर्ट के फैसले पर रोक लगा दी। इन अधिकारियों की याचिका पर संबंधित पक्षों को नोटिस जारी किया है और 6 हफ्तों के भीतर जवाब मांगा है। सुप्रीम कोर्ट ने अगली सुनवाई तक अधिकारियों की कलकत्ता हाईकोर्ट में पेशी पर रोक लगा दी है। हाईकोर्ट ने उन्हें अवमानना का नोटिस जारी कर 25 जून को अदालत में पेश होने का आदेश दिया था। इन छह अधिकारियों में से 4 आईपीएस अधिकारी हैं, जिनमें से एक हावड़ा पुलिस आयुक्त भी हैं।

ये विवाद साल 2019 का है, जब हावड़ा नगर निगम परिषद में बाइक पार्किंग को लेकर वकीलों और पुलिस के बीच नोंकझोंक हुई थी। परिसर में अपनी कार पार्क करने गए एक वकील के साथ कथित तौर पर दुर्व्यवहार हुआ। मामला कहासुनी से आगे बढ़ते हुए हाथापाई तक जा पहुंचा। बीच-बचाव करने की कोशिश में कथित तौर पर एक वरिष्ठ वकील पर हमला हुआ। इस मामले में पुलिस की एंट्री हुई और फिर वकीलों के साथ झड़प शुरू हो गई। स्थिति इतनी बिगड़ गई कि पुलिस ने अदालत परिसर के भीतर लाठीचार्ज करा दिया, जिसमें कई वकील गंभीर रूप से घायल हो गए थे। इस घटना पर कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेते हुए संबंधित पुलिस अधिकारियों के खिलाफ अवमानना की कार्यवाही शुरू की थी। ये मामला कलकत्ता हाईकोर्ट तक पहुंचा। कोर्ट ने पुलिस अधिकारियों को अवमानना नोटिस जारी कर 25 जून को पेश होने का आदेश दिया। हाईकोर्ट के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई थी। फिलहाल सुप्रीम कोर्ट में अगली सुनवाई तक हाईकोर्ट की कार्यवाही पर रोक रहेगी, लेकिन छह हफ्तों के भीतर सभी पक्षों को अपना जवाब दाखिल करना होगा।

### ईपीएफओ ने अनधिकृत एजेंटों से बचने की दी सलाह

**नई दिल्ली।** कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने कहा है कि संगठन के पोर्टल पर सभी सेवायें निशुल्क और सुरक्षित हैं और किसी भी अनधिकृत एजेंट से बचा जाना चाहिए।

केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने सोमवार यहां कहा कि अपने सेवाओं और शिकायतों के लिए अंशधारकों को ईपीएफओ के आधिकारिक पोर्टल का उपयोग करना चाहिए। ईपीएफओ ने केवाईसी या सदस्य विवरण में सुधार तथा स्थानांतरण दावें, पेंशन वितरण प्रक्रिया निशुल्क हैं। इसके अलावा ईपीएफओ सेवाओं जैसे पासबुक देखना, केवाईसी अपडेट, दावा प्रस्तुत करना भी निशुल्क है।

मंत्रालय ने कहा है कि कई साइबर कैफे संचालक, फिनटेक कंपनियां ईपीएफओ अंशधारकों से उन सेवाओं के लिए बड़ी रकम वसूल रही हैं। कई मामलों में ये संचालक केवल ईपीएफओ के ऑनलाइन शिकायत पोर्टल का उपयोग कर रहे हैं, जिसे कोई भी सदस्य अपने घर बैठे, निशुल्क कर सकता है। ईपीएफओ से संबंधित सेवाओं के लिए तीसरे पक्ष की कंपनियों या एजेंटों के पास जाने या उनसे जुड़ने से अंशधारकों की वित्तीय सूचना तीसरे पक्ष के सामने आ सकता है। ये बाहरी संस्थाएं ईपीएफओ से अधिकृत नहीं हैं और वे अनावश्यक शुल्क ले सकती हैं या सदस्यों की व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा से खिलवाड़ कर सकती हैं।

### राहुल गांधी का 'जितनी आबादी, उतना हक' का नारा झूठा, कर्नाटक में दोबारा सर्वे पर भाजपा ने उठाए सवाल

**नई दिल्ली।** कर्नाटक में दोबारा जातिगत सर्वेक्षण के मामले पर विपक्षी भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस पर हमला बोला है। भाजपा नेता और केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने सोमवार को कहा कि किसी को उसके इतिहास से मुक्ति नहीं मिलती है, लेकिन वर्तमान में कांग्रेस की कथनी और करनी वैसी ही है। इसका ताजा उदाहरण कर्नाटक सरकार है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी कर्नाटक को आइडियल स्टेट बताते रहते हैं, लेकिन कर्नाटक की उनकी सरकार का सर्वे बताता है कि सोशल जस्टिस कांग्रेस के लिए दिखावा है।

भूपेंद्र यादव ने दिल्ली में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि ओबीसी वर्ग को झांसे में रखना कांग्रेस की नीति है, न्याय देना उनका काम नहीं है। देश में ओबीसी समाज के साथ छल करने का काम हमेशा से कांग्रेस ने किया है। कांग्रेस के मन में कभी सच्चाई होती तो काका कालेलकर कमीशन की रिपोर्ट के बाद कभी दूसरी रिपोर्ट सामने नहीं आई, क्योंकि फिर कोई कमीशन ही नहीं बनाया गया। एक और उदाहरण देते हुए भूपेंद्र यादव ने कहा कि जब देश से कांग्रेस गई, तब मंडल आयोग लागू हुआ। मंडल आयोग की वैधानिकता को जब सुप्रीम कोर्ट ने स्वीकार किया, तब ओबीसी कमीशन को भी दंतहीन बनाने का काम कांग्रेस ने किया। पहले खुद कांग्रेस के सदस्य कहते थे कि जो ओबीसी कमीशन बनाया गया है, उसमें कोई ताकत नहीं। उन्होंने कहा, ओबीसी कमीशन को संवैधानिक दर्जा तब मिला जब कांग्रेस की सरकार गई और नरेंद्र मोदी की सरकार आई। ओबीसी कमीशन को संवैधानिक आयोग का दर्जा मिला और आर्थिक कल्याणकारी नीतियों के चलते करोड़ों लोग गरीबी से बाहर हुए।

# आखिरकार पंचायत सचिव सुखलाल महतो के परिजनों की मांगे मानने पर मजबूर हुआ प्रशासन

**चार सूत्री मांगे पूरी होने पर धरना हुआ समाप्त**

**गिरिडीह, प्रतिनिधि।** पंचायत सचिव सुखलाल महतो की आत्महत्या के बाद शुरू हुए आंदोलन ने आखिरकार प्रशासन को झुकने पर मजबूर कर दिया। मृतक के परिजनों द्वारा उठाई गई चार सूत्री मांगों को प्रशासन ने मान लिया है, जिसके बाद सोमवार सुबह आंदोलन समाप्त हो गया। मृतक का अंतिम संस्कार उनके पैतृक गांव कुलगो में कर दिया गया। रविवार देर रात सुखलाल महतो के शव को डुमरी प्रखंड कार्यालय के मुख्य द्वार पर रखकर परिजनों व स्थानीय ग्रामीणों ने धरना शुरू किया था।

मृतक के समर्थन में डुमरी विधायक जयराम महतो भी मौके पर पहुंचे और प्रशासनिक अधिकारियों से वार्ता की। वार्ता के बाद प्रशासन ने लिखित रूप से सभी मांगों को स्वीकार किया। मृतक की पत्नी की सहमति के आधार पर परिवार के एक सदस्य को 15 दिनों के भीतर अनुकंपा नियुक्ति दी जाएगी। देय वित्तीय लाभ जैसे ग्रेच्युटी, ग्रुप बीमा, उपार्जित अवकाश, भविष्य निधि आदि की राशि भी 15 दिनों के भीतर भुगतान की जाएगी। पारिवारिक पेंशन के लिए आवश्यक दस्तावेजों को महालेखाकार कार्यालय, रांची को अग्रसारित किया जाएगा। मृतक पंचायत सचिव द्वारा छोड़े गए सुसाइड नोट के आधार पर डुमरी प्रखंड विकास पदाधिकारी अंवेषा ओना, पीएमएवाई के ब्लॉक कोऑर्डिनेटर अजय कुमार, रोजगार सेवक अनिल कुमार साव और बालथरिया पंचायत के मुखिया पति परमेश्वर नायक के खिलाफ मानसिक प्रताड़ना और आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप लगाते हुए डुमरी थाना में नामजद एफआईआर दर्ज की गई है। यह मामला थाना कांड संख्या 71/25, दिनांक 16.06.2025 को दर्ज किया गया, जिसमें भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 108/61,316/351/352बीएनए स के तहत कार्रवाई हो रही है। इस पूरे घटनाक्रम में डुमरी विधायक जयराम महतो की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने मृतक के परिजनों की ओर से ग्रामीण विकास विभाग की मंत्री दीपिका पांडेय सिंह से दूरभाष पर बात कर अतिरिक्त सहायता की मांग की, जिस पर मंत्री ने सकारात्मक आश्वासन दिया। आपको बतादे कि 13 जून को सुखलाल महतो ने डुमरी प्रखंड कार्यालय परिसर में सल्फास खा लिया था। आत्महत्या से पूर्व उन्होंने एक पत्र सोशल मीडिया पर डुमरी विधायक के नाम साझा किया था। गंभीर अवस्था में उन्हें डुमरी से धनबाद और फिर रांची रिम्स रेफर किया गया, जहाँ 15 जून की रात उनकी मृत्यु हो गई थी।

## पुराने कुएँ में डूबने से पिता-पुत्र की दर्दनाक मौत, ज़िप उपाध्यक्ष आलोक ने जताया शोक

आदिवासी एक्सप्रेस/
लालू कुमार यादव

**हुसैनाबाद।** हुसैनाबाद थाना क्षेत्र के बड़ेपुर पंचायत अंतर्गत सहियारा गाँव में सोमवार को एक हृदयविदारक घटना घटी। पुराने अनुपयोगी कुएँ में गिरे लोटे को निकालने के प्रयास में पिता-पुत्र की दम घुटने से मौत हो गई। इस दर्दनाक घटना से पूरे गाँव सहित आस-पास के क्षेत्रों में शोक की लहर फैल गई है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, सहियारा गाँव निवासी 65 वर्षीय जगत रजवार के घर का उपयोगी लोटा किसी तरह पुराने अनुपयोगी कुएँ में गिर गया था। लोटा निकालने के लिए उनका पुत्र 32 वर्षीय मुन्ना रजवार कुएँ में उतरा। संकरा और

गहरा कुआँ, जिसमें पर्याप्त ऑक्सीजन भी नहीं थी, उसमें फँस जाने के कारण मुन्ना दम घुटने से बेहोश हो गया। बेटे को संकट में देख पिता जगत रजवार भी उसे बचाने के लिए कुएँ में उतर पड़े। दुर्भाग्यवश दोनों की दम घुटने से मौक़े पर ही मौत हो गई।

घटना की जानकारी मिलते ही हुसैनाबाद पुलिस एवं प्रशासनिक टीम घटनास्थल पर पहुँची। स्थानीय लोगों की मदद से लगभग तीन घंटे की कड़ी मशक़्क़त के बाद दोनों शवों को कुएँ से बाहर निकाला गया। पुलिस ने दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए हुसैनाबाद अनुमंडलीय अस्पताल भेज दिया है। घटना के बाद परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है।

इस हृदयविदारक घटना पर शोक व्यक्त करते हुए पलामू ज़िला परिषद उपाध्यक्ष सह युवा झामुमो नेता आलोक कुमार सिंह उर्फ़ टुटू सिंह ने कहा कि यह घटना अत्यंत पीड़ादायक है। उन्होंने शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते हुए ईश्वर से दिवंगत आत्माओं की शांति एवं परिजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की। उन्होंने प्रशासन से पीड़ित परिवार को यथोचित आर्थिक सहायता प्रदान करने की भी माँग की। घटना के बाद से गाँव में शोक का माहौल व्याप्त है। आस-पास के लोग परिवार को सांत्वना देने पहुँच रहे हैं।

## थमती भाषाएं, चुप राज्य— जनजातीय अस्मिता का संकट

झारखंड की सांस्कृतिक बनावट जितनी प्राचीन है, उतनी ही विविध और जीवंत भी। कुड़ुख, मुंडारी, खोरठा, नागपुरी, पंचपरगनिया, संताली, हो, कुरमाली और खड़िया जैसी भाषाएं न केवल संवाद के माध्यम हैं, बल्कि एक समृद्ध परंपरा, विचारधारा और पहचान की वाहक हैं। किंतु आज इन भाषाओं का अस्तित्व खतरे में है—और यह संकट केवल भाषिक नहीं, सांस्कृतिक और शैक्षिक है।

जहाँ नई शिक्षा नीति मातृभाषाओं और जनजातीय भाषाओं के संवर्धन की बात करती है, वहीं झारखंड में इन लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में गंभीर उदासीनता दिखाई दे रही है। प्रदेश के दस विश्वविद्यालयों में से केवल छह में ही इन भाषाओं का पठन-पाठन संचालित हो रहा है, वह भी अपर्याप्त संसाधनों और शिक्षकों की कमी के बीच।

दशकों से सेवा दे रहे प्रोफेसर रिटायर हो रहे हैं, पर उनकी जगहों पर नई नियुक्तियां नहीं हो रही। नीड बेस्ड शिक्षकों की नियुक्ति ने अस्थायी रूप से इस शून्य को भरने की कोशिश की है, किंतु इन शिक्षकों को आज भी संस्थागत स्थायित्व का अधिकार नहीं मिला। यह शासन की एक ऐसी खामोशी है जो धीरे-धीरे इन विभागों के अस्तित्व को निगल रही है।

स्थिति इस कदर बिगड़ चुकी है कि नेट और जेआरएफ जैसी योग्यता रखने वाले छात्र वर्षों तक मार्गदर्शन के अभाव में शोध कार्य प्रारंभ नहीं कर पा रहे। यह केवल प्रशासनिक विफलता नहीं है, बल्कि युवा प्रतिभाओं के आत्मविश्वास और संभावनाओं की हानि है।

इसके दूरगामी परिणाम केवल अकादमिक नहीं होंगे। जनजातीय पर्व—सरहुल, करम, टुसू—जो इन भाषाओं के विद्यार्थियों की कोशिशों से अब भी विश्वविद्यालय परिसरों में जीवित हैं, उनकी सामाजिक स्वीकृति भी धीरे-धीरे क्षीण हो रही है। जब अन्य विषयों के शिक्षक इन्हें ÷नाच-गान÷ कहकर खारिज करते हैं, तब यह न केवल अनुचित है, बल्कि समावेशी शिक्षा के मूल उद्देश्य का मखौल भी है।

यह क्षण आत्मनिरीक्षण का है—राज्यपाल, मुख्यमंत्री, उच्च शिक्षा मंत्री और विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को मिलकर यह ठोस आश्वासन देना होगा कि झारखंड की भाषाएं केवल अतीत नहीं हैं, वे इसका जीवंत वर्तमान और भविष्य भी हैं।

हमारी चुप्पी यदि जारी रही, तो आने वाली पीढ़ियां हमसे पूछेंगी – किस मूल्य पर हमने अपनी पहचान खो दी?

लेखक - हेमन्त अहीर
जनजातीय एवं क्षेत्रिय भाषा विभाग,
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय रांची

## संजय सिंह यादव एक बार फिर बने झारखंड RJD के प्रदेश अध्यक्ष, 2 उम्मीदवारों के नामांकन रद्द

आदिवासी एक्सप्रेस/
लालू कुमार यादव

**हुसैनाबाद, पलामू।** झारखंड में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के प्रदेश अध्यक्ष पद के लिए हुए चुनाव में विधायक संजय सिंह यादव एक बार फिर निर्विरोध चुने गए हैं। 14 जून को अध्यक्ष पद के लिए तीन नेताओं—संजय सिंह यादव, अभय सिंह और सदाकत हुसैन अंसारी—ने नामांकन दाखिल किया था। लेकिन स्क्रूटनी के बाद केवल संजय सिंह यादव का नामांकन वैध पाया गया। राज्य के मुख्य निर्वाची पदाधिकारी गिरधारी गोप ने अभय सिंह और सदाकत हुसैन अंसारी के नामांकन पत्रों में त्रुटि बताते हुए उन्हें खारिज

कर दिया। इसके साथ ही संजय सिंह यादव को राजद के आगामी संगठनात्मक कार्यकाल (2025-28) के लिए प्रदेश अध्यक्ष घोषित कर दिया गया। जारी आधिकारिक पत्र के मुताबिक, एकमात्र वैध उम्मीदवार होने के कारण उनका निर्वाचन निर्विरोध हुआ।

हालांकि, स्क्रूटनी के दौरान विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हुई। पार्टी कार्यालय से बाहर निकलते हुए अभय सिंह ने आरोप लगाया कि नामांकन में प्रस्तावक के तौर पर राज्य परिषद सदस्य की अनिवार्यता का नियम मनमाने ढंग से लागू किया गया। उन्होंने इसे एकतरफा कार्रवाई बताया और विरोध जताया। उनके समर्थक अजीत कुमार मुकुल के साथ मिलकर उन्होंने जोरदार आपत्ति दर्ज कराई, जिससे माहौल तनावपूर्ण हो गया और कार्यालय में पुलिस की तैनाती करनी पड़ी।

दूसरे अपदस्थ उम्मीदवार सदाकत हुसैन अंसारी ने भी नामांकन खारिज होने को अनुचित ठहराया और मामले को पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के सामने उठाने की बात कही है। इधर हुसैनाबाद विधानसभा क्षेत्र मे राजद कार्यकर्ताओं ने खुशी की लहर मौके पर अनुमंडलीय अध्यक्ष खुर्शीद आलम, प्रखंड अध्यक्ष सुदेशवर राम, राजेश सिंह, प्रमोद सिंह, युवा समाज सेवी शिवशंकर यादव, लखन यादव, लालू कुमार यादव, रमेश पासवान सहित कई लोग ने पुनः प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने पर बहुत बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं दिया है?

## आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी बनने की दिशा में बढ रहा है भारतः शाह

**नई दिल्ली।** केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि भारत आपदाओं के प्रबंधन में क्षमता, दक्षता, गति और सटीकता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कर विश्व में अग्रणी देश बनने की दिशा में बढ रहा है। श्री शाह ने सोमवार को यहां राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के राहत आयुक्तों तथा आपदा मोचन बलों के वार्षिक सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि सरकार ने पिछले दो वर्षों में राहत तथा आपदा प्रबंधन से जुड़ी सभी एजेंसियों की विभिन्न कार्यशालाओं को एक ही बैठक के तहत लाकर संपूर्ण सरकार के

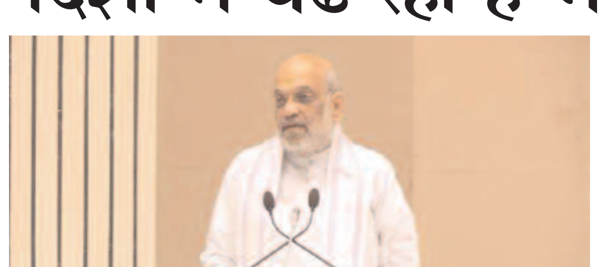

दृष्टिकोण के साथ एक वैचारिक मंच बनाने का काम किया है। उन्होंने कहा कि इससे कमियों को दूर करने और पूरे देश को आपदा से लड़ाई के लिए तैयार करने में मदद मिलती है। उन्होंने कहा कि इससे सभी हितधारक और एजेन्सियां मिलकर अच्छे तालमेल से काम कर पाती हैं। गृह मंत्री ने कहा कि जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण पूरा विश्व आपदाओं से जूझ रहा है। उन्होंने कहा कि पिछले दस वर्षों में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए), राष्ट्रीय आपदा मोचन बल और आपदा प्रतिरोधी अवसंरचना के लिए राष्ट्रीय गठबंधन (सीडीआरआई) के योगदान के कारण भारत आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की दिशा में अग्रसर है।

श्री शाह ने कहा कि जब भी भारत के आपदा प्रबंधन का इतिहास लिखा जाएगा तो मोदी सरकार के ये दस वर्ष परिवर्तनकारी दशक के रूप में दर्ज किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने क्षमता, गति, दक्षता और सटीकता के चारों क्षेत्रों में बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं।

उदयपुर: S B नगर सवीना पुलिस थाना गोवर्धन विलास से 14 क्षेत्र के मोहम्मद पठान ने अपने परिचित ठेकेदार मुर्तजा पिता शमशेर खान निवासी बड़ी मजीद सवीना के ठेकेदार को मकान के प्रथम मंजिल व दूसरी मंजिल का लेबर कॉन्ट्रेक्ट का ठेका दिया। मोहम्मद पठान अध्यापक होने से व्यस्ता के कारण ओर खेरवाड़ा पुस्तैनी घर आने जाने से विश्वास पर मकान का ठेका मुर्तजा को विश्वास पर दे दिया जिसका 4,50000 रु भी एडवांस भुगतान कर दिया 14 दिसंबर को मोहम्मद पठान अध्यापक जैसे ही छत पर पहुंच कर खड़े थे कि छत का सज्जा सहित तीसरी मंजिल से गिर जाने से मोहम्मद पठान बुरी तरह से घायल हो गए हॉस्पिटल पर भर्ती कराया गया ओर डॉक्टरों ने ऑपरेशन कर जान बचाई अब दोनों पैरों से पैरालाइज रीढ़ की हड्डी टूट जाने से दिमागी नस ब्लॉक हो जाने से वे अब उनका दैनिक कार्य भी छह माह से बिस्तर में ही नियमित घर के सदस्यों से करवाए जा रहे है। मोहम्मद पठान का मकान भी घटिया निर्माण की वजह से कोई अन्य ठेकेदार भी काम नहीं कर रहा हैं नहीं मुर्तजा युक्त मकान का निर्माण कर रहा हैं आए दिन मुर्तजा परिवार के सदस्यों को अन्य लोगों से झूठे मामले में फसाने की धमकी देता है और नहीं एडवांस लिया रुपया दे रहा है। मोहम्मद पठान की पत्नी तस्लीम बानो ने जिला पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपकर उक्त ठेकेदार पर कानूनी कार्रवाई कर मकान का कार्य पूर्ण कराने या एडवांस भुगतान दिलाने की मांग की है ।

## आतंकवाद के खिलाफ भारत के दृढ़ रुख पर साइप्रस ने जतायी प्रतिबद्धता

**निकोसिया/नई दिल्ली।** भारत एवं साइप्रस ने अगले पांच साल में अपनी समग्र साझीदारी को रणनीतिक स्वरूप प्रदान करने के इरादे के साथ संयुक्त राष्ट्र में सुधारों को बल देने के साथ ही अंतर्राष्ट्रीय एवं सीमापार आतंकवाद और हिंसक चरमपंथ की कठोर निंदा की तथा आतंकवाद वित्तपोषण नेटवर्क को खत्म करने, सुरक्षित पनाहगाहों एवं आतंकवादी बुनियादी ढांचे को नष्ट करने और आतंकवादियों एवं उन्हें पनाह देने वाले अपराधियों को तेजी से न्याय के कटघरे में लाने का आह्वान किया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की साइप्रस यात्रा के आधिकारिक कार्यक्रम संपन्न होने के साथ ही साइप्रस एवं भारत के

बीच व्यापक साझीदारी के कार्यान्वयन पर संयुक्त घोषणा की गयी है। घोषणा पत्र में दस बिन्दुओं में प्रधानमंत्री की इस यात्रा को ऐतिहासिक और स्थायी साझीदारी की दिशा में मील का पत्थर बताया गया। घोषणापत्र में कहा गया कि प्रधानमंत्री मोदी की दो दशकों से अधिक समय में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की साइप्रस की पहली यात्रा एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है और दोनों देशों के बीच गहरी और स्थायी मित्रता की पुष्टि करती है। यह यात्रा न केवल एक साझा इतिहास का जश्न मनाती है, बल्कि एक दूरदर्शी साझीदारी का भी जश्न मनाती है, जो एक संयुक्त रणनीतिक दृष्टि और आपसी विश्वास और सम्मान में निहित है। घोषणापत्र के अनुसार दोनों नेताओं ने साइप्रस और भारत के बीच बढ़ते व्यापक सहयोग और गहराई को रेखांकित करते हुए द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर व्यापक चर्चा की। उन्होंने आर्थिक, तकनीकी और लोगों के बीच संबंधों में हाल की प्रगति का स्वागत किया, जो संबंधों की गतिशील और विकसित प्रकृति को दर्शाती है। अपने मूल्यों, हितों, अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण और दृष्टिकोण के बढ़ते सरेखण को स्वीकार करते हुए दोनों पक्षों ने प्रमुख क्षेत्रों में इस साझीदारी को और आगे बढ़ाने के लिए अपना दृढ़ संकल्प व्यक्त किया। साइप्रस और भारत क्षेत्रीय और वैश्विक शांति, समृद्धि और स्थिरता में योगदान देने वाले विश्वसनीय और अपरिहार्य भागीदारों के रूप में अपने सहयोग को गहरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। घोषणापत्र में साझा मूल्यों और वैश्विक प्रतिबद्धताओं के बारे में दोनों नेताओं ने शांति, लोकतंत्र, कानून के शासन, प्रभावी बहुपक्षवाद और सतत विकास के प्रति अपनी साझा प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र चार्टर और अंतर्राष्ट्रीय कानून पर आधारित नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के लिए अपने समर्थन की पुष्टि की, जिसमें नौवहन की स्वतंत्रता और संप्रभु समुद्री अधिकारों के संबंध में समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीएलओएस) पर विशेष जोर दिया गया।

## संक्षिप्त समाचार

### फीफा क्लब विश्वकप में यूरोप के दिग्गज क्लबों ने जीत दर्ज की

**न्यूयॉर्क, एजेंसी।** फीफा क्लब विश्व कप में यूरोप के दिग्गज फुटबॉल क्लबों बायर्न म्यूनिख और पेरिस सेंट-जर्मेन ने जीत के साथ शानदार शुरुआत की। इसके अलावा बोटाफोगो ने सिएटल साउंडर्स पर मामूली अंतर से जीत दर्ज की, जबकि पाल्मेरास और पोर्टो के बीच खेला गया मैच गोल रहित ड्रॉ रहा। ग्रुप सी में रविवार को मिडफील्डर जमाल मुसियाला की दूसरे हाफ में लगाई गई हैट्रिक की बदौलत बायर्न म्यूनिख ने ऑकलैंड सिटी पर 10-0 के साथ बड़ी जीत हासिल की, जबकि किंग्सले कोमन और माइकल ओलिस ने दो-दो गोल किए। साचा बोए और थॉमस मुलर और अन्य ने भी एक-एक गोल दागे। बायर्न की जीत क्लब विश्व कप के इतिहास में सबसे बड़ी जीत है, जिसने 2021 में अल-हिलाल की अल जज़ीरा पर 6-1 की जीत को पीछे छोड़ दिया। ग्रुप बी में नयी यूरोपीय चैंपियन पेरिस सेंट-जर्मेन ने दोनों हाफ में दो गोल करके कैलिफोर्निया के पासाडेना में रोज बाउल में 80 हजार से अधिक प्रशंसकों के सामने एटलेटिको मैड्रिड पर 4-0 की जीत हासिल की। ब्राजील के पाल्मेरास और पुर्तगाली टीम पोर्टो ने न्यू जर्सी के मेटलाइफ स्टेडियम में ग्रुप ए के अपने मुकाबले में गोलरहित ड्रॉ खेला। ग्रुप बी के दूसरे मुकाबले में सीरी ए चैंपियन बोटाफोगो ने एमएलएस क्लब सिएटल साउंडर्स पर 2-1 से जीत हासिल की। जैर और इगोर जीसस के हेडर ने हाफटाइम तक बोटाफोगो को 2-0 की बढ़त दिलाई, लेकिन क्रिस्टियन रोल्डन ने गोलकर जीत के अंतर को कम कर दिया।

### हायरॉक्स इंडिया ने 2025-26 सीजन का पूरा कैलेंडर जारी किया, दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु में होंगी रेस

**नई दिल्ली, एजेंसी।** दुनिया भर में मशहूर फिटनेस रेस हायरॉक्स ने भारत के लिए 2025-26 सीजन (जुलाई 2025 से जून 2026) का अपना पूरा कैलेंडर जारी कर दिया है। इस ऐलान के साथ भारत में हायरॉक्स की पहली पूर्ण सीजन की शुरुआत हो रही है, जो देश में फिटनेस संस्कृति को एक नई पहचान देने जा रही है। मुंबई में इस साल की शुरुआत में सफल डेब्यू के बाद अब हायरॉक्स इंडिया तीन प्रमुख शहरों में अपने कार्यक्रम आयोजित करेगा, जो इस प्रकार है।

दिल्ली - 19 जुलाई 2025
मुंबई - 7 सितंबर 2025
बेंगलुरु - 11 अप्रैल 2026

यह भारत में हायरॉक्स का पहला फुल-सीजन होगा, जो देश में इसके दीर्घकालिक विकास और व्यापक क्षेत्रीय भागीदारी की नींव रखेगा। हायरॉक्स इंडिया के प्रमुख दीपक राज ने कहा, यह भारत का हायरॉक्स सीजन है। हम एक मल्टी-सिटी कैलेंडर के साथ देशभर में लौट रहे हैं, जो हर कोने के फिटनेस प्रेमियों को आमंत्रित करता है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक, हम एक ऐसी फिटनेस कम्युनिटी बना रहे हैं जो प्रतिस्पर्धात्मक भी है और समावेशी भी।

हायरॉक्स एक अनूठा फिटनेस इवेंट है, जिसमें प्रतिभागियों को 8 बार - 1 किलोमीटर की दौड़ और 1 वर्कआउट स्टेशन से गुजरना होता है। यह फॉर्मेट इस तरह से डिज़ाइन किया गया है कि इसमें पेशेवर एथलीट से लेकर आम फिटनेस प्रेमी तक हर कोई भाग ले सकता है। यही कारण है कि इसे हर किसी के लिए खेल कहा जाता है।

भारत में हायरॉक्स की एंट्री ऐसे समय हो रही है जब देश में फिटनेस के प्रति उत्साह बढ़ रहा है और लोग सामूहिक प्रतिस्पर्धाओं की ओर आकर्षित हो रहे हैं। तीन बड़े शहरों में होने वाले आयोजनों के जरिए हायरॉक्स खुद को एक राष्ट्रीय फिटनेस स्पोर्ट के रूप में स्थापित कर रहा है। इस सीजन के दौरान भारतीय प्रतिभागियों को हायरॉक्स वर्ल्ड चैंपियनशिप 2026 के लिए क्वालिफाई करने का भी अवसर मिलेगा, जिससे उनकी स्थानीय यात्रा को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचने का मौका मिलेगा।

हायरॉक्स के सह-संस्थापक और दो बार के ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता मोरित्ज़ फ्यूर्स्टे ने कहा, भारत हायरॉक्स के लिए सबसे उत्साहजनक नए बाजारों में से एक है। यहां की ऊर्जा, जनसंख्या और संभावनाएं वाकई जबरदस्त हैं। जिस गति से यहां रुचि बढ़ रही है, वह हम सभी के लिए प्रेरणादायक है।

हायरॉक्स इंडिया अब अपने विस्तारित कैलेंडर, मजबूत समुदाय और तेजी से बढ़ती पहचान के साथ देश की फिटनेस और खेल संस्कृति में एक नए अध्याय की शुरुआत करने जा रहा है।

### मार्नस लाबुशेन को टॉप ऑर्डर में बनाए रखना चाहते हैं जस्टिन लैंगर

**मेलबर्न, एजेंसी।** ऑस्ट्रेलिया के पूर्व सलामी बल्लेबाज जस्टिन लैंगर ने टीम को सलाह दी है कि वह मार्नस लाबुशेन को टॉप ऑर्डर में बनाए रखें। इसके साथ ही उन्होंने इस खिलाड़ी को टीम के लिए महत्वपूर्ण कड़ी बताया है। लैंगर ने पर्थ में 'स्टेट ऑफ ओरिजिन रग्बी लीग सीरीज' की तैयारियों के दौरान पत्रकारों से कहा, "मार्नस 50 टेस्ट मैच खेल चुके हैं। वह दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी रहे हैं। उनका औसत (46.19) अभी भी अच्छा है। सभी खिलाड़ी ऐसे दौर से गुजरते हैं। अगर आप रन नहीं बना रहे, तो सुर्खियों में रहेंगे। अगर मार्नस अच्छा नहीं खेल रहे, तो एक बड़ा अंतर आ जाता है, क्योंकि ट्रेविस हेड निचले क्रम में बल्लेबाजी करते हैं। इसलिए वह टीम के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण कड़ी हैं।" उन्होंने आगे कहा, "अगर मैं ऑस्ट्रेलियाई मैनेजमेंट में होता, तो अपना पूरा फोकस मार्नस को बेहतर प्रदर्शन करने पर करता। मुझे यकीन है कि वह ऐसा कर रहे हैं।" ऑस्ट्रेलिया को आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में दक्षिण अफ्रीका से पांच विकेट से हार का सामना पड़ा था, जिसके बाद लाबुशेन को आगामी सीरीज में मौका मिलना मुश्किल नजर आ रहा है। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खिताबी मैच में लाबुशेन को ओपनिंग के लिए भेजा गया था, लेकिन वह 17 और 22 रन की पारी ही खेल सके। इसी के साथ उन्होंने दो साल के डब्ल्यूटीसी चक्र को 27.82 के साधारण औसत के साथ समाप्त किया।

### पूर्व क्रिकेटरों की राय, इंग्लैंड जीतेगा श्रृंखला लेकिन भारत कड़ी चुनौती देगा

**नई दिल्ली।** ऑस्ट्रेलिया के पूर्व सलामी बल्लेबाज मैथ्यू हेडन का मानना है कि अगर भारत लीड्स और मैनचेस्टर में मैच जीतने में सफल रहता है तो उसके पास इंग्लैंड के खिलाफ आगामी टेस्ट श्रृंखला जीतने का शानदार मौका होगा, लेकिन दक्षिण अफ्रीका के पूर्व तेज गेंदबाज डेल स्टेन ने पांच मैच की श्रृंखला में मेजबान टीम को 3-2 से जीत का दावेदार बताया। भारत और इंग्लैंड पांच मैचों की श्रृंखला के साथ अपने नए विश्व टेस्ट चैंपियनशिप चक्र की शुरुआत करेंगे। इस श्रृंखला का पहला मैच शुक्रवार से लीड्स में खेला जाएगा। मैनचेस्टर 23 जुलाई से चौथे टेस्ट की मेजबानी करेगा। हेडन ने जियो हॉटस्टार पर कहा, मुझे नहीं लगता कि इंग्लैंड के गेंदबाज इतने अच्छे हैं। उसके कई गेंदबाज चोटिल हैं और कई खिलाड़ी संन्यास ले चुके हैं। उसके लिए यही बड़ी चुनौती होगी। उन्होंने कहा, उत्तरी इंग्लैंड में होने वाले टेस्ट मैच काफी महत्वपूर्ण होंगे। भारत अगर इन मैच में जीत हासिल कर लेता है तो वह श्रृंखला अपने नाम कर सकता है। भारत के इंग्लैंड के पिछले दौरे के बाद से मेजबान टीम के दो सबसे अनुभवी गेंदबाजों जेम्स एंडरसन और स्टुअर्ट ब्रॉड ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। यही नहीं इंग्लैंड के कुछ प्रमुख तेज गेंदबाज चोटिल हैं।

# म्यूनिख आईएसएसएफ वर्ल्ड कप 2025 : भारत ने दो स्वर्ण, दो कांस्य के साथ पदक तालिका में हासिल किया तीसरा स्थान

**म्यूनिख, एजेंसी।** जर्मनी के म्यूनिख में आयोजित तीसरे आईएसएसएफ वर्ल्ड कप 2025 में भारत की 36 सदस्यीय टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कुल चार पदक अपने नाम किए। इसमें दो स्वर्ण और दो कांस्य पदक शामिल हैं। इस प्रदर्शन के साथ भारत ने पदक तालिका में तीसरा स्थान हासिल किया, जिससे आगे केवल चीन और नॉर्वे ही रहे।

दो बार की ओलंपियन और गन फॉर ग्लोरी अकादमी में प्रशिक्षण ले रहीं एलेवनिल वलारिवन ने भारत का पदक खाता खोला। उन्होंने महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में कांस्य पदक जीता, जिसमें उन्होंने 231.2 का स्कोर किया। इसके अलावा उन्होंने क्वालिफिकेशन राउंड में 635.9 अंक हासिल कर नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड भी बनाया।

वहीं, 50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन इवेंट में भारत की सिफ्ट कौर समरा ने 453.1 अंक के साथ कांस्य पदक अपने नाम किया। 19 वर्षीय सुरुचि सिंह ने म्यूनिख में महिला 10 मीटर एयर पिस्टल में 241.9 के स्कोर के साथ स्वर्ण पदक जीतकर वर्ल्ड कप 2025 में अपना तीसरा गोल्ड हासिल किया। इससे पहले वह ब्यूनस आयर्स और लीमा में भी स्वर्ण पदक जीत चुकी थीं।

पुरुष और महिला मिश्रित टीम 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में अर्जुन बबूटा और आर्या बोर्से की जोड़ी ने चीनी टीम को 17-7 से हराकर भारत को एक और स्वर्ण पदक दिलाया। एक अन्य प्रतिभाशाली गन फॉर ग्लोरी खिलाड़ी मद्देनेनी उमामहेश ने भी पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में क्वालिफिकेशन राउंड में 632.3 अंक हासिल कर टॉप 8 में जगह बनाई।

अपनी सफलता पर प्रतिक्रिया देते हुए एलेवनिल वलारिवन ने कहा, हम हर दिन देश के लिए कुछ हासिल करने के सपने के साथ ट्रेनिंग करते हैं। मैं गन फॉर ग्लोरी और विशेष रूप से कोच नेहा चव्हाण की आभारी हूं, जिनके मार्गदर्शन ने मुझे इस मुकाम तक पहुंचाया। अपने नए राष्ट्रीय रिकॉर्ड को लेकर उन्होंने कहा, रिकॉर्ड बनाना मेरे और मेरे कोचों की मेहनत का फल है। मैंने क्वालिफिकेशन में सिर्फ अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास किया और खुशी है कि परिणाम सकारात्मक रहा। लंदन ओलंपिक 2012 के कांस्य पदक विजेता और गन फॉर ग्लोरी के संस्थापक गगन नारंग ने टीम के प्रदर्शन पर कहा, भारतीय खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अच्छा करते देखना अत्यंत गर्व और संतोषजनक है। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मैं खेल में योगदान दे पा रहा हूं और युवा खिलाड़ियों को आगे बढ़ते देख रहा हूं।

# डीडीसीए ने राजधानी में शुरू की मेगा टी20 क्रिकेट लीग, 104 क्लबों की होगी टक्कर

**नई दिल्ली, एजेंसी।** दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ (डीडीसीए) ने राजधानी की सबसे बड़ी और बहुप्रतीक्षित टी20 क्रिकेट प्रतियोगिता का भव्य शुभारंभ कर दिया है। इस इंटर-क्लब टूर्नामेंट की शुरुआत आज सेंट स्टीफंस कॉलेज ग्राउंड में हुई, जहां क्रिकेट प्रेमियों, खिलाड़ियों और अधिकारियों की उत्साही मौजूदगी देखने को मिली। यह टूर्नामेंट न केवल स्थानीय क्रिकेट को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का प्रयास है, बल्कि युवा प्रतिभाओं के लिए एक सुनहरा मंच भी साबित होगा।

प्रतियोगिता का पहला मुकाबला मद्रास क्रिकेट क्लब और यॉर्क्स क्रिकेट क्लब के बीच खेला गया, जिससे टूर्नामेंट की रोमांचक शुरुआत हुई। कुल 104 क्लब इस मेगा इवेंट में हिस्सा ले रहे हैं, जिन्हें ग्रुप चरण के लिए 9 पूलों में विभाजित किया गया है। उद्घाटन समारोह में डीडीसीए के सचिव अशोक शर्मा, निदेशक श्याम शर्मा, लीग समिति के सह-अध्यक्ष डॉ. अहमद तमीम, सह-संयोजक हर्ष गुप्ता और वरिष्ठ सचिव प्रमोद जैन व शर्वन कुमार मौजूद रहे। सभी ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए टूर्नामेंट की सफलता की कामना की।

डीडीसीए अध्यक्ष रोहन जेटली ने इस पहल पर खुशी जताते हुए कहा, यह टूर्नामेंट दिल्ली क्रिकेट की जड़ों को और मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हमारा उद्देश्य है कि उभरते हुए खिलाड़ियों को प्रतिस्पर्धात्मक माहौल मिले, जहां वे सीखें, निखरें और आगे बढ़ें। मुझे विश्वास है कि इस आयोजन से कई प्रतिभाशाली खिलाड़ी सामने आएंगे, जो भविष्य में दिल्ली और भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।

डीडीसीए की इस पहल का उद्देश्य स्थानीय क्रिकेटरों को अधिक मैच खेलने का अवसर देना, प्रतिभा की पहचान करना और क्रिकेट संस्कृति को नई ऊर्जा प्रदान करना है।

# डब्ल्यूटीसी फाइनल में मार्करम की शतकीय पारी के मुरीद हुए रिकी पोंटिंग

**मेलबर्न, एजेंसी।** विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) के फाइनल में दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाज एडेन मार्करम ने 136 रन की पारी खेली। उनके इस शतक ने विपक्षी ऑस्ट्रेलिया टीम के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग को भी प्रभावित किया है। एडेन मार्करम को खराब प्रदर्शन के चलते 2022/23 सीजन में ऑस्ट्रेलियाई टीम से बाहर कर दिया गया था, लेकिन इसके बाद वेस्टइंडीज के खिलाफ 115 रन की पारी और केपटाउन में भारत के विरुद्ध एक और शतक के साथ इस खिलाड़ी ने टेस्ट में वापसी का संकेत दिया।

आईसीसी डिजिटल पर रिकी पोंटिंग ने मार्करम की तारीफ करते हुए कहा, "जब टीम को आपकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है, तब उस तरह का प्रदर्शन करने में सक्षम होना ही आपको सम्मान दिलाता है। मुझे लगता है कि हर कोई हमेशा से जानता है कि एडेन मार्करम कितने अच्छे खिलाड़ी हैं। कुछ साल पहले जब दक्षिण अफ्रीका ने ऑस्ट्रेलिया का दौरा किया, तो मुझे यकीन है नहीं हुआ कि एडेन मार्करम उस दौरे वाली टीम में नहीं थे। वह टीम में जगह भी नहीं बना पाए।"

उन्होंने आगे कहा, "और अब हम दो साल बाद यहां हैं। मार्करम ने यहां शायद अपनी सबसे बेहतरीन पारियों में से एक खेली है। मुझे यकीन है कि अगर आप उनसे पूछेंगे, तो वह शायद यही कहेंगे कि उन्हें टेस्ट करियर में अपनी इस पारी पर ज्यादा गर्व है। मुझे पूरा यकीन है कि उनके साथी खिलाड़ी जिन्होंने यह सब देखा, शायद यही बात कहेंगे। इसलिए, यह उनके लिए एक बड़ी व्यक्तिगत उपलब्धि है। यह दक्षिण अफ्रीकी टीम के लिए एक शानदार उपलब्धि है।" रिकी पोंटिंग ने कहा, "जब आप बड़े आईसीसी इवेंट्स को देखते हैं, तो मुझे लगता है कि पहली चीज जो शायद दिमाग में आती है, वह है विश्व कप फाइनल। विश्व कप फाइनल में ट्रेविस हेड की पारी, और पिछला विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल।"

# 17 जून से श्रीलंका-बांग्लादेश के बीच टेस्ट सीरीज, एंजेलो मैथ्यूज के लिए बेहद खास होगा पहला मैच

**कोलंबो, एजेंसी।** श्रीलंका और बांग्लादेश के बीच दो टेस्ट मैचों की सीरीज 17 जून से शुरू होने जा रही है। पहला मैच गाले और दूसरा कोलंबो में खेला जाएगा। टेस्ट सीरीज के अलावा श्रीलंका दौरे पर बांग्लादेश की टीम तीन मुकाबलों की वनडे सीरीज और इतने ही मैचों की टी20 सीरीज खेलेगी। श्रीलंका और बांग्लादेश के बीच क्रिकेट इतिहास में अब तक 26 टेस्ट खेले गए हैं, जिसमें 20 श्रीलंका ने अपने नाम किए। बांग्लादेश की टीम श्रीलंका के खिलाफ महज एक ही टेस्ट जीत सकी है। वहीं, पांच मुकाबले ड्रॉ रहे हैं। दोनों देशों के बीच पहला टेस्ट सितंबर 2001 में खेला गया था। बांग्लादेश ने जो इकलौता टेस्ट इस देश के खिलाफ जीता, वह मार्च 2017 में खेला गया था।

धनंजय डी सिल्वा की कप्तानी में श्रीलंकाई टीम अपने नए वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप चक्र की शुरुआत करने जा रही है। बांग्लादेश के खिलाफ चुनी गई टीम में कई नए खिलाड़ियों को श्रीलंकाई टीम में शामिल किया गया है। इनमें पवन रत्नायके, इसिथा विजेसुंदरा और पसिंदु सूरियाबंडारा नए चेहरे हैं। इस टीम में सोनल दिनुषा और लाहिरु उदारा अपनी जगह बचाने में कामयाब रहे हैं, जबकि स्क्वॉड में चुने गए चोटिल तेज गेंदबाज लाहिरु कुमारा पहला टेस्ट नहीं खेल सकेंगे। बांग्लादेश की कमान नजमुल हुसैन शांतो के हाथों में है। मेहदी हसन मिराज, लिटन दास, इबादत हुसैन और शादमान इस्लाम से फैंस को खासा उम्मीदें होंगी।

बांग्लादेश और श्रीलंका की टीमें पहला टेस्ट गाले में 17-21 जून के बीच खेलेंगी। दूसरा मुकाबला कोलंबो में 25-29 जून के बीच खेला जाना है। सीरीज का पहला टेस्ट मैच एंजेलो मैथ्यूज के लिए बेहद खास होगा। मैथ्यूज पहले ही ऐलान कर चुके हैं कि बांग्लादेश के खिलाफ इस सीरीज का शुरुआती टेस्ट मुकाबला, उनके करियर का अंतिम टेस्ट होगा। इसके साथ ही मैथ्यूज कह चुके हैं कि अगर जरूरत होगी, तो वह व्हाइट बॉल फॉर्मेट के लिए उपलब्ध रहेंगे।

### भारतीय महिला हॉकी टीम अर्जेंटीना के खिलाफ झोंकेगी पूरा दमखम

**लंदन, एजेंसी।** ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ करीबी हार के बाद अब भारतीय महिला हॉकी टीम एफआईएच प्रो लीग 2024-25 (महिला) के लंदन चरण में वर्ल्ड नंबर 2 अर्जेंटीना के खिलाफ होने वाले मुकाबलों के लिए पूरी तरह तैयार है। दोनों टीमें 17 और 18 जून को ली वैली हॉकी एंड टेनिस सेंटर लंदन में आमने-सामने होंगी। एफआईएच प्रो लीग (महिला) अंक तालिका में भारत इस समय 9 अंकों के साथ 7वें स्थान पर है, जबकि अर्जेंटीना 12 में से 7 मुकाबले जीतकर दूसरे स्थान पर काबिज है। टीम की कप्तान सलीमा टेटे ने आगामी मुकाबलों को लेकर एक बयान में कहा, "अर्जेंटीना दुनिया की नंबर 2 टीम है और उनका अब तक का प्रदर्शन शानदार रहा है। हम जानते हैं कि उन्हें हराना आसान नहीं होगा, लेकिन हम पूरे आत्मविश्वास के साथ उतरेंगे और दोनों मुकाबलों में अपना शत-प्रतिशत देंगे। टीम ने अर्जेंटीना को टक्कर देने के लिए कई रणनीतियों पर काम किया है।

उपकप्तान नवनीत कौर ने कहा, "जैसा कि आपने देखा, टीम ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भी कड़ी टक्कर दी थी और हम वही रवैया अर्जेंटीना के खिलाफ भी दिखाएंगे। उनके खिलाफ जीत से न सिर्फ अंक मिलेंगे, बल्कि बेल्जियम और चीन के खिलाफ एंटवर्प व बर्लिन में होने वाले मुकाबलों से पहले टीम का आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। भारतीय महिला टीम अर्जेंटीना के खिलाफ पहला मुकाबला 17 जून को और दूसरा 18 जून को खेलेगी। दोनों मुकाबले लंदन के ली वैली हॉकी एंड टेनिस सेंटर में होंगे।

### टीम एमजीडी1 विश्व ब्लिट्ज़ टीम चैम्पियनशिप में पांचवें स्थान पर रही

**लंदन।** मुख्य रूप से भारतीय खिलाड़ियों से सजी टीम एमजीडी1 ने फिडे विश्व ब्लिट्ज टीम चैम्पियनशिप में टीम फ्रीडम को हराकर पांचवां स्थान हासिल किया। इससे पहले उसने यहां टूर्नामेंट में रैपिड वर्ग का खिताब जीता था। डब्ल्यूआर चेस ने काज़चेस को हराकर 2023 में यह प्रतियोगिता शुरू होने के बाद से अपना दूसरा ब्लिट्ज़ खिताब हासिल किया। ग्रैंडमास्टर अर्जुन एरिगैसी की मौजूदगी वाली टीम एमजीडी1 ने पहले ही 16 टीमों के नॉकआउट में जगह बना ली थी। उसने पहले दौर में जेनरेशन एक्सवाइजेडए को 4-0 से हराया था। लेकिन एरिगैसी, पी हरिकृष्णा, डेविड गुज़ारो, वी. प्रणव, लियोन ल्यूक मेंडोंका, स्टावरौला त्सोलाकिडो और अथर्व तायडे की टीम को क्वार्टर फाइनल में हेक्सामाइंड चेस टीम के हाथों 2-4 से हार का सामना करना पड़ा। हेक्सामाइंड की टीम में अमेरिका के लेवोन अरोनियन और भारत के विदित गुजराती जैसे खिलाड़ी शामिल थे। पांचवें स्थान के प्लेऑफ मुकाबले में एमजीडी1 ने फ्रीडम को दोनों मैचों में 4-2 से हराया। टीम फ्रीडम की अगुवाई पूर्व विश्व चैंपियन विश्वनाथन आनंद कर रहे थे।

### जिसे समझा अपना 'आइडल', उसी के साथ इंग्लैंड दौरे पर खेलेंगे साईं सुदर्शन

**नई दिल्ली, एजेंसी।** भारत-इंग्लैंड के बीच 20 जून से लीड्स में टेस्ट सीरीज की शुरुआत होने जा रही है। इसी बीच शानदार फॉर्म से चल रहे बाएं हाथ के बल्लेबाज बी साई सुदर्शन ने खुलासा किया है कि तमिलनाडु टीम के साथी खिलाड़ी वाशिंगटन सुंदर उनके प्रेरणास्रोत रहे हैं। ऐसा पहली बार है, जब वॉशिंगटन सुंदर और साई सुदर्शन इंग्लैंड दौरे पर टेस्ट टीम का हिस्सा रहे हैं।

सुदर्शन ने 'बीसीसीआईडॉटटीवी' पर पोस्ट किए गए एक वीडियो में कहा, "जब मैं युवा था, तब से ही वाशिंगटन मेरे प्रेरणास्रोत रहे हैं। मैंने उनके खिलाफ कुछ मैच खेले हैं, इसलिए यह हमेशा खास होता है। ईमानदारी से कहूं तो मैंने उनसे बहुत प्रेरणा ली है। जिस तरह से वह आगे बढ़े और देश के लिए खेले, वह वाकई बहुत शानदार था।" उल्लेखनीय है कि आईपीएल में कुछ साल अच्छा खेलने के बाद वाशिंगटन सुंदर को भारत की सीनियर टीम में खेलने का मौका मिला था। साईं सुदर्शन ने आगे बताया, "जब मैं छोटा था, तब से उन्हें जानता हूं। उनके साथ खेलता हूं। यह एक तरह की प्रेरणा है। इससे मुझे लगा कि मैं भी उसी तरह से खेलना चाहता हूं। वह बचपन से ही मेरे लिए प्रेरणा रहे हैं।

आईपीएल 2025 में ऑरेंज कैप जीतने वाले सुदर्शन भारत के लिए तीन वनडे और एक टी20 मैच खेल चुके हैं। प्रथम श्रेणी क्रिकेट में वह प्रभावशाली नजर आए हैं। सुदर्शन ने काउंटी टीम सरे के लिए दो सत्रों में 281 रन बनाए। इसी के साथ उन्होंने टीम को चैंपियनशिप जिताने में अहम रोल निभाया।

# अर्जुन बाबूटा ने शूटिंग लीग ऑफ इंडिया के लॉन्च पर कहा, अब इस खेल को मिलेगा उसका हकदार सम्मान

**नई दिल्ली, एजेंसी।** शूटिंग लीग ऑफ इंडिया (एसएलआई) की पहली सीजन की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है और देश के निशानेबाज इस अनोखे कॉन्सेप्ट को लेकर बेहद उत्साहित हैं। नेशनल राइफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एनआरएआई) द्वारा शुरू की जा रही इस लीग का उद्देश्य शूटिंग स्पोर्ट की बढ़ती लोकप्रियता और अंतरराष्ट्रीय मंच पर हालिया सफलताओं को और मजबूती देना है। 2024 पेरिस ओलंपिक में भारत ने शूटिंग में तीन पदक जीतकर इतिहास रचा था और हाल ही में अर्जुन बाबूटा और आर्या बोर्से की जोड़ी ने आईएसएसएफ वर्ल्ड कप (राइफल/पिस्टल) में 10 मीटर एयर राइफल मिक्स्ड टीम इवेंट में गोल्ड मेडल जीतकर भारत की निरंतर श्रेष्ठता को दोहराया। ओलंपियन अर्जुन बाबूटा का मानना है कि यह लीग इस खेल की दिशा और दशा दोनों को बदलने की क्षमता रखती है। उन्होंने कहा, "हर कोई इस लीग को लेकर बहुत उम्मीदें रखता है। हमारे मन में जितनी कल्पनाएं चल रही हैं, उतनी शायद किसी अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट को लेकर नहीं हुई। मेरा मानना है कि इस तरह की लीग से खेल को हर स्तर पर बढ़ावा मिलेगा और यह अपने हकदार पहचान तक पहुंचेगा। अब हम बस इसके अगले कदमों का इंतजार कर रहे हैं।

अपने शांत स्वभाव और अनुशासन के लिए पहचाने जाने वाले अर्जुन ने एक आधिकारिक बयान में आगे कहा, "मैं हमेशा कार्य पर ध्यान देने में विश्वास करता हूं, परिणाम की अपेक्षा नहीं करता। मैं शूटिंग का आनंद लेता हूं और मेरा ध्यान उसी पर रहता है। अगर कोई व्यक्ति किसी विशेष सोच से खुद को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित कर सकता है, तो वह भी अच्छा है।

हालांकि शूटिंग मुख्यतः व्यक्तिगत खेल है, लेकिन यह फ्रेंचाइज़ी आधारित लीग खिलाड़ियों को टीम माहौल में खेलने का मौका देगी। अर्जुन बाबूटा इस फॉर्मेट से पहले ही परिचित हैं, क्योंकि वह जर्मनी की प्रतिष्ठित शूटिंग बुंदेसलीगा में एक क्लब के लिए खेल चुके हैं।

उन्होंने बताया, "मैं जर्मनी की टीम लीग का हिस्सा रह चुका हूं और वहां के सिस्टम से परिचित हूं। टीम का हिस्सा बनना एक अलग अनुभव होता है - यह रोमांचक होता है, दबाव भी कम होता है और खेल का आनंद भी आता है। दर्शकों के लिए भी यह फॉर्मेट बेहद मनोरंजक साबित होगा। आईएसएसएफ द्वारा इस लीग के आयोजन के लिए 20 नवंबर से 2 दिसंबर 2025 तक का समय निर्धारित किया गया है। लीग में पिस्टल (10 मीटर, 25 मीटर), राइफल (10 मीटर, 50 मीटर 3 पोजिशन) और शॉटगन (ट्रैप और स्कीट) के मिक्स्ड टीम इवेंट्स होंगे, जिन्हें एनआरएआई की तकनीकी समिति से मंजूरी मिल चुकी है।

# भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की स्थिति में: मोदी

**निकोसिया (साइप्रस), एजेंसी।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि भारत जल्द ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। उन्होंने साइप्रस की कंपनियों से लिए देश में उपलब्ध असंख्य आर्थिक अवसरों का उल्लेख भी किया। मोदी तीन देशों की अपनी यात्रा के पहले चरण में साइप्रस पहुंचे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलिडेस के साथ रविवार को निकोसिया में व्यापारिक गोलमेज बैठक में हिस्सा लिया। विदेश मंत्रालय ने नई दिल्ली में जारी एक बयान में कहा कि प्रधानमंत्री ने पिछले 11 वर्षों में भारत में हुए तेज आर्थिक बदलावों का उल्लेख किया और कहा कि

अगली पीढ़ी के सुधारों, नीतिगत पूर्वानुमेयता, स्थिर राजनीति एवं व्यापार में आसानी से देश, दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बन गया है। नवाचार, डिजिटल क्रांति, स्टार्ट-अप और भविष्योन्मुखी बुनियादी ढांचे के विकास को प्राथमिकता दिए जाने पर जोर देते हुए उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भारत कुछ ही वर्षों में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की स्थिति में है।

मोदी ने कहा, भारत जल्द ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। भारत सबसे बड़ी उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। हमने कर सुधार, वस्तु एवं सेवा कर, युक्तिसंगत कॉर्पोरेट कर, गैर-अपराधीकरण कानूनों को लागू किया है और व्यापार करने में सुगमता के साथ-साथ व्यापार करने के भरोसे पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। बयान के अनुसार, मोदी ने कहा कि भारत के नागर विमानन, बंदरगाह, जहाज निर्माण, डिजिटल भुगतान और हरित विकास क्षेत्रों में लगातार वृद्धि ने साइप्रस की कंपनियों के लिए भारत के साथ साझेदारी करने के असंख्य अवसर खोले हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा, 23 वर्ष में पहली बार किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने साइप्रस की यात्रा की है और पहला आयोजन व्यापारिक गोलमेज बैठक के रूप में किया गया है। यह भारत-साइप्रस संबंधों में व्यापारिक दिग्गजों के महत्व को दर्शाता है। उन्होंने भारत की कुशल प्रतिभा और स्टार्ट-अप परिवेश की ताकत का भी उल्लेख किया। विनिर्माण, कृत्रिम मेधा (एआई), क्वांटम, सेमीकंडक्टर और महत्वपूर्ण खनिजों को उन्होंने भारत की विकास कहानी में योगदान देने वाले नए एवं उभरते क्षेत्र करार दिया। प्रधानमंत्री ने साथ ही कहा कि साइप्रस भारत के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक साझेदार है, विशेष रूप से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के क्षेत्र में.. उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था में नए निवेश के लिए साइप्रस की गहरी रुचि का स्वागत किया।

मोदी ने द्विपक्षीय संबंधों में विकास की अपार संभावनाओं का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि साइप्रस लंबे समय से भारत का एक विश्वसनीय साझेदार रहा है। मोदी ने साइप्रस को एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल बताया और कहा कि भारत भी पर्यटन स्थल के विकास और प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, इसलिए हमारे यात्रा संचालकों के बीच घनिष्ठ सहयोग दोनों पक्षों के लिए हितकारी हैं। उन्होंने कहा कि कई अन्य क्षेत्रों में भी इस तरह के सहयोग की संभावनाएं हैं।

# थोक महंगाई दर मई में 14 महीने के निचले स्तर 0.39 प्रतिशत पर रही

**नई दिल्ली, एजेंसी।** भारत में थोक मूल्य सूचकांक पर आधारित महंगाई दर मई में 14 महीनों के निचले स्तर 0.39 प्रतिशत पर पहुंच गई है। इससे पहले अप्रैल में यह 0.85 प्रतिशत थी। सरकार की ओर से सोमवार को जारी किए गए आंकड़ों में यह जानकारी दी गई। यह लगातार तीसरा महीना है जब थोक महंगाई दर में कमी देखने को मिली है। इससे पहले मई 2024 में थोक महंगाई दर 2.74 प्रतिशत थी। केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक, मई 2025 में खाद्य, ईंधन और प्राथमिक वस्तुओं सहित ज्यादातर श्रेणियों में महंगाई कम हुई है। बीते महीने खाद्य वस्तुओं की थोक महंगाई दर कम होकर 1.72 प्रतिशत

हो गई है, जो कि अप्रैल में 2.55 प्रतिशत थी। यह ट्रेंड दिखाता है कि देश में खाद्य वस्तुओं की कीमतों में कमी आ रही है। खाद्य वस्तुओं की श्रेणी में सब्जियों की महंगाई दर मई में घटकर -21.62 प्रतिशत रह गई, जो अप्रैल में -18.26 प्रतिशत थी। मई महीने में दालों में महंगाई दर -10.41 प्रतिशत रही, जबकि गेहूं की महंगाई दर 5.75 प्रतिशत रही। अंडे, मांस और मछली की महंगाई दर अप्रैल में -0.29 प्रतिशत से घटकर मई में -1.01 प्रतिशत रह गई। आलू और प्याज की महंगाई दर क्रमशः -29.42 प्रतिशत और -14.41 प्रतिशत रही। मई में ईंधन और ऊर्जा पर महंगाई दर (-)2.27 प्रतिशत रही है, जो कि अप्रैल में (-) 2.18 प्रतिशत थी।

प्राथमिक वस्तुओं के लिए महंगाई दर मई में कम होकर (-) 2.02 प्रतिशत रह गई है, जो कि अप्रैल में (-) 1.44 प्रतिशत थी। डब्ल्यूपीआई मुख्य महंगाई दर, जिसमें फूड और फ्यूल नहीं शामिल होता है, घटकर 0.9 प्रतिशत हो गई है, जो कि अप्रैल में 1.5 प्रतिशत थी। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, मैन्युफैक्चरिंग प्रोडक्ट्स पर महंगाई दर मई में 2.04 प्रतिशत रही है, जो कि अप्रैल में 2.62 प्रतिशत थी।

# वाटरवेज लीजर टूरिज्म ने आईपीओ के लिए सेबी के समक्ष डीआरएचपी दाखिल किया

**मुंबई, एजेंसी।** वाटरवेज लीजर टूरिज्म ने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के जरिये धन जुटाने के लिए भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के समक्ष अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) फिर से दाखिल किया है। कंपनी का लक्ष्य इस आईपीओ के माध्यम से 727 करोड़ रुपये जुटाना है। इसके शेयर एनएसई और बीएसई दोनों स्टॉक एक्सचेंज पर सूचीबद्ध होंगे। पूंजी बाजार नियामक सेबी के समक्ष जमा दस्तावेज के मुताबिक वाटरवेज लीजर टूरिज्म लिमिटेड का 10 रुपये के अंकित मूल्य वाला यह आईपीओ पूरी तरह से 727 करोड़ रुपये तक के शेयरों का एक नया इश्यू है, जिसमें कोई

बिक्री के लिए प्रस्ताव नहीं है। इस ऑफर का योग्य संस्थागत खरीदारों के लिए आवंटन न्यूनतम 75 फीसद निर्धारित किया गया है, जबकि 15 फीसदी गैर-संस्थागत निवेशकों के लिए और 10 फीसदी खुदरा निवेशकों के लिए आरक्षित है। सेंट्रम कैपिटल लिमिटेड, इंटेंसिव फिस्कल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड और मोतीलाल ओसवाल इन्वेस्टमेंट एडवाइजर्स लिमिटेड इस इश्यू के बुक-रनिंग लीड मैनेजर हैं, जबकि एमयूएफजी इंटाइम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड रजिस्ट्रार है। कंपनी की योजना इस इश्यू से प्राप्त 552.53 करोड़ रुपये का इस्तेमाल मुख्य रूप से अपनी सहायक कंपनी 'बेक्रूज आईएफएससी' के साथ ही लीजिंग उद्देश्यों और अन्य सामान्य कॉर्पोरेट रणनीतियों के लिए करने की है। भारत की एकमात्र घरेलू महासागर क्रूज ऑपरेटर टरवेज लीजर टूरिज्म लिमिटेड वर्तमान में %कॉर्डेलिया क्रूज% ब्रांड नाम के तहत एक क्रूज जहाज %एमवी एम्प्रेस% का संचालन करता है। लॉन्च होने के बाद से 5,49,051 मेहमान इस क्रूज जहाज पर यात्रा कर चुके हैं। इसने 31 दिसंबर, 2024 तक भारतीय तटरेखा और आसपास के द्वीपों के साथ 2,25,079.53 समुद्री मील से अधिक की दूरी तय की है। वाटरवेज लीजर टूरिज्म लिमिटेड एकमात्र घरेलू क्रूज लाइन कॉर्डेलिया क्रूज का संचालन मुंबई और चेन्नई से करती है।

# गिरावट से उबरा शेयर बाजार

**मुंबई, एजेंसी।** विश्व बाजार की तेजी के बीच स्थानीय स्तर पर नीचे भाव पर हुई चौतरफा लिवाली की बदौलत पिछले लगातार दो दिन की गिरावट से उबरकर आज शेयर बाजार मजबूती के साथ बंद हुआ। बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 677.55 अंक अर्थात् 0.84 प्रतिशत की छलांग लगाकर 81,796.15 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 227.90

अंक यानी 0.92 प्रतिशत उछलकर 24946.50 अंक पर पहुंच गया। इसी तरह बीएसई का मिडकैप 0.93 प्रतिशत की तेजी के साथ 46,105.22 अंक और स्मॉलकैप 0.38 प्रतिशत चढ़कर 53,573.31 अंक हो गया। इस दौरान बीएसई में कुल 4253 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 1976 में तेजी जबकि 2108 में गिरावट रही वहीं 169 में कोई बदलाव नहीं हुआ।

## भारत का व्यापार घाटा मई में घटकर 21.88 बिलियन डॉलर रह गया

**नई दिल्ली, एजेंसी।** सोमवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, भारत का व्यापार घाटा इस वर्ष मई में घटकर 21.88 बिलियन डॉलर रह गया, जो अप्रैल में 26.42 बिलियन डॉलर था। मई 2024 में दर्ज 22.09 बिलियन डॉलर के इसी आंकड़े की तुलना में व्यापार घाटा सालाना आधार पर कम रहा। वाणिज्य सचिव सुनील बर्थवाल ने पत्रकारों से कहा, ÷व्यापार के संबंध में वैश्विक नीति अनिश्चितता के बावजूद हमने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। उन्होंने कहा कि मोबाइल फोन सहित इलेक्ट्रॉनिक सामानों के निर्यात में मई में सालाना आधार पर सबसे तेज 54 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। उन्होंने कहा कि रसायनों के निर्यात में 16 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि फार्मास्यूटिकल्स के निर्यात में 7.38 प्रतिशत की वृद्धि हुई। बढ़ते भू-राजनीतिक तनावों के बीच मई 2025 में व्यापारिक निर्यात 2.17 प्रतिशत घटकर 38.73 बिलियन डॉलर रह गया, जो मई 2024 में 39.59 बिलियन डॉलर था।

हालांकि, मई 2024 में 61.68 बिलियन डॉलर की तुलना में आयात में सालाना आधार पर 1.7 प्रतिशत की गिरावट आई और यह 60.61 बिलियन डॉलर रह गया। इस बीच, वाणिज्य सचिव ने कहा कि सेवाओं के व्यापार में मई में 14.65 बिलियन डॉलर का अनुमानित सरप्लस दिखा, क्योंकि सेवाओं का निर्यात बढ़कर 32.39 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि आयात बढ़कर 17.14 बिलियन डॉलर हो गया। आंकड़ों से यह भी पता चला कि चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही की अप्रैल-मई अवधि में निर्यात बढ़कर 77.19 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि आयात बढ़कर 125.52 बिलियन डॉलर हो गया। व्यापार घाटे में कमी से अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपए को मजबूत करने में भी मदद मिलेगी और यह ऐसे समय में हुआ है जब देश का विदेशी मुद्रा भंडार अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है। शुक्रवार को आरबीआई द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, 6 जून को समाप्त सप्ताह में भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 5.17 अरब डॉलर बढ़कर 696.66 अरब डॉलर हो गया। सप्ताह के दौरान हुई तेज वृद्धि ने देश के विदेशी मुद्रा भंडार को ऐतिहासिक उच्च स्तर 704.885 डॉलर के करीब पहुंचा दिया है, जो सितंबर 2024 के अंत में पहुंचा था। 6 जून को समाप्त सप्ताह के लिए, विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां, जो भंडार का एक प्रमुख घटक है, 3.47 अरब डॉलर बढ़कर 587.69 अरब डॉलर हो गई। सप्ताह के दौरान विदेशी मुद्रा भंडार का स्वर्ण घटक 1.6 मिलियन डॉलर बढ़कर 85.89 अरब डॉलर हो गया। भू-राजनीतिक तनावों से पैदा हुई अनिश्चितता के बीच दुनिया भर के केंद्रीय बैंक अपने विदेशी मुद्रा भंडार में सुरक्षित-संपत्ति के रूप में सोने को तेजी से जमा कर रहे हैं। वर्तमान में सोने का भंडार 83.582 बिलियन डॉलर है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा अपने विदेशी मुद्रा भंडार में रखे गए सोने का हिस्सा 2021 से लगभग दोगुना हो गया है।

## डब्ल्यूपीआई आधारित मुद्रास्फीति में लगातार नरमी भारत में उच्च आर्थिक विकास के लिए एक सकारात्मक संकेत: अर्थशास्त्री

**नई दिल्ली, एजेंसी।** अर्थशास्त्रियों ने सोमवार को कहा कि दिसंबर 2024 से थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) मुद्रास्फीति में लगातार नरमी भारत में उच्च आर्थिक विकास के लिए एक सकारात्मक संकेत है। उन्होंने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि आने वाले महीनों में डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति नरम बनी रहेगी, बशर्ते भू-राजनीतिक तनाव कम हो जाए। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, डब्ल्यूपीआई आधारित मुद्रास्फीति की वार्षिक दर इस साल मई में 0.39 प्रतिशत के 14 महीने के निचले स्तर पर आ गई, जो अप्रैल में 0.85 प्रतिशत और मार्च में 2.05 प्रतिशत थी। पीएचडीसीसीआई के अध्यक्ष हेमंत जैन ने कहा कि महंगाई में कमी मुख्य रूप से प्राथमिक वस्तुओं, फ्यूल एंड पावर के साथ-साथ मैन्युफैक्चर्ड प्रोडक्ट कैटेगरी की कीमतों में कमी के कारण देखी गई है। उन्होंने कहा, थोक मुद्रास्फीति में यह गिरावट बिजनेस सेंटीमेंट को बढ़ावा देगी क्योंकि इसके परिणामस्वरूप उत्पादन की लागत कम होगी।

# वित्त वर्ष 2026 की पहली तिमाही में भारतीय कंपनियों का परिचालन लाभ मार्जिन 18.5 प्रतिशत तक बढ़ने की उम्मीद: रिपोर्ट

**नई दिल्ली, एजेंसी।** रेटिंग एजेंसी आईसीआरए की सोमवार को जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, पिछली कुछ तिमाहियों में क्रमिक सुधार के बाद, वित्त वर्ष 2026 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में भारतीय कंपनियों का परिचालन लाभ मार्जिन 10 से 40 आधार अंकों की वृद्धि के साथ 18.2 से 18.5 प्रतिशत तक बढ़ सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है, आरबीआई की रेपो रेट में कुल 100 आधार अंकों की कटौती के कारण ब्याज लागत में कमी के साथ, भारत कंपनियों के लिए ब्याज कवरेज अनुपात में वित्त वर्ष 2026 की पहली तिमाही में लगभग 5.1-5.2

गुना की वृद्धि होगी, जबकि वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में यह 5.0 गुना था। आईसीआरए के वरिष्ठ उपाध्यक्ष किंजल शाह ने कहा, अनिश्चित वैश्विक माहौल को देखते हुए, निजी पूंजीगत व्यय (कैपेक्स) साइकल के मापा हुआ रहने की उम्मीद है। हालांकि, इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर जैसे कुछ उभरते क्षेत्र और ऑटोमोटिव स्पेस में इलेक्ट्रिक वाहनों जैसे आला सेगमेंट में निवेश में वृद्धि जारी रहेगी, जो भारत सरकार द्वारा घोषित विभिन्न उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन कार्यक्रमों के अनुरूप है। उन्होंने कहा, इसके अलावा, भारतीय रेलवे और रक्षा क्षेत्रों से जुड़ी संस्थाओं को भी अपने बड़े ऑर्डर बुक का फायदा राजस्व और आय के साथ देखने को मिलेगा। वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में 589 सूचीबद्ध कंपनियों (वित्तीय क्षेत्र की संस्थाओं को छोड़कर) के प्रदर्शन के आईसीआरए के विश्लेषण से पता चला है कि कंपनियों को सालाना आधार पर 7.6 प्रतिशत राजस्व वृद्धि हुई है। दूसरी ओर, कमजोर वैश्विक मांग और चीन से सस्ते आयात के कारण कम प्राप्तियों के बाद लोहा और इस्पात जैसे सेक्टर में कुछ गिरावट देखी गई। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि भारतीय कंपनियों को वित्त वर्ष 2026 की पहली तिमाही में स्थिर राजस्व वृद्धि की उम्मीद है, जिसे मजबूत घरेलू मांग का समर्थन प्राप्त है, जबकि ग्रामीण मांग के स्वस्थ रहने की उम्मीद है और शहरी मांग में सुधार होने की उम्मीद है। हालांकि, वर्तमान भू-राजनीतिक तनाव विशेष रूप से एग्रो-केमिकल्स, टेक्सटाइल, ऑटो एंड ऑटो कंपोनेंट्स, कटे और पॉलिश किए गए हीरे और आईटी सेवाओं जैसे निर्यात-उन्मुख क्षेत्रों के लिए डिमांड सेंटीमेंट्स को प्रभावित करना जारी रखते हैं। कॉरपोरेट इंडिया ने वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में परिचालन लाभ मार्जिन में सालाना आधार पर 63 आधार अंकों की वृद्धि दर्ज की, जो 18.5 प्रतिशत हो गई। यह विस्तार पावर, एयरलाइंस और रियल एस्टेट जैसे सेक्टर की अगुवाई में मजबूत मांग के कारण बेहतर परिचालन के साथ-साथ इनपुट लागत में कुछ कमी के कारण हुआ। इसके अलावा, क्रमिक आधार पर, वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में मार्जिन में लगभग 41 आधार अंकों का सुधार हुआ।

## संक्षिप्त समाचार

### रुपया बढ़त के साथ बंद

**मुंबई, एजेंसी।** अमेरिकी डॉलर के मुकाबले सोमवार को रुपया 6 पैसे की बढ़त के साथ ही 86.05 रुपये पर बंद हुआ। इससे पहले आज सुबह पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों में तेजी रहने से रुपया सप्ताह के पहले कारोबारी ?दिन सोमवार को शुरुआती कारोबार में छह पैसे टूटकर अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 86.17 पर खुला। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 86.16 प्रति डॉलर पर खुला। फिर 86.17 प्रति डॉलर पर पहुंच गया जो पिछले बंद भाव से छह पैसे की गिरावट को दिखाता है। रुपया शुक्रवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 86.11 पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दिखाने वाला डॉलर सूचकांक 0.15 फीसदी की बढ़त के साथ 98.33 पर रहा।

### स्टारबक्स का भारत में आधिकारिक ब्रांड एंबेसडर नहीं

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** टाटा स्टारबक्स ने कहा है कि भारत में उसका कोई आधिकारिक ब्रांड एंबेसडर नहीं है और इसके लिए डॉली चायवाला के साथ किसी तरह का गठबंधन नहीं किया गया है। कंपनी ने लिंकडइन पर जारी एक बयान में कहा हाल ही में सोशल मीडिया पर ऐसा प्रचारित किया जा रहा है कि टाटा स्टारबक्स ने भारत में औपचारिक तौर पर ब्रांड एंबेसडर बनाया है। इसके मद्देनजर यह स्पष्ट किया जा रहा है कि भारत में किसी को औपचारिक तौर पर ब्रांड एंबेसडर नहीं बनाया गया है। विशेषकर डॉली चायवाला के साथ कोई गठबंधन नहीं किया गया है। ÷ कंपनी ने कहा कि किसी तीसरे पक्ष ने एक मेम बनाया जिसे गलत तरीके से वास्तविक अभियान के तौर पर देखा जा रहा है। टाटा स्टारबक्स सच्ची और वास्तविक जानकारी देने के लिए कटिबद्ध है और कंपनी अपने ग्राहकों के मूल्यों में विश्वास करती है।

### अर्थुड सर्विसेज ने आईपीओ के लिए सेबी के समक्ष डीआरएचपी फिर से दाखिल किया

**नई दिल्ली, एजेंसी।** गुड़गांव स्थित सेवा कंपनी अर्थुड सर्विसेज ने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के जरिए धन जुटाने के लिए भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के समक्ष अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) फिर से दाखिल किया है। कंपनी ने सेबी के समक्ष 27 दिसंबर, 2024 को जमा अपने पुराने आईपीओ ड्राफ्ट को 28 अप्रैल, 2025 को वापस ले लिया था। पूंजी बाजार नियामक सेबी के समक्ष जमा दस्तावेज के मुताबिक अर्थुड सर्विसेज का 10 रुपये प्रति शेयर के अंकित मूल्य वाले यह आईपीओ पूरी तरह से बिक्री के लिए प्रस्ताव के रूप में संरचित है। इसमें मुख्य प्रमोटर डॉ. कविराज सिंह के 42.90 लाख इक्विटी शेयर और अशोक कुमार गौतम के 20 लाख इक्विटी शेयर है, जो कुल मिलाकर 62.90 लाख इक्विटी शेयर हैं। इस ऑफर में पात्र कर्मचारियों के सदस्यता आरक्षण भी शामिल है। इसके साथ ही कर्मचारी आरक्षण भाग में बोली लगाने वाले पात्र कर्मचारियों को छूट दी जाएगी। आईपीओ दस्तावेज के मुताबिक बुक-बिल्डिंग प्रक्रिया में शुद्ध प्रस्ताव का कम से कम 75 फीसदी योग्य संस्थागत खरीदारों को आवंटित किया जाएगा, जबकि गैर-संस्थागत और खुदरा व्यक्तिगत बोलीदाताओं को क्रमशः शुद्ध प्रस्ताव का 15 फीसदी और 10 फीसदी से अधिक नहीं मिलेगा। गुड़गांव में मुख्यालय वाली कंपनी अर्थुड सर्विसेज लिमिटेड, जो पर्यावरण संबंधी विशेषताओं को प्रमाणित करने में लगी एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त कंपनी है। ये कंपनी मुख्य रूप से कार्बन सत्यापन और सत्यापन सेवाएं प्रदान करती है। पिछले तीन वित्तीय वर्षों में कंपनी ने 132 देशों में 400 से अधिक ग्राहकों को सेवा प्रदान की है।

### घरेलू यात्री वाहनों की थोक बिक्री मई में सालाना आधार पर 0.8 प्रतिशत घटकर 3,44,656 इकाई: सियाम

**नई दिल्ली, एजेंसी।** घरेलू यात्री वाहनों की थोक बिक्री मई में सालाना आधार पर 0.8 प्रतिशत घटकर 3,44,656 इकाई रह गई, जबकि पिछले साल इसी महीने में यह 3,47,492 इकाई रही थी। सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (सियाम) की ओर से सोमवार को जारी अद्यतन आंकड़ों के अनुसार, दोपहिया वाहनों की थोक बिक्री मई में 2.2 प्रतिशत बढ़कर 16,55,927 इकाई हो गई, जबकि एक वर्ष पूर्व इसी महीने में 16,20,084 इकाई थी। आंकड़ों के अनुसार, घरेलू बाजार में कुल तिपहिया वाहनों की बिक्री मई में सालाना आधार पर 55,763 इकाइयों की तुलना में 3.3 प्रतिशत घटकर 53,942 इकाई रह गई। वाहन विनिर्माताओं के निकाय सियाम ने कहा कि सभी श्रेणियों में वाहनों की कुल थोक बिक्री 1.8 प्रतिशत बढ़कर 20,12,969 इकाई हो गई, जबकि पिछले साल मई में यह 19,76,674 इकाई थी।

### सचीरोम फ्रेगरेंसेज के आईपीओ निवेशकों को पहले दिन ही 57.40 प्रतिशत का मुनाफा

**नई दिल्ली, एजेंसी।** फ्रेगरेंसेज और अलग अलग तरह के फ्लेवर्स का प्रोडक्शन करने वाली कंपनी सचीरोम फ्रेगरेंसेज एंड फ्लेवर्स के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में जोरदार एंट्री करके अपने आईपीओ निवेशकों को खुश कर दिया। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 102 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी एंट्री 50 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 153 रुपये के स्तर पर हुई। लिस्टिंग के बाद बिकवाली के दबाव में ये शेयर गिर कर पहले 145.35 रुपये के लोअर सर्किट लेवल तक आया। फिर थोड़ी देर बाद खरीदारी शुरू हो जाने पर ये 160.65 रुपये के अपर सर्किट लेवल पर पहुंच गया। पूरे दिन के कारोबार के बाद कंपनी के शेयर 160.55 रुपये के स्तर पर बंद हुए। इस तरह पहले दिन के कारोबार में ही कंपनी के आईपीओ निवेशकों को 57.40 प्रतिशत का मुनाफा हो गया। सचीरोम फ्रेगरेंसेज एंड फ्लेवर्स का 61.62 करोड़ रुपये का आईपीओ 9 से 11 जून के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से जोरदार रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 312.94 गुना सब्सक्राइब हो गया था। इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 173.15 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसी तरह नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 808.56 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसके अलावा रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 180.28 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इस आईपीओ के तहत 10 रुपये फेस वैल्यू वाले 60,40,800 लाख नए शेयर जारी किए गए हैं। आईपीओ के जरिए जुटाए गए पैसा का इस्तेमाल कंपनी नई मैन्युफैक्चरिंग यूनिट लगाने और आम कॉर्पोरेट उद्देश्यों में करेगी। कंपनी की वित्तीय स्थिति की बात करें तो प्रॉस्पेक्टस में किए गए दावे के मुताबिक इसकी वित्तीय सेहत लगातार मजबूत हुई है। वित्त वर्ष 2022-23 में कंपनी को 5.99 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था, जो अगले वित्त वर्ष 2023-24 में बढ़कर 10.67 करोड़ रुपये और 2024-25 में 15.98 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया।

# सेहत का फंडा

## तुरंत एनर्जी दे सुबह का नाश्ता

**सुबह का नाश्ता शरीर के लिए फायदेमंद होता है। जो शरीर को तुरंत एनर्जी प्रदान करता है। साथ ही नाश्ते मे अंकुरित अनाज तथा फलों में केला, पपीता, सेब, आम, अंगूर व शहद, दही लें तो यह और अधिक फायदेमंद होगा।**

### अंकुरित फलों व अनाज में एनर्जी

पसंदीदा फलों को जैसे केला, पपीता, सेब, आम, अंगूर, सबको छोटे-छोटे टुकड़े करके कांच के कटोरे में रखें। सबसे पहले तीन बड़े चम्मच, शहद डालें और फल डालें। उसके ऊपर योगार्ड (गाढ़ा दही) अगर आप इसे ठंडा खाना चाहते हैं तो इसे फ्रिज में रख दें, अब बाहर निकालकर नाश्ता करें। यह आपके लिए सुपाच्य तथा तुरंत स्फूर्ति देने वाला होगा। खासतौर पर महिलाओं के लिए पौष्टिकता, रक्तवृद्धि तथा त्वचा की नमी बनाए रखने वाला नाश्ता है। सभी विटामिन सी वाले फल यानी अंगूर, अनार, अनानस, संतरा, पपीता, मौसमी सभी फलों को काट लें। अब उस पर काला नमक, सफेद नमक, भुनाजीरा, नींबू डालकर मिक्स करें। इस तरह से अपनी दिनचर्या में पौष्टिक नाश्ता का समावेश करें। सुबह सही समय अवश्य नाश्ता करें। वक्त की कमी की वजह से कुछ भी खाकर पेट न भरें। अगर समय की कमी हो, तो रात में ही अंकुरित अनाज की तैयारी कर लें, रात में ही भिगा दें, जो अंकुरित अनाज आपको पसंद हो जैसे- काला चना, साबुत मूंग, लोभिया, मूंगफली दाना। सुबह उसमें प्याज, टमाटर, खीरा, ककड़ी, हरी धनिया, मिर्च महीन काट कर ऊपर से नींबू निचोड़ दें।

### नमकीन दलिया फायदेमंद

काला नमक काली मिर्च, भुना जीरा डाल कर खाएं, अगर आप को कच्चा अंकुरित अनाज पसंद नहीं है, तो कुकर में एक सीटी लगा बनाया जा सकता है। बस हो गया आपका सेहतमंद नाश्ता तैयार। फिर कभी-कभी नमकीन दलिया भी तैयार करके खाया जा सकता है। चाहे तो आप इस नमकीन दलिया में स्वाद के लिए कोई पसंदीदा सब्जी भी डाली जा सकती है। इस तरह कम समय में पौष्टिक नाश्ता तैयार हो सकता है। सुबह के नाश्ते में हो सके तो दूध अवश्य लें। सुबह के समय पाचन क्रिया तेज होती है।

## दवाएं भी दे सकती हैं दगा

**दवाएं उतनी ही मात्रा में लेना चाहिए जितनी चिकित्सक ने लिखी हों। इससे कम या अधिक नुकसानदायक हो सकती हैं। अब तक ऐसी कोई औषधि नहीं है, जिसके कोई साइड इफेक्ट्स न हों। अतः अपने मन से खाई गई कोई दवा, जहर भी हो सकती है।**

*जीवन की* रक्षा करने वाली दवाइयां हमेशा सुरक्षित नहीं होती हैं। यदि आप चिकित्सक की सलाह के बिना इन्हें मनमाने तरीके से ले रहे हो तो ये खतरनाक भी हो सकती हैं।

### कोर्स और डोज पर दें ध्यान

लगभग सभी बीमारियों में दवाइयों की निश्चित मात्रा निर्धारित समय तक ही दी जाती है। खुराक एवं मात्रा में से किसी भी एक का ध्यान न रखा जाए तो ये दवाइयां खतरनाक हो सकती हैं। दमा के तेज अटैक से तुरंत राहत के लिए चिकित्सक ओरल स्टीरायड्स मरीज को देते हैं, लेकिन देखा गया कि करीब 5 से 10 प्रतिशत मरीज उन पर्चों को संभालकर रख लेते हैं ताकि जब दोबारा अटैक आए तो वही दवा फिर से खा लें। कई मरीज तो चिकित्सक को बिना बताए हफ्तों और यहां तक कि महीनों भी अपने मन से स्टेरायड्स खाते रहते हैं। इसके गंभीर परिणाम होते हैं। इसी तरह ब्लड प्रेशर की दवाइयों की खुराक बिना रक्तचाप नापे ज्यादा या कम नहीं करना चाहिए।

### कहीं ऐसा तो नहीं करते

कई मरीजों के परिजन अस्पताल के आईसीयू में यह कहते हुए सुनाई पड़ते हैं कि हमारे मरीज को रक्तचाप की शिकायत अर्से से है और वे नियमित दवा खाते हैं। अब सिरदर्द की शिकायत होने पर भी उन्हें लगा कि रक्तचाप बढ़ गया है इसलिए एक गोली और खा ली।

इससे रक्तचाप तेजी से गिर गया तो आईसीयू में भर्ती करवाना पड़ा। कई लोग सिरदर्द, बदन दर्द के लिए एस्प्रीन, ब्रूफेन व अन्य दर्द निवारक दवाएं बिना निदान के अपने आप कई वर्षों तक लगातार लेते रहते हैं। ये दवाइयां कुछ समय के लिए सिर्फ दर्द को दबाती हैं। कारण को ठीक नहीं करतीं। इन दवाइयों से पेट में अल्सर, एनिमिया, गुर्दे खराब होना इत्यादि परेशानियां आ सकती हैं। कई लोग कमजोरी के लिए विभिन्न प्रकार के टॉनिक व विटामिन्स खाते रहते हैं। बी-कॉम्प्लेक्स व विटामिन-सी यदि ज्यादा ले भी लिए तो मूत्र के साथ निकल जाते हैं। लेकिन कुछ घुलनशील विटामिन्स जैसे विटामिन ए व विटामिन डी ज्यादा खुराक के कारण शरीर की प्राकृतिक प्रक्रिया में व्यवधान भी उत्पन्न कर सकते हैं।

### एंटीबायटिक्स से बचें

एंटीबायटिक्स अपने मन से न लें। कई बार उनकी जरूरत नहीं होती। कई मरीज इस हिस्ट्री के साथ आते हैं कि पिछली बार जैसे लक्षण थे, इसलिए हमने आपका पिछला पर्चे दिखाकर दवा ले ली, लेकिन इस बार फायदा नहीं हुआ। एक ही एंटीबायटिक को बार-बार लेने से उससे शरीर में रोग-प्रतिरोधक शक्ति कम हो जाती है। ऐसी स्थिति में हल्की एंटीबायटिक असर नहीं करती। अब केवल ताकतवर एंटीबायटिक देने पर भी फायदा होता है। अधिक समय तक एंटीबायटिक खाने से बीमारी बढ़ती रहती है और कई बार उसके साइड इफेक्ट्स जैसे- दस्त होना, पेट खराब हो जाना, मुंह में छाले इत्यादि हो सकते हैं। इसलिए कोई सी भी एलोपैथिक दवाई चिकित्सक के परामर्श के बगैर न लें। खासकर वे लोग जो पहले ही से दवाइयां लेते रहते हैं, उन्हें विशेष ख्याल रखना चाहिए, क्योंकि उनकी पहले की दवाइयां इन नई दवाइयों से मिल कर उनके लिए नई परेशानियां खड़ी कर सकती हैं।

## दर्द को न करें नजरअंदाज

**अपने शरीर में होने वाले दर्द को हम अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं, लेकिन कई बार ये दर्द किसी बीमारी का संकेत भी हो सकते हैं। ऐसे में इन्हें अनदेखा करने की बजाय तुरंत इनका इलाज करवाकर बड़ी बीमारी को टाला जा सकता है...**

### पेट दर्द

पेट दर्द होना एक सामान्य सी बात है, लेकिन महानगरों में यह कुछ ज्यादा ही देखने में आता है। वजह यह कि महानगरों के लोगों का खाने-पीने का कोई वक्त नहीं होता। फिर बाहर के खाने से बचना भी यहां के लोगों के लिए मुश्किल होता है। जहां तक महिलाओं की बात है तो उनमें पेट का दर्द यूट्रस में होने वाली समस्याओं का संकेत हो सकता है। कई बार दर्द के साथ-साथ पेट में गड़बड़ भी हो सकती है जैसे- कब्ज या डायरिया। सही वजह पता लगाने का सबसे बेहतर तरीका है अल्ट्रासाउंड। इससे पेट की गांठ का आसानी से पता लगाया जा सकता है। अगर जल्दी पता लग जाए, तो सिर्फ दवा से ही इसका इलाज संभव है, लेकिन गांठ बढ़ जाने से की-होल सर्जरी करवानी पड़ती है।

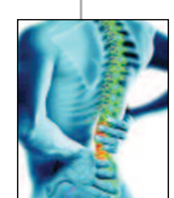

### कमर दर्द

कमर दर्द से भी तमाम लोग परेशान रहते हैं। दिनभर कंप्यूटर के सामने बैठे रहने से यह समस्या और भी बढ़ जाती है। कमर दर्द अगर नीचे की तरफ बढ़ने लगे और तेज हो जाए, तो जल्द से जल्द डॉक्टर को दिखाएं। कभी-कभी दर्द कुछ मिनट ही होता है और कभी-कभी यह घंटों तक रहता है। ऐसा दर्द पथरी की वजह से हो सकता है। इसकी जांच एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड और यूरीन टेस्ट के जरिए करवाई जा सकती है।

### जबड़े का दर्द

जबड़े का दर्द अक्सर जबड़ों के जॉइंट्स के ज्यादा काम करने की वजह से होता है। यह समय के साथ सही भी हो जाता है, लेकि न मुंह खोलते और बंद करते वक्त जब आवाज के साथ ऐसा दर्द हो तो यह जॉइंट की चोट की वजह से भी हो सकता है। साधारण एक्स-रे से इसका पता लगाया जा सकता है। दवा से इसका इलाज करवाया जा सकता है।

### जोड़ों का दर्द

यह दर्द ज्यादातर मामलों में पचास साल की उम्र के बाद शुरू होता है। इसकी शुरुआत घुटनों में हल्के दर्द के साथ होती है। धीरे-धीरे यह दर्द हाथों की अंगुलियों के जोड़ों में भी आ जाता है। यह दर्द हिलने-डुलने से बढ़ता जाता है। दर्द के बढ़ जाने पर तुरंत ऑर्थोपेडिक डॉक्टर से संपर्क करें। एक्स-रे या बोन डेंसिटी टेस्ट से ऑस्टियोआर्थराइटिस या रुमेटॉइडआर्थराइटिस का पता लगाया जा सकता है। यह समस्या पुरुषों से ज्यादा महिलाओं में पाई जाती है। इस बीमारी को जड़ से खत्म नहीं किया जा सकता, लेकिन फिजियोथेरेपी और स्टेरॉइड्स लेकर इसे बढ़ने से रोका जरूर जा सकता है। तकलीफ बढ़ने पर नी-रिप्लेसमेंट सर्जरी की जरूरत भी पड़ सकती है।

### अंगूठों का दर्द

अगर अंगूठों में दर्द रहता है तो यह गठिया का लक्षण हो सकता है। जोड़ों में ज्यादा यूरिक एसिड क्रिस्टल जमा हो जाने से यह दर्द होता है। वक्त गुजरने के साथ ही यह दर्द इतना असहनीय हो सकता है कि इससे चलने-फिरने में भी दिक्कत हो सकती है। इसे एक्स-रे द्वारा पहचानकर दवा से ठीक किया जा सकता है।

### माथे का दर्द

ज्यादातर दर्द पूरे सिर में होता है, लेकिन जब यह दर्द काफी तेज हो तो यह गंभीर स्थिति हो सकती है, इसलिए सिर दर्द को कभी नजरअंदाज न करें और तुरंत डॉक्टर से मिलें। यह 50 साल से ज्यादा उम्र वाले लोगों में देखा जाता है।

## विटामिन डी की कमी घातक

**विटामिन डी की कमी आपकी धमनियों को कठोर बना सकती है। एक नए अध्ययन के मुताबिक लोगों के शरीर में विटामिन डी की कमी धमनियों को सख्त बना सकती है।**

*विटामिन डी* की कमी से रक्त वाहिनियों के स्वास्थ्य पर असर पड़ सकता है, इससे रक्तचाप (बीपी) बढ़ सकता है और दिल की बीमारियां हो सकती हैं। अध्ययन में शामिल जिन प्रतिभागियों ने विटामिन डी की उच्च मात्रा ली, उनकी रक्तवाहिनियों के स्वास्थ्य में सुधार देखा गया और उनका रक्तचाप भी कम हो गया था। अध्ययन में संस्थान के करीब 550 कर्मचारी शामिल हुए थे।